विश्व-साहित्य-माला २

[सात रूसी और जर्मन भावपूर्ण कहानियों का संग्रह]

रामप्रताप गोंडल एम० ए०
साहित्यरत्न

विद्या मन्दिर लिमिटेड,
नई दिल्ली।

प्रकाशक

विद्या मन्दिर लिमिटेड,

कनॉट सरकस, नई दिल्ली।

दूसरी बार
१९४६

गोंडल्स प्रेस,
नई दिल्ली।

निवेदन

रूसी और जर्मन साहित्य की कुछ चुनी हुई कहानियों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हुए मैं उनसे कुछ निवेदन करना चाहता हूँ। ये कहानियां 'अध्यापिका' के नाम से उनके सामने आ रही हैं। 'अध्यापिका' इस संग्रह की प्रथम कहानी है और इसी के आधार पर इस पुस्तक का नाम भी 'अध्यापिका' रख दिया गया है। इसके अतिरिक्त नाम रखते हुए और कोई विशेष बात ध्यान में नहीं रखी गयी।

इस संग्रह की कुछ कहानियां 'हिन्दी-पत्रिका' में समय-समय पर प्रकाशित होती रही हैं। परन्तु उनके अलावा और भी कहानियां हैं, जिन्हें इस संग्रह में स्थान मिला है। इन कहानियों को हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करते हुए मेरा विचार यह था कि 'विश्व महिला-साहित्य' में इनको स्थान दूँ, परन्तु यह सम्भव न हो सका। उस दृष्टि से जिन कहानियों को हिन्दी का रूप दिया था वे 'अध्यापिका', 'परित्यक्ता' और 'प्यारी' हैं।

कागज़ के अभाव में यह संग्रह इच्छानुसार पूर्ण भी नहीं किया जा सका। संभव है कहानियों का यह संग्रह प्रत्येक पाठक को रुचे भी न। केवल मनोरंजन की दृष्टि से ये कहानियां प्रकाशित भी नहीं की जा रहीं। इनके पीछे एक भावना है और वह है हिन्दी के लेखकों के सम्मुख कहानियों के लिये विभिन्न विषयों का रखना।

हिन्दी का कहानी-साहित्य अभी अपने शैशवकाल में है।

कहानियां लिखी तो पर्याप्त मात्रा में जा रही हैं, परन्तु प्रत्येक विज्ञ पाठक उनमें पुनरावृत्ति की शिकायत करता होगा। कारण यह है कि हमारे यहां अधिकांश लेखकों का दृष्टिकोण बड़ा संकुचित रहता है। हिन्दी साहित्य में न तो अन्य प्रमुख उन्नतिशील प्रान्तीय भाषाओं के इतने अनुवाद उपलब्ध हैं और न ही अन्य यूरोपीय भाषाओं के। पाठक इस कथन को केवल तुलनात्मक रूप में ही लें। क्योंकि हमारे यहां बंगला और रूसी साहित्य के विशेष कर और दूसरी प्रान्तीय भाषाओं के और जर्मन कहानियों के अनुवाद वग़ैरह भी मिलते हैं। परन्तु अगर हम अंग्रेज़ी साहित्य की तुलना में देखें तो हमें अपनी कमज़ोरी स्पष्ट विदित हो जाती है।

हिन्दी के ऐसे कहानी-लेखक भी संख्या में बहुत कम होंगे जिनको अन्य भाषाओं का ज्ञान भी पर्याप्त मात्रा में हो। रूसी, जर्मन, फ्रेंच, स्पेनिश वग़ैरह भाषाओं में से कदाचित् किसी एक का ज्ञान भी किसी को हो। जो अनुवाद की हुई पुस्तकें हमारे यहां आती हैं वे भी अंग्रेज़ी भाषा द्वारा। अंग्रेज़ी का ज्ञान भी हिन्दी के गिने-चुने कहानी लेखकों को होगा। ऐसी अवस्था में विशेष आशा भी उनसे किस प्रकार की जा सकती है। अपना दृष्टि-कोण विस्तृत करने के लिये अन्य भाषाओं के साहित्य का अवलोकन किसी न किसी रूप में नितान्त आवश्यक हो जाता है।

पहले हम यहां पर आंटन चेहोव (चेखोव) की दो कहानियों को लेते हैं। आंटन चेहोव रूसी साहित्य में विशेष प्रतिभाशाली कहानी लेखक हुआ है, जिसकी ख्याति समस्त शिक्षित संसार में फैल चुकी है। इसकी कहानियों का विषय अधिकांश मध्यम-वर्ग के स्त्री-पुरुषों का जीवन है। 'अध्यापिका' और 'प्यारी' दोनों ही मध्यम

वर्ग की स्त्रियां हैं। 'अध्यापिका' के जीवन का चित्र खींचते हुए उसने रूसी किसानों और गांव वालों का भी कितना यथार्थ चित्र खींचा है। 'अध्यापिका' के जीवन में बच्चों का साथ होते हुए भी स्त्री-पुरुष-जन्य प्रेम का अभाव दिखाकर उसके जीवन को कितना निराशामय दिखाया है। 'प्यारी' में भी एक स्त्री-हृदय को अंकित किया है, जो अपनी प्रेम-तृषा बुझाती हुई बूढ़ी हो जाती है। मध्यम वर्ग में इस प्रकार की स्त्रियों का अभाव नहीं। प्रेम के अभाव में—विशेषत: विवाहित प्रेम के अभाव में स्त्री-जीवन किस प्रकार अपूर्ण रह जाता है, यही दर्शाना इन दोनों कहानियों का मुख्य उद्देश्य है। कहानियों का चरित्र-चित्रण यथार्थवाद को लिये हुए हैं।

'परित्यक्ता' एक जर्मन कहानी का अनुवाद है। इस कहानी में लेखक ने एक निर्धन, गंवार औरत का चित्र खींचा है। ग्राम्य जीवन, देहाती आदमियों और कृषि वगैरह को अधिक महत्व दिया है। यहाँ तक कि वर्तमान काल की औद्योगिक उन्नति, रेलों का चलना-चलाना भी एक प्रकार से हेय सिद्ध किया है। पाठकों की सहानुभूति उनसे नहीं रहती। वे उन्हें शैतान के रूप में देखते हैं। उन्हें आज के गांधीवादी साहित्य के अनुसार देहाती किसान व मजदूर, उनका हल, कोल्हू, गाड़ी, चरखा तथा अविकसित औजार वगैरह ही अधिक श्रेयस्कर तथा प्रिय लगते हैं।

'खान और उसका बेटा' मेक्सिम गोर्की की रचना है जिससे हिन्दी संसार भली प्रकार परिचित है। इस कहानी में एक अमीर के हरम का दिग्दर्शन कराया है, जहां रमणियां और आमोद-प्रमोद का पूरा आयोजन है। प्रेम का वह स्वरूप दिखाया है जिसमें स्वार्थ

ही प्रचुर मात्रा में मिलता है। ऐसे प्रेम का स्वरूप राजों, महाराजों, अमीरों और सरदारों के यहां अब भी देखने को मिलता है।

'यहूदी की कब्र' की लेखिका जर्मन साहित्य की अमर उपज है। यथार्थवाद का पुट लिये हुए कहानी में स्थान-स्थान पर दुःखद घटनाओं के वर्णन में भी भावावेश कम करने के लिये हास्य का छींटा दिया हुआ है। 'यहूदी की कब्र' वास्तव में एक अमूल्य कृति है।

'दूध बेचने वाला लड़का' में शहर के चौल में रहने वाले एक चमार के जीवन का वर्णन है। इसमें वातावरण का कितना दूषित प्रभाव पड़ता है यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। ऐसे पिता के लड़के तथा उनकी मां किस अवस्था में रहती हैं, वे कितने दब्बू बन जाते है यह भी उससे जानने को मिलता है। 'दूध बेचने वाले लड़के' का अपने कुत्ते--मित्र के प्रति-प्रेम और उसके लिये अपनी जान तक दे देना, अधिकारी वर्ग की निर्दयता, सब हृदय तक पैठ जाते हैं।

'लाल फूल' में एक पागल का वर्णन है जो लेखक के व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर है। तुर्की की लड़ाई में गारशिन ने एक स्वयं-सेवक की तरह भाग लिया था और इस कारण उसकी कुछ कहानियों में युद्ध के चित्र मिलते हैं। अपने जीवन के अन्तिम काल में उसका दिमाग़ कुछ फिर गया था और 'लाल फूल' में इसी कारण एक पागल की हृदय-विदारक कथा बड़ी सहृदयता के साथ वर्णन की गई है। लेखक ने आत्महत्या की। उसकी कहानियां स्पष्ट होते हुए भी निराशा लिये हुए हैं।

अगर इन कहानियों से विज्ञ पाठकों का कुछ मनोरंजन हो

सका तथा कुछ हिन्दी के कहानी लेखकों को स्त्री-पुरुष के प्रेम, सामाजिक बुराइयों वग़ैरह के अतिरिक्त नये विषयों के चुनने में तथा उनके आधार पर कहानियां लिखने की प्रेरणा हो सकी तो मैं अपना प्रयत्न सफल समझूँगा।

जिन कहानियों का अनुवाद इस संग्रह में प्रकाशित किया जा रहा है उनके लेखकों और प्रकाशकों का मैं आभारी हूँ, विशेषकर ऑक्सफ़ोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस का।

—रामप्रताप गोंडल

विद्या मन्दिर लिमिटेड
२७ जुलाई १९४२

अनुक्रम

अध्यापिका

[आन्टन चेहोव]

ठीक साढ़े आठ बजे वे गाड़ी पर सवार हो कस्बे से रवाना हो पड़े। सड़क सूख चुकी थी। अप्रैल की सुहावनी धूप बिखरी पड़ी थी; किन्तु जंगलों और गढ़ों में बरफ अब भी भरी पड़ी थी। अन्धकार-पूर्ण लम्बी और असह्य ठण्ड का मौसम अभी-अभी खत्म ही हो पाया था कि बसन्त एक दम ही आगया। परन्तु गाड़ी में बैठी मेरिया वेस्सिलेयवना को न तो धूप की गर्मी में, न जंगल के वृक्षों की धुली हुई पत्तियों पर पड़ी हुई बसन्त की सुहावनी धूप में, न काले पक्षियों के झुण्ड के झुण्ड को देखने में जो पानी के भरे हुए पोखरों पर उड़ते फिरते थे, और न ही स्वच्छ नीलाकाश को देखने में जहां पर किसी की भी जाने को तबियत मचल सकती थी, कोई नवीनता दिखाई दी व कोई आनन्द ही हुआ। वह पिछले १३ वर्षों से स्कूल में अध्यापन का काम करती थी और इसका तो कोई हिसाब ही नहीं लगाया जा सकता कि वह इस काल में कितनी बार इस कस्बे में वेतन लेने के लिए आयी थी। उसकी बला से बसन्त, ग्रीष्म व वर्षा हो अथवा शरद उसे तो केवल इस बात की फिकर थी कि कब उसका सफ़र समाप्त हो और कब वह चैन की बंसी बजावे।

उसे यह भासता था कि वह इस भू-भाग पर सैकड़ों क्या हज़ारों बरसों से रहती चली आ रही है और रास्ते के प्रत्येक पत्थर के टुकड़े और प्रत्येक वृक्ष को वह अच्छी तरह पहचानती है। पहले भी वह यहां थी, अब भी वह यहां है और स्कूल से परे उसका भविष्य भी कुछ नहीं है। स्कूल से कस्बे तक की सड़क और फिर वापिस स्कूल को लौटना और फिर सड़क पर........।

स्कूल में अध्यापिका बनने से पहले उसे कभी अपने गत जीवन पर सोचने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। वह अपने बचपन को भूल चुकी थी। कभी उसके मां-बाप थे। वे मास्को में लाल दरवाजे पर एक बड़ी हवेली में रहते थे। परन्तु इस जीवन का एक धुंधला छाया-चित्र केवल उसके मस्तिष्क-पटल पर आजाता था। जब वह दस बरस की बालिका थी तभी उसका बाप मर गया था और उसकी मां भी कुछ दिन बाद......। उसका एक भाई था। एक अच्छे सरकारी ओहदे पर था। शुरू-शुरू में वे एक दूसरे को चिट्ठियां लिखते रहे थे; परन्तु बाद को उसके भाई ने जवाब देना छोड़ दिया, और आखिर उसकी चिट्ठी डालने की आदत ही जाती रही। उसकी पुरानी चीजों में से केवल उसकी मां की एक फ़ोटो बची थी, सो भी दीवार की सील के कारण फीकी पड़ गयी थी और इस समय उसमें सिवाय सिर के बालों और भौहों के और कुछ दिखलाई न पड़ता था।

वे अब लगभग दो मील का फ़ासला तय कर गये थे। वृद्ध सेमोन ने, जो गाड़ी हांक रहा था, गर्दन फेर कर कहा, "सुना है कस्बे में एक सरकारी क्लर्क पकड़ा गया है। वे उसे ले गये हैं। कहा जाता है कि कुछ जर्मनों के साथ मिलकर उसने मास्को

के मेयर एल्कज़ेब की हत्या कर डाली है।"

"तुम्हें यह कहां से मालूम पड़ा ?"

"यह समाचार पत्रों में छपा है, इवान की सराय में लोग पढ़ रहे थे।"

इसके बाद काफी देर तक वे चुप रहे। मेरिया अपने स्कूल के बारे में सोचने लगी। परीक्षा पास आ रही थी; उसके स्कूल के चार लड़के और एक लड़की परीक्षा में बैठ रहे थे। इस प्रकार परीक्षा के बारे में जब वह सोच रही थी तो पीछे आती हुई चार घोड़ों की गाड़ी उसे दिखाई दी। उसका पड़ोसी, बड़ा अमीर ज़मीदार हैनोव उसमें बैठा हुआ था। पिछले साल वह उसके स्कूल का परीक्षक भी रह चुका था। उसने पास आने पर मेरिया को पहचान लिया और सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया।

"आप घर को ही जा रही हैं न ?" उसने पूछा।

हैनोव की उम्र ४०वर्ष की थी, परन्तु उसके चेहरे से संजीदगी और प्रौढ़ता टपकती थी। कुछ वृद्धावस्था के चिन्ह भी उसके चेहरे पर दिखलाई पड़ने लगे थे। परन्तु इन सब बातों के होते हुए भी वह अब भी काफ़ी सुन्दर था; स्त्रियां सहज में उसकी ओर आकर्षित हो जाती थीं। वह अपनी कोठी में अकेला ही रहता था। काम-धन्धा भी कुछ नहीं करता था। लोगों का कहना था कि घर पर भी उसे कोई काम न था। वह या तो मुंह से सीटी बजाता हुआ कमरे में चहल-क़दमी करता रहता था या अपने पुराने नौकर के साथ शतरंज खेलता रहता था। लोगों का यह भी कहना था कि वह शराब भी बेहद पीता था। यह बात सच भी थी, क्योंकि पिछले साल परीक्षा लेने के लिये जो पर्चे वह लाया था उनमें शराब की

बू और साथ ही इत्र की खुशबू भी आ रही थी। वह उस मौके पर सारे शरीर पर नये कपड़े पहने हुए था। मेरिया वेस्सिलेयवना का मन उसकी ओर आकर्षित हो गया था, और जब तक वह उसके पास बैठी रही तब तक उसका मन उद्विग्न ही रहा। इससे पूर्व जिन परीक्षकों से भी उसका वास्ता पड़ा था, वे सब बड़े कट्टर थे और बड़ी सतर्कता से अपना काम करते थे; परन्तु इसे न कोई प्रार्थना के मन्त्र ही याद थे; न वह प्रश्न ही पूछना जानता था। वह बड़े विनम्र स्वभाव का और दयालु था। वह केवल अधिक से अधिक नम्बर देना जानता था।

"मैं बाकविस्ट से मिलने जा रहा हूं", मेरिया को सम्बोधन करते हुए उसने कहा, "परन्तु मैंने सुना है वह घर पर नहीं है।"

वे सड़क से उतर कर गांव के रास्ते पर आगये। हेनोव आगे चल रहा था और सेमोन उसके पीछे। कीचड़ के कारण चारों घोड़ों को उस बड़ी गाड़ी को खींचने में बड़ा जोर लगाना पड़ रहा था। वे धीरे-धीरे चल रहे थे। सेमोन कभी अपनी गाड़ी दांयें को चलाता था कभी बांयें को, कभी बरफ में से उसे गाड़ी निकालनी पड़ती थी और कभी पोखरों में से। अक्सर उसे गाड़ी से कूदकर घोड़े की मदद करनी पड़ती थी। मेरिया अब भी आने वाली परीक्षा के बारे में ही मग्न थी और सोच रही थी कि गणित का पर्चा इस बार सख्त आएगा या सरल। उसे रह रहकर झुंझलाहट भी होती थी कि उस रोज़ बोर्ड की मीटिंग में कोई भी हाजिर नहीं था। कितना अन्धेर है! वह पिछले दो साल से चौकीदार के निकालने के लिये कहती आ रही है, पर कोई सुनवाई ही नहीं होती! न वह कोई काम ही करता है, मुझसे भी बुरी तरह पेश आता है,

और स्कूल के बच्चों तक को मार बैठता है। अव्वल तो प्रेज़ीडेण्ट दफ्तर में बैठा मिलता ही नहीं, अगर मिल भी जाता है तो रोनी सी शक्ल बनाकर कह देता है कि उसे मरने की भी फ़ुरसत नहीं है। इन्सपेक्टर भी तीन साल में एक बार आता है। वह महकमा कस्टम से सिफारिश के कारण इधर ले लिया गया है और अपने नये काम के बारे में कुछ जानकारी भी नहीं रखता। स्कूल-कौंसिल की बैठक कभी-कभी होती है और यह पता भी नहीं चलता कि उसकी बैठक किस जगह होती है। स्कूल का संरक्षक भी अशिक्षित है। उसका चमड़ा रंगने का कारखाना है। वह नासमझ और गंवार है। चौकीदार से उसकी बड़ी दोस्ती है। खुदा खेर करे! अब वह किस पर अपनी फ़रियाद ले जावे और अपनी शिकायतें पेश करे.........।

"वह सचमुच सुन्दर है", उसने हेनोव पर दृष्टि डाली और मन में सोचा।

ज्यों-ज्यों वे आगे बढ़ते गये रास्ता और भी अधिक खराब होता गया। वे अब जंगल पार कर रहे थे। गाड़ी के मोड़ने को जगह न थी; पहिये कीच में धंसे जा रहे थे; पानी उछलता था और उन पर आकर पड़ता था। झाड़ियों की टहनियां उनके माथे पर आकर चोट करती थीं।

"खुदा बचाये इस रास्ते से", हेनोव ने हंसते हुए कहा।

अध्यापिका ने उसकी ओर देखा, परन्तु वह यह न समझ सकी कि वह इस गांव में क्यों रहता है। अपने रुपये का, अपनी सुन्दर मुखाकृति का और अपने शिष्ट व्यवहार का वह इस कीच में, इस उजड़े हुए भयावने गांव में क्या फ़ायदा उठाता होगा? अपनी इस

जिन्दगी से उसे ख़ास हासिल भी क्या होता होगा ? जैसे बेचारा सेमोन लुढ़कते-लुढ़काते गाड़ी हांकता है वैसे ही वह भी अपने हाथों से गाड़ी हांककर मुसीबतें झेलता फिरता है। जब कोई ऐसा आदमी पीटर्सबर्ग या अन्य बड़े शहर में रहने की हैसियत रखता है तो फिर उसे ऐसे गांव में रहने से क्या मतलब ? फिर इस पैसे वाले आदमी के लिये इस कच्चे रास्ते को पाट देना भी क्या मुश्किल है ? वह सदा के लिये इस मुसीबत से बच सकता है और अपने कोचवान तथा सेमोन की परेशानी भी मिटा सकता है। परन्तु देखो ! वह उल्टा हंसता है, और उसके रंग-ढंग से ऐसा प्रतीत होता है कि उसे इसमें कुछ भी कष्ट महसूस नहीं होता। विपरीत इसके वह इस जीवन को पसन्द करता है। वह दयालु, विनम्र और शरीफ़ है। अगर उसे परीक्षा के मौके पर प्रार्थना के मन्त्र भी याद नहीं निकले हैं तो वह अपनी देहाती जिन्दगी क्यों कर महसूस कर सकता है ? केवल रंग-बिरंगे गोलों के अतिरिक्त वह स्कूल को दान भी कुछ नहीं देता। परन्तु अपने दिल में वह, वास्तव में, समझता है कि सर्व-साधारण के शिक्षा-प्रसार में उसका बड़ा हाथ है। उसके उन गोलों का वहां क्या फ़ायदा ?

"सम्भल जाओ", सेमोन ने कहा।

इतने में ही एक ओर का पहिया गढ़े में जा गिरा और गाड़ी को बड़े ज़ोर का धक्का लगा। वह उलटते उलटते बची। मेरिया के पैरों पर एक वज़नी चीज़ आकर गिरी। वह उसकी खरीदी हुई चीज़ों की पिटारी थी। आगे बड़ी ऊंची चढ़ाई थी। बीच में से होकर गाड़ी को चढ़ाना था, छोटे नाले शोर मचाते हुए बह रहे थे; ऐसा मालूम होता था मानों पानी सड़क को निगले जा रहा है; ऐसे रास्ते

पर भला कोई कैसे चल सकता था। घोड़ों का दम फूल आया और वे बड़े ज़ोर से सांस ले रहे थे। हेनोव गाड़ी से उतर पड़ा और रास्ते के एक किनारे से चलने लगा। उसने ओवरकोट पहन रखा था। उसे भला ठण्ड कहां?

"कैसी बढ़िया सड़क है", उसने कहा और खिलखिलाकर हंस पड़ा।

"यहां गाड़ी टूटने में क्या कसर रह जाती है?"

"आपको इस मौसम में गाड़ी चलाने के लिये कौन मजबूर करता है?" समोन ने झुंझलाकर कहा, "बेहतर होता आप घर ही आराम करते।"

"बाबा, मुझे घर बैठने में आलस्य आता है। मैं घर पर बैठा रहना पसन्द नहीं करता।"

बूढ़े सेमोन के मुक़ाबले में वह शिष्ट और उत्साही प्रतीत होता था। परन्तु उसकी चाल से साफ़ प्रकट था कि उसे घुन लग चुका है, और उसकी शक्ति क्षीण होने लग गई है। उसके दिन भी करीब आ चुके हैं। अकस्मात् जंगल में हवा का एक बड़ा झोंका आया। मेरिया हेनोव के जीवन को बिगड़ते देख भयभीत भी हुई और उसे दया भी आई। उसके मन में विचार उठा कि, कहीं वह उसकी स्त्री होती अथवा बहिन होती तो वह अपना सारा जीवन उसके जीवन को बरबादी से बचाने के लिये उत्सर्ग कर देती। उसके भाग्य में यही बदा था कि वह एक ओर अपनी कोठी में अकेला रहता चला आवे और वह इस नरक-सरीखे गांव में पड़ी सड़ती रहे! इस पर भी उसे बराबरी के दर्जे पर साथ-साथ रहने का विचार, न जाने क्यों, असम्भव और मूर्खतापूर्ण मालूम हुआ। सचमुच हमारा

जीवन ऐसी अदृश्य जंजीरों से जकड़ा हुआ है कि जिन्हें हम कोशिश करने पर भी समझ नहीं पाते और कभी विचार भी करते हैं तो हमारा दिल बैठने लगता है और हम भौंचक्के से रह जाते हैं।

"और यह हमारी समझ से परे की वस्तु है", उसने सोचा। "भला ईश्वर ऐसे निकम्मे, दुर्बल अभागे आदमियों को ऐसा सौन्दर्य बड़प्पन और इतनी प्रभावोत्पादक मधुर आंखें क्यों देता है ? उनमें इतना आकर्षण क्यों रहता है ?"

"हमें अब दाहिनी ओर जाना है", गाड़ी में बैठते हुए हेनोव ने कहा। "नमस्ते, ईश्वर आप सब के साथ हो।"

मेरिया फिर विचार-मग्न हो गई। उसे पहले विद्यार्थियों की याद आई, फिर परीक्षा की, और फिर स्कूल-कौंसिल की। दूसरे ही क्षण गाड़ी के दूर जाने का ख्याल आया और दूसरे-दूसरे विचारों ने उसे घेर लिया। वह प्रेम-सागर में गोते खाने लगी। कितनी सुन्दर हैं वे आंखें; कितना आनन्दमय होगा वह जीवन......।

और स्वयम् उसका जीवन ? प्रातःकालीन कड़ाके की सर्दी, कोई अंगीठी सुलगाने को पास में नहीं। चौकीदार न जाने कहां गायब हो गया है; रोशनी होते ही बच्चे बरफ और कीच से सने चिल्लाते हुए आ रहे हैं। कितनी परेशानी है, कितनी आफत ! उसके रहने के लिये केवल एक कमरा था और उसके पास ही रसोई-घर। स्कूल के बाद हर रोज़ ही उसका सिर दर्द करने लग जाता था और भोजन के बाद दिल में चीस उठने लगती थी। उसे बच्चों से ईंधन के लिये और स्कूल के चौकीदार के लिये पैसे इकट्ठे करने पड़ते थे और उन्हें बाद में स्कूल के संरक्षक—उस गंवार, भारी बदन वाले किसान को देकर उससे लकड़ी मँगाने के लिये

खुशामद-दरामद करनी पड़ती थी। रात को स्वप्न में उसे परीक्षा होती दिखलाई पड़ती थी, अथवा किसान दिखाई पड़ते थे अथवा बरफ़ के तूफ़ान। इस प्रकार के जीवन ने ही उसे वृद्ध, कुरूप और पत्थर बना दिया था। वह हमेशा भयभीत रहने लगी थी। यहां तक कि उसे स्कूल के संरक्षक के सामने आने में अथवा बोर्ड की मीटिंग में जाने में भय लगता था। वह बातचीत भी बहुत कम करती थी। कोई उसकी ओर आकर्षित भी नहीं होता था। उसका जीवन शुष्क हो गया था, न उसमें प्रेम था, न मित्रों की सहानुभूति और न समय काटने के लिये परिचित व्यक्तियों का साथ। कितना दयनीय था उसका जीवन! और इस पर भी उसका प्रेम में फंस जाना!

"संभल कर बैठना, वेस्सिलेयवना।"

फिर ऊंची चढ़ाई......!

उसे जरूरत ने ही अध्यापिका बनाया था। स्वयम् मन से वह यह कभी नहीं चाहती थी। उसने कभी न तो निस्वार्थ सेवा का और न ज्ञान के प्रसार का विचार ही किया था। वह तो हमेशा से यही सोचती आई है कि उसके पढ़ाने का एकमात्र उद्देश्य परीक्षाएँ हैं, बच्चों की सेवा अथवा ज्ञान-प्रसार नहीं। क्या उसके पास इन बातों के लिये समय भी था? शिक्षकों, थोड़े वेतन वाले डाक्टरों और उनके नीचे काम करने वालों को दिन-रात काम में जुटे रहने के कारण अपने उद्देश्य पर चलने के लिये अथवा समाज-सेवा के लिये सोचने का भी समय नहीं मिलता। इस प्रकार के कठिन और नीरस जीवन को शान्त स्वभाव और सौम्य-प्रकृति वाली कोल्हू के बैल की तरह जुटी रहने वाली मेरिया वेस्सिलेयवना सरीखी स्त्री

ही भुगत सकती है। चंचल प्रकृति वाले खुशदिल आदमी भला इसमें कितने दिन टिक पाते हैं!

सेमोन रास्ता काटता हुआ आगे बढ़ रहा था। कहीं उसे चरागाह में से गुजरना पड़ता था, और कहीं गांव की झोंपड़ियों के पीछे होकर। कभी उसे किसान अपने खेतों में से गुजरने से रोक देते थे और कभी पादरी की जमीन आ पड़ने के कारण उसे चक्कर काट कर जाना पड़ता था।

वे नी.....गांव में पहुंचे। इर्द-गिर्द जमीन पर गोबर पड़ा था। बरफ़ अब भी वहां से हटी नहीं थी। वहां कई गाड़ियां खड़ी हुई थीं जो गन्धक का तेज़ाब लेकर आई थीं। सराय में ढेर के ढेर आदमी थे जिनमें अधिकांश कोचवान थे; वहां तम्बाकू, शराब और खालों की बू आ रही थी; गुल-गपाड़ा मचा हुआ था; रुक-रुककर दरवाजे के बन्द होने की आवाज भी आती थी। नज़दीक की दुकान में गाना-बजाना चल रहा था, जिसका स्वर दीवार में से होकर आ रहा था। मेरिया वेस्सिलेयवना बैठ गई और चाय पीने लगी। साथ की मेज पर बैठे देहाती शराब पीते थे, गरम-गरम चाय निगलने और अंगीठियों की आंच के कारण वे पसीना-पसीना हो रहे थे। "देखो, कुज्मा!" लोग ज़ोर ज़ोर से चिल्लाते थे।

"खुदा खैर करे, सच जानो, वह ईवान- डे...है। वह देखो, बाबा!"

एक ठिगना सा, काली दाढ़ी वाला आदमी शराब के नशे में चूर हो रहा था! किसी के छेड़ने पर वह गाली बकने लग गया।

"तू किसे गाली दे रहा है बे?" सेमोन ने, जो कुछ हटकर बैठा था, आंखें लाल करते हुए कहा, "क्या तेरी माथे की दोनों फूट

गई हैं जो तुझे पास में बैठी हुई युवती का भी ख्याल नहीं ?"

"युवती !" एक कोने से किसी ने मुंह बनाते हुए कहा।

"पाजी कहीं के !"

"भई, हमारा तो ऐसा कुछ......नहीं था," घबरा कर उस ठिगने आदमी ने कहा। "क्षमा करना, हम अपने पैसे खर्च कर रहे हैं, और वह अपने। सलाम।"

"सलाम", अध्यापिका ने जवाब में कहा।

"हम तहे दिल से आपका शुक्रिया अदा करते हैं।"

मेरिया वेस्सिलेयवना ने तसल्ली से चाय पी। वह भी देहातियों की तरह सुर्ख हो गई। वह फिर सोच में पड़ गई। लकड़ी, चौकीदार......।

"सुनो, बाबा", दूसरी मेज से उसके कानों में आवाज़ आई। "यह तो व्याज़ोव्या की अध्यापिका है...। हम उसे अच्छी तरह जानते हैं। वह बड़ी शरीफ औरत है।"

"वह बड़ी अच्छी तरह है !"

दरवाजे के बन्द होने और खुलने का शब्द हो रहा था। कुछ आरहे थे, कुछ जा रहे थे। मेरिया वेस्सिलेयवना बैठी बैठी उन्हीं बातों को सोचती रही। गाने-बजाने का शब्द भी लगातार जारी रहा।

सूरज की किरणें पहले फर्श पर पड़ रही थीं, फिर वे तख्त पर पड़ने लगीं, उसके बाद दीवार और आखिर में बिलकुल चली गईं। सूरज की तरफ देखने से भी यह मालूम होता था कि दोपहर ढल चुका है। पास वाली मेज पर बैठे हुए देहाती भी जाने के लिए तैयार थे। वह ठिगना आदमी कुछ लड़खड़ाते हुए मेरिया

वेस्सिलेयवना के पास आया और मिलाने के लिए हाथ आगे बढ़ाया। उसके देखा-देखी दूसरों ने भी उससे हाथ मिलाया, और एक एक करके सब बाहर चले गये। वह दरवाजा भी आवाज के साथ नौ बार खुला और बन्द हुआ।

"वेस्सिलेयवना, तैयार हो जाओ", सेमोन ने कहा। वे चल पड़े। अब भी वे धीरे-धीरे चल रहे थे।

"कुछ समय हुआ तब नी......वाले यहाँ स्कूल बना रहे थे", सेमोन ने गर्दन फेर कर कहा। "वे बड़े बेईमान थे।"

"क्यों? किस तरह?"

"लोग कहते हैं १०००) प्रेज़ीडेण्ट खा गया। १०००) स्कूल का संरक्षक खा गया, और मास्टर ५००) अलग।"

"परन्तु स्कूल में तो कुल १०००) ही खर्चा पड़ा है। बाबा, इस तरह लोगों के सिर दोष नहीं मढ़ना चाहिये। यह सब बकवास है।"

"मुझे अधिक क्या पता, जो सुना है कह रहा हूं।" परन्तु इतना कोई भी जान सकता था कि सेमोन को अध्यापिका के कहने का विश्वास नहीं हुआ। देहाती भी उसे सन्देह की नज़र से देखते थे। उनके ख़याल में २५) रुबल उसे बहुत ज्यादा मिलते थे। ५) बस काफ़ी थे। और फिर जो रुपया वह लकड़ी और चौकीदार के लिये स्कूल के बच्चों से इकट्ठा करती थी, उसमें से भी, उनका ख्याल था, वह खा जाती थी। स्कूल का संरक्षक भी यही सोचता था। परन्तु वह खुद लकड़ी के पैसों में से खा जाता था, और किसानों से भी पैसे लेता रहता था जिनकी ऊपर कोई इत्तला नहीं पहुँचती थी।

जंगल निकल चुका था। सामने उनके गांव तक मैदानी जमीन थी। उनके लिये अब फासला भी कम ही तय करना रह गया था। पहले उन्हें नदी पार करनी थी; फिर रेल की पटरी; और बाद को व्याज़ोव्या सामने दिखलाई पड़ने लगता था।

"भई, किधर मुड़ रहे हो", मेरिया ने सेमोन से पूछा। "दाहिनी सड़क को हो लो।"

"क्यों, हम इधर से भी तो जा सकते हैं। नदी इतनी गहरी थोड़े ही है।"

"क्या ?"

दाहिनी ओर दूर—मेरिया वेसिलियेवना को चार घोड़े आते हुए दिखाई दिये।

"वह देखो, हेनोव पुल की तरफ चला आ रहा है। क्यों वही है न ?"

"ठीक, मालूम होता है उसे बाकविस्ट घर पर नहीं मिला। वह कितना खब्तदिमाग है! खुदा भला करे! उसे उधर होकर आने की क्या जरूरत थी ? इधर से पूरा दो मील कम पड़ता।"

वे नदी पर पहुँचे। गर्मियों में घुटने से ज्यादा पानी नदी में नहीं रहता था, और बड़ी आसानी से पैदल पार की जा सकती थी। कभी-कभी तो अगस्त में वह सूख भी जाती थी। परन्तु इन दिनों बसन्त की बाढ़ के बाद वह कोई ४० फुट फैल जाती। वह बड़ी तेजी से बहने लगती, पानी मटीला हो जाता और इतना ठण्डा हो जाता था कि हाथ लगाने को जी न चाहता था। नदी के किनारे से पानी तक गाड़ी के पहियों के निशान पड़े हुए थे, जिससे यह मालूम होता था कि अभी-अभी कोई गाड़ी यहां से गुजरी है।

सेमोन ने लगाम को झटका मारा। बड़े जोर से, गुस्से में, परन्तु कुछ घबराहट के साथ घोड़े को नदी में बढ़ाया। घोड़ा आगे बढ़ता चला गया और जब उसके पेट तक पानी आया तो रुक गया। लेकिन फिर एकदम बढ़ता चला गया। मेरिया वेसिलेयवना के पैरों तक पानी आगया। वह उठ कर खड़ी हो गई। अब वे किनारे पर पहुंच चुके थे।

घोड़े का साज ठीक करते हुए सेमोन गुनगुनाया, "खुदा की बड़ी मेहरबानी हुई जो हम इस मुसीबत से पार पा गये।" मेरिया के जूते और जुराबें सब तर हो गये थे। यहां तक कि उसके बदन के निचले हिस्से के कपड़े और कोट व उसकी एक आस्तीन भी भीग गई। उनसे पानी निचुड़ रहा था। गाड़ी में रखा हुआ आटा और चीनी भी सूखी न रहने पाई। इनका भीगना ही उसे सब से ज्यादा अखरा। उसने अपने हाथ मलते हुए और अनमने मन से कहा, "ए सेमोन, तुम कितना परेशान करते हो।"

रेल का फाटक बन्द हो चुका था। रेलगाड़ी स्टेशन से आ रही थी। मेरिया वेसिलेयवना गाड़ी से उतर कर खड़ी हो गई और रेल के गुजर जाने का इन्तज़ार करने लगी। खड़ी खड़ी वह ठंड के मारे कांप रही थी। व्याज़ोव्या सामने दीख रहा था। सामने ही हरी छत वाला स्कूल और गिरजे का क्रास अस्त होते हुए सूर्य के प्रकाश में चमक रहे थे। स्टेशन की खिड़कियां भी चमक रही थीं। एंजिन से मटियाला धुंआ निकल रहा था। उसे ऐसा लग रहा था, मानों सब चीजें जाड़े के मारे कांप रही हैं।

गाड़ी आ पहुंची। खिड़कियों के शीशों का अक्स पड़ रहा

था। यहां तक कि उधर देखा भी नहीं जाता था। पहले दर्जे के दरवाजे में एक महिला खड़ी हुई थी। मेरिया वेसिसलेयवना की निगाह उस पर पड़ी। "मेरी मां!" यह तो उससे बिलकुल मिलती-जुलती है! उसकी मां के भी इसी प्रकार के घने सुनहले बाल थे, और सिर की आकृति भी इसी तरह की थी। १३ वर्ष बाद आज पहली बार उसके सामने अपने मां, बाप,' भाई, मॉस्को का उसका मकान, मछली वाला कांच का गमला और सब चीजों का नज़ारा आगया। उसे पियानों का सुर और अपने पिता की आवाज सुनाई दी। उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानों वह अब भी सुन्दर कपड़े पहने हुए एक सुन्दर बालिका है, और अपने घर के गरम कमरे में बैठी हुई है। उसका हृदय आनन्द से ओत-प्रोत हो गया। उसने अपने हाथ गालों पर रखे और उन्हें दबाते हुए धीरे से पुकारा "मां!"

उसे रोना आगया। वह स्वयम् भी न जान सकी क्यों? उसी क्षण हेनोव गाड़ी में बैठा हुआ उधर आगया। उसको देखकर उसे बेहद खुशी हुई; उसकी ओर मुस्कराई; उसकी ओर इशारा किया मानों वह उसका कोई मित्र हो। उसे प्रतीत हुआ मानों आसमान, सब दिशाएं, गाड़ी की सब खिड़कियां और सब पेड़ उसकी खुशी और विजय में हिस्सा ले रहे हैं; उसके मां-बाप कभी मरे ही नहीं; वह स्कूल में अध्यापिका कभी थी ही नहीं। उसका वह जीवन एक लम्बा, नीरस, और विचित्र स्वप्न था जिससे वह अब जगी थी......।

"वेसिसलेयवना, गाड़ी में बैठो!" उसका बना-बनाया महल सब हवा हो गया। फाटक धीरे-धीरे खुलने लगा। वह ठण्ड के

मारे थर-थराती हुई गाड़ी में बैठ गई। पहले चार घोड़ों वाली गाड़ी ने लाइन पार की। सेमोन का नम्बर उसके बाद आया। चौकीदार ने टोपी उतार कर सलाम किया।

"यह व्याज़ोव्या है। हम यहां आ पहुंचे हैं।"

प्यारी

[आन्टन चेहोव]

अदालत के रजिस्ट्रार प्लेमायनाकोव की पुत्री ओलेंका अपने बंगले के पिछले दालान में विचार-मग्न बैठी हुई थी। बड़ी गर्मी पड़ रही थी और मक्खियां भी कम उपद्रव नहीं मचा रही थीं। यही एक खुशी की बात थी कि जल्द ही शाम पड़ने वाली थी। पूर्व की ओर बादल इकट्ठे हो रहे थे और वे समय-समय पर हवा को आर्द्र कर रहे थे।

कुकीन वहीं बगीचे में खड़ा था। वह टिवोली थियेटर का मैनेजर था और उसी बंगले में रहता था।

"फिर", बड़ी निराशा भरी दृष्टि से आसमान की ओर देखते हुए उसने कहा, "आज फिर वर्षा होगी! रोज ही वर्षा हो जाती है, मानों मुझसे बदला लेती हो। मैं तो तंग आ चुका हूं! सर्वनाश! रोज़ ही ज़बरदस्त नुकसान हो रहा है।"

उसने अपने हाथ ऊपर को उठा लिये, परन्तु ओलेंका से बात-चीत जारी रखी।

"देखो, यही तो हमारा जीवन है! इसलिये ही मनुष्य जीवन से ऊब जाता है। मनुष्य काम करता है और अपनी पूरी ताकत लगा देता है। वह हार जाता है, न दिन को चैन, न रात को नींद।

वह भरसक प्रयत्न करता है कि उसका काम उत्तम हो। परन्तु होता क्या है ? दुनिया उसके किये की कदर नहीं करती। मैं अपनी ओर से बड़ी अच्छी चीज, अच्छे गाने और प्रवीण कार्यकर्त्ताओं का प्रबन्ध करता हूँ। परन्तु जानती हो वे क्या चाहते हैं ? उन्हें इनमें से कुछ भी पसन्द नहीं आता—वे चाहते हैं विदूषक और उसके व्यर्थ के प्रलाप। और फिर मौसम देखो ! हर रोज ही वर्षा हो जाती है। वर्षा दस मई को शुरू हुई थी। सारी मई खत्म हो गई और जून भी आ पहुंचा, मगर वर्षा बन्द नहीं हुई। बड़ी मुसीबत है। दर्शक आ नहीं पाते, परन्तु मुझे किराया देना ही पड़ता है और साथ ही साथ नाटक-मण्डली को भी।

दूसरे दिन सन्ध्या को फिर बादल घिर आते और कुकीन जोर से चिल्लाता हुआ फिर कहता, "बरसो, खूब बरसो ! यहां बगीचे में बाढ़ आजाय और मुझे बहाकर ले जाय ! मुझे जेल भेज दे ! देश निकाला—साइबेरिया और फांसी ! हा...हा...हा... हा......"

और अगले दिन फिर वही !

ओलेंका कुकीन के ऐसे प्रलाप शान्ति से सुना करती और कभी-कभी उसके नेत्रों से अश्रु बहने लगते। धीरे-धीरे कुकीन की बदकिस्मती का उसे दुःख होने लगा; और वह उससे प्रेम करने लग गई। वह छोटे से क़द का दुबला-पतला आदमी था। रंग उसका पीला था। उसके घुंघराले बालों से माथा उसका ढका रहता था। वह बड़ी धीमी आवाज़ से बोलता था। बोलते समय उसका मुख एक ओर से अधिक हिलता था और उसके चेहरे पर हमेशा निराशा छायी रहती थी। इन सबके होते हुए भी वह

उसे बहुत चाहती थी। वह हमेशा किसी न किसी को प्राणपन से प्रेम करती रही थी। प्रेम किये बिना उसके लिये जीना असम्भव था। बचपन में वह अपने पिता को बहुत ज्यादा चाहती थी, जो अब कब्र में पहुंच चुका था। वह अपनी एक चाची से भी बहुत प्रेम करती थी जो हर तीसरे साल उसके पास हो जाया करती थी। उसके पहले जब वह स्कूल में पढ़ती थी तो फ्रेंच सिखाने वाले अपने शिक्षक को प्यार करती थी। वह विनम्र, कोमल हृदय और भावुक लड़की थी। स्वास्थ्य उसका बहुत अच्छा था। उसके भरे हुए गुलाबी गाल, उसकी मुलायम सफेद गर्दन, जिस पर एक छोटा सा तिल था, और उसके मृदुल, नैसर्गिक हास्य को, जो किसी भी मनोरंजक वार्तालाप को सुनकर उसके वदन पर आजाता था, देखकर पुरुष सोचते थे, 'हां, कम नहीं है' और मुस्करा देते थे; और जो स्त्रियां उसके पास आती थीं वे बातचीत करते-करते उसका हाथ अपने हाथों में ले लेने के लिये बाध्य हो जाती थीं और खुशी के आवेश में कह बैठती थीं 'प्यारी !'

अपनी पैदायश से जिस घर में वह रहती आई थी और जो पिता की मृत्यु पर उसका हो गया था, वह शहर के किनारे पर था परन्तु टिवोली के निकट ही। सायंकाल और रात्रि में गाने-बजाने की आवाज़ सुनाई देती थी और आतिशबाजी का शोर। उसे ऐसा प्रतीत होता कि कुकीन अपने भाग्य से लोहा ले रहा है, वह अपने बैरी उदासीन जनता के गढ़ को घेर रहा है। उसके हृदय में एक गुदगुदी पैदा होती, सोने को उसकी तबियत नहीं होती और जब सुबह वह वापिस लौटता तब वह धीरे से अपने सोने के कमरे की खिड़की को खटखटाती और पर्दे की ओट से अपना चेहरा और

एक कन्धा दिखाकर उसकी ओर मुस्कराती थी।

कुकीन के विवाह का प्रस्ताव रखने पर उन दोनों की शादी हो गई। जब कुकीन ने उसकी गर्दन और भरे हुए कन्धों को पास से देखा तो उसने अपने हाथ उछालते हुए कहा, 'प्यारी!'

कुकीन के दिन आनन्द से कटने लगे, परन्तु विवाह वाले दिन भी दिन-रात पानी बरसते रहने के कारण उसके मुख पर से नैराश्य के भाव न जा सके।

उनकी आपस में खूब पटती थी। वह उसके दफ्तर में जा बैठती, टिवोली में देख-भाल करती, हिसाब-किताब रखती और तनख्वाह बांटती थी। उसके गुलाबी गाल, उसकी मधुर, नैसर्गिक और दिव्य हंसी कभी दफ्तर की खिड़की में, कभी जलपान के कमरे में और कभी पर्दे के पीछे दिखलाई पड़ती थी। वह अपने परिचित व्यक्तियों से कहने लग गई थी कि रङ्ग-मञ्च जीवन में प्रमुख और नितान्त वांच्छनीय वस्तु है, और मनुष्य केवल नाटक से वास्तविक आनन्द प्राप्त कर सकता है तथा सभ्य और दयालु बन सकता है।

वह कहा करती, "क्या आप समझते हैं कि जनता इसे समझती है? वे तो हंसी-मज़ाक चाहते हैं। कल हमने......नाटक खेला था और लगभग सब ही कौच खाली थे, परन्तु अगर हम कोई गंवारू खेल करें तो नाटक-घर ठसाठस भरा रहे। कल हम......खेल कर रहे हैं। अवश्य आना।"

कुकीन जो कुछ भी रंग-मंच और नटों के बारे में कहता वह दुहराती। उसकी तरह ही वह भी जनता को उसकी कला की अनभिज्ञता और उदासीनता के कारण हिकारत की निगाह से

देखती। वह रिहर्सल में भाग लेती, नटों को सिखाती, गवैयों के बर्ताव पर निगाह रखती, और जब कभी किसी स्थानीय समाचार-पत्र में विरोध में कोई टीका-टिप्पणी होती तो वह आंसू बहाती और बाद को सम्पादक के दफ्तर में जाकर उसे ठीक-ठाक करवाती।

नाटक में काम करने वाले उससे बहुत प्रसन्न रहते थे और उसे 'प्यारी' कहकर पुकारते थे। वह उनके दुःख में हाथ बंटाती थी और उन्हें समय-समय पर थोड़ा बहुत उधार भी देती रहती थी। अगर उनमें से कोई उसका रुपया वापिस न करता था तो वह चोरी चोरी रोती थी, परन्तु अपने स्वामी से उसने कभी शिकायत नहीं की।

शरद में उनका ठीक-ठाक चलता रहा। सर्दियों भर उन्होंने अपना थियेटर शहर में रक्खा। कुछ दिन के लिये उन्होंने उसे 'लिटिल रूसी कम्पनी' को किराये पर दिया, फिर एक जादूगर को और तत्पश्चात् एक स्थानीय नाटक-मंडली को। ओलेंका सदैव ही प्रसन्न चित्त रहती और पहले से हृष्ट-पुष्ट हो गई; विपरीत इसके कुकीन दुर्बल होता चला, उसके चेहरे का रंग फीका पड़ गया। वह हमेशा ही बड़े-बड़े घाटों का रोना रोता रहता था, हालांकि सर्दियों के इन दिनों में उसने कुछ कम नहीं कमाया था। रात में उसे खांसी आती थी। ओलेंका उसे गरमा-गरम चाय देती, अथवा नीबू के फूलों का अर्क, और उसके सिर पर तेल की मालिश करती तथा अपना गरम शाल उसे ओढ़ा देती।

"तुम कितने प्यारे लगते हो!" उसके बालों पर हाथ फेरती हुई वह सच्चे दिल से कहती। "तुम कितने प्यारे लगते हो।"

कुछ नये आदमी भर्ती करने के लिये वह मॉस्को चला गया।

उसकी अनुपस्थिति के कारण ओलेंका सो भी न सकी। वह रात भर खिड़की में बैठी रहती और तारे गिनती रहती। वह अपनी तुलना उन मुर्गियों से करती जो मुर्गे के चले जाने पर रात भर चीखती-चिल्लाती रहती हैं। कुकीन को मॉस्को में अधिक रुकना पड़ गया। उसने लिखा कि वह ईस्टर तक वापिस लौटेगा। टिवोली के ठीक ठीक चलाने के लिये भी उसने आवश्यक बातें लिख भेजीं। परन्तु ईस्टर से पहले ही रविवार को ओलेंका ने दरवाजे का मनहूस खटका सुना। ऐसा मालूम होता था मानों कोई हथौड़ा लेकर दरवाजा तोड़ रहा है। ऊंघता हुआ रसोइया नंगे पांव धीरे-धीरे दरवाजे की ओर बढ़ा, परन्तु ओलेंका भागकर दरवाजे पर जा पहुंची।

"दरवाजा खोलो", बाहर से भर्राई हुई आवाज़ आई। "आपके नाम का एक तार है।"

ओलेंका को इससे पहले अपने पति की ओर से समय-समय पर तार मिलते रहते थे, परन्तु न जाने क्यों इस बार उसके हाथ-पैर किसी घबराहट के कारण ठण्डे पड़ गये। कांपते हुए हाथों से उसने तार खोला और नीचे लिखे मुताबिक उसे पढ़ा:—

"ईवान पेट्रोविच की अकस्मात् आज मृत्यु हो गई। दाह-कर्म कल होगा, लौटती डाक से अपना आदेश भेजो।"

तार ऊपर लिखे मुताबिक था और उस पर सिनेमा कम्पनी के व्यवस्थापक के हस्ताक्षर थे।

"हाय मेरे प्यारे!" ओलेंका सिसकियां भरने लगी, "मेरे सर्वस्व, मेरे प्रियतम! मेरा तुमसे साक्षात् ही क्यों हुआ? क्यों मैं तुमसे परिचित हुई और प्रेम किया? तुम्हारे बिना तुम्हारी प्यारी

श्रोलेंका निपट अकेली रह गई है।"

मॉस्को में कुकीन का दाह-कर्म मंगलवार को हुआ, और ओलेंका बुधवार को घर वापिस आगई; पर ज्योंही वह अन्दर घुसी, वह धड़ाम से बिस्तर पर गिर पड़ी और इतनी जोर-जोर से सिसकियां भर कर रोने लगी कि पड़ोस के घर में और सड़क पर से भी आवाज़ सुनाई पड़ती थी।

"बिचारी प्यारी!" पड़ोसियों ने हाथों से क्रॉस का चिन्ह बनाते हुए कहा—"ओल्गा सेम्योनोवना, गरीब प्यारी! बिचारी को कितना बुरा लग रहा है।"

उपरोक्त घटना के तीन महीने बाद ओलेंका सायं-प्रार्थना से उदास और शोकातुर मुख लिये वापिस घर लौट रही थी। अकस्मात ही उसका एक पड़ोसी, जिसका नाम वासिली था गिरजे से वापिस घर उसके पीछे-पीछे आरहा था। वह एक कामीदा लकड़ी की दुकान पर मैनेजर था। सिर पर उसके तिनके का हैट था और बदन में सफेद कुर्ती, जिस पर घड़ी की सोने की जंजीर लटक रही थी। इस प्रकार की वेश-भूषा में वह बजाय व्यापारी के कोई ग्रामीण मालूम पड़ता था।

"जो किस्मत में होता है वह होकर ही रहता है, ओल्गा सेम्योनोवना", उसने गम्भीर मुद्रा में परन्तु सहृदयता दिखलाते हुए कहा, "और अगर हमारे प्रियजन मरते हैं तो यह ईश्वरेच्छा से ही होता है, इसलिए हमें धैर्य के साथ और ईश्वर में विश्वास रखकर सब सहन कर लेना चाहिये।"

ओलेंका को उसके घर तक पहुँचा कर और उससे विदा लेकर वह चला गया। उसके चले जाने के बाद दिन भर उसे उसके

सौम्य परन्तु सान्त्वना देने वाले शब्द सुनाई देते रहे। और जब कभी वह अपने नेत्र बन्द करती थी तो उसे उसकी काली दाढ़ी दिखलाई पड़ती थी। ओलेंका को वह बहुत पसन्द आया। उसे कुछ ऐसा प्रतीत होता था कि उसका प्रभाव भी उस पर कुछ पड़ा है, क्योंकि कुछ दिन बाद ही उसके यहां एक स्त्री चाय-पान के लिए आई। बैठते ही उसने वासिली के बारे में बातचीत छेड़ दी और कहने लगी कि वह बड़ा शरीफ आदमी है जिस पर पूरा विश्वास रक्खा जा सकता है और कोई भी स्त्री उससे विवाह कर बड़ी प्रसन्न होगी। उसके जाने के तीन दिन बाद ही वासिली स्वयं आगया। वह अधिक देर नहीं रुका, केवल दस मिनट और न ही विशेष कोई बातचीत ही उसने की, परन्तु उसके जाने के बाद ही ओलेंका को महसूस हुआ कि वह उसे प्रेम करने लग गई है, इतना कि उसकी रात बेचैनी से करवटें बदलते ही गुजरी और सुबह होते ही उसने उस प्रौढ़ स्त्री को बुला भेजा। सम्बन्ध शीघ्र ही पक्का हो गया और विवाह की बारी आगई।

वासिली और ओलेंका के दिन विवाह के बाद खूब अच्छी तरह गुजरने लगे।

आम तौर पर वासिली दफ्तर में दुपहर तक बैठता, उसके बाद काम-धन्धे से निकल जाता। उसके जाने के बाद ओलेंका उसकी गद्दी पर आ बैठती और शाम तक दफ्तर में बैठी रहकर हिसाब-किताब लिखती रहती तथा ग्राहकों से आर्डर लेती रहती।

"लकड़ी के दाम हर साल ही बढ़ते जाते हैं; मूल्य २० प्रति शत बढ़ गया है", वह अपने ग्राहकों और मित्रों से इस प्रकार कहती। "देखो न, हम अब तक यहां की मण्डी से ही लकड़ी

लाकर बेचा करते थे, परन्तु अब हमें मोगीलेव जिले से खरीद कर लानी पड़ती है। और उस पर भाड़ा !" अपने दोनों हाथों से गालें ढांपकर वह कहती, "भाड़ा !"

उसे ऐसा प्रतीत होता था, मानों वह इस व्यापार में बरसों से लगी हुई है, और जीवन में सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यकीय वस्तु कामीदा लकड़ी ही है। यहां तक कि खम्भा, शहतीर, तख्ता वगैरह शब्दों में उसे एक प्रकार का अपनत्व अनुभव होने लगा था।

रात को स्वप्न में उसे तख्तों और स्लीपरों के एकसार पर्वत दिखलाई पड़ते, साथ ही डिब्बों की लम्बी-लम्बी कतारें जो कहीं दूर उनकी ढुलाई करने में लगी हुई हैं। उसे स्वप्न में दिखलाई पड़ा कि ६ इञ्च लट्ठों की ४६ फुट ऊंची एक पलटन अहाते की ओर बढ़ी चली आ रही है; और लट्ठे, शहतीर, तख्ते वगैरह आपस में एक दूसरे से टकराते फिरते हैं और फिर अपनी अपनी जगह इकट्ठे होते जाते हैं। ओलेंका स्वप्न में चिल्लाने लगती, तब वासिली प्रेम-पूर्ण स्वर में कहता, "ओलेंका, यह क्या, प्यारी ? क्रॉस का चिन्ह बना लो !"

उसके पति के विचार ही उसके अपने विचार होते थे। अगर वह सोचता कि कमरा बहुत गरम है अथवा काम-धन्धा मन्दा है, तो वह भी यही सोचती। उसके पति को खेल-तमाशे का शौक नहीं था, वह छुट्टियां घर पर ही काटता। ओलेंका भी ऐसा ही करती।

"तुम सदैव घर पर ही रहती हो अथवा दफ्तर में", ओलेंका से उसके मित्र कहते। "प्यारी, तुम्हें नाटक व सरकस में आना-

जाना चाहिये।"

"हमें नाटकों के देखने के लिये समय कहां", वह शान्त स्वर में उत्तर देती। "हमारे पास ऐसी बेवक़ूफ़ी के लिये समय कहां! भला ये नाटक किस मतलब के?"

प्रत्येक रविवार को वे दोनों सायं-प्रार्थना में जाते; छुट्टियों के दिन दुपहर की प्रार्थना में भी जाते और गिर्जे से लौटते समय वे साथ-साथ चलते। उनकी चाल-ढाल से एक प्रकार की प्रसन्नता झलकती थी। ओलेंका की रेशम की पोशाक भीना-भीना स्वर करती। घर आकर वे चाय पीते, इच्छानुसार डबल रोटी और मुरब्बे खाते और बाद को चॉकलेट वगैरह। प्रति दिन दुपहर को १२ बजे उनके यहां चुकन्दर का शोरबा अथवा बकरे का गोश्त या मुर्गी पकता, परन्तु छुट्टी वाले दिन मछली। जो भी फाटक के सामने से गुज़रता उसके मुंह में पानी आजाता। दफ्तर में ग्राहकों को चाय-पानी देने के लिये अंगीठी पर पानी सदैव ही खौलता रहता। सप्ताह में एक बार पति-पत्नी हमाम में स्नान करने पहुंचते और वहां से लाल-लाल चेहरे लेकर निकलते और साथ-साथ घर लौटते।

"जी, ईश्वर की असीम कृपा है कि हमें किसी प्रकार की कमी नहीं", ओलेंका अपने परिचित व्यक्तियों से कहती। "मैं तो हमेशा यही मनाती रहती हूं कि प्रत्येक हमारी तरह सुखपूर्वक दिन बसर करे।"

जब वासिली मोजीलेव के जिले में कामीदा लकड़ी खरीदने चला गया तो ओलेंका को अकेलापन बड़ा अखरा। रात भर बगैर नींद के उसने चिल्लाते हुए काटी। एक युवक पशु-चिकित्सक स्मिरनिन नामक, जिसे उन्होंने किराये पर रहने को जगह दे रखी

थी, कभी-कभी आ बैठता। ओलेंका उससे बातचीत करती और इस प्रकार वह अपने पति की अनुपस्थिति आनन्द से काटती। उसे पारिवारिक जीवन-सम्बन्धी बातें सुनने में विशेष आनन्द आता। उसकी शादी हो चुकी थी जिससे केवल उसके एक बेटा था। पत्नी के दुष्चरित्र होने के कारण उसे उसने अलग कर दिया था। वह अब उसे घृणा भी करने लग गया था, परन्तु बच्चे के पालन-पोषण के लिये प्रति मास ४० रूबल भेजता था। ओलेंका ने यह जानकर एक लम्बी सांस ली और अपना सिर हिलाकर उसने उसके प्रति अपनी संवेदना प्रकट की।

"अच्छा, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करेगा", बिदाई के समय जीने में रोशनी दिखलाते हुए वह उससे कहती। "मैं बड़ी कृतज्ञ हूं कि तुम्हारे आने से इस प्रकार आनन्द से मेरा समय कट जाता है। प्रभु यीशु की मां तुम्हें चिरायु करे।"

बातचीत करते समय वह अपने पति की तरह ही संजीदगी और बड़प्पन को लेकर बातचीत करती। पशु-चिकित्सक के जीने से उतरकर दरवाजे की ओट में होने पर वह कहा करती :—

"देखो ब्लाडीमीर प्लेटोनिच, अच्छा हो कि तुम अपनी पत्नी से समझौता कर लो। अपने पुत्र के लिये तुम्हें उसे क्षमा कर देना चाहिये। यह तुम अवश्य समझ लो कि तुम्हारा पुत्र अब सब समझता होगा।"

वासिली के लौट आने पर दबे स्वर में उसने उसे पशु-चिकित्सक के दुःखी पारिवारिक जीवन का हाल बतलाया। दोनों ने गहरी सांस ली, सिर हिलाया और उस बच्चे के बारे में बातचीत करने लगे जिसे अपने पिता का प्यार न मिल पाया, और इस प्रकार बातचीत

करते-करते वे क्रॉस के सम्मुख आ खड़े हुए, उसके सामने उन्होंने सिर झुकाया और प्रभु से प्रार्थना की कि वह उन्हें सन्तान दे।

इस प्रकार उनके छः साल सुख-शान्ति से और प्रेम-पूर्वक बीत गये।

ईश्वरेच्छा! सर्दियों में एक दिन दफ्तर में गरमागरम चाय पीने के बाद वासिली नंगे सिर अहाते में कुछ कामीदा लकड़ी लदाने के लिये चला गया। उसे सर्दी लग गई और वह बीमार पड़ गया। अच्छे से अच्छे डाक्टरों का प्रबन्ध होने पर भी उसकी हालत बिगड़ती ही चली गई और चार महीने बीमार रहने के बाद उसकी मृत्यु हो गई। ओलेंका एक बार फिर विधवा हो गई।

"प्रियतम! आप मुझे छोड़ गये हैं, मेरे लिये अब कोई भी नहीं रह गया", अपने पति का दाह-कर्म करने के बाद वह सिसकियां भर-भरकर रोती थी। "आपके बगैर मेरा यह अभागा और दुखी जीवन किस प्रकार बीतेगा। कितना दयनीय होगा मेरा यह निपट एकान्त जीवन!"

वह इधर-उधर घूमने जाती तो बिलकुल काले कपड़े पहन कर जाती। उसने टोप और दस्ताने पहनना सदैव के लिये छोड़ ही दिया। वह कभी ही बाहर निकलती थी, कभी जाती भी तो सन्यासिनी की तरह गिर्जे में अथवा अपने पति की कब्र पर। छः महीने पूरे गुजर जाने के बाद उसने अपने काले कपड़े उतारे और अपने कमरे की खिड़कियों के पर्दे एक ओर किये। कभी-कभी वह सुबह नौकर के साथ बाजार सौदा खरीदने के लिये जाती हुई दिखलाई पड़ती, परन्तु उसका जीवन किस प्रकार बीतता था तथा घर के अन्दर क्या चल रहा था इसका केवल अन्दाज ही लगाया

जा सकता था। लोग देखते थे कि वह पशु-चिकित्सक के साथ बगीचे में बैठ कर चाय पीती है तथा उससे समाचार-पत्र सुनती है। और भी लोगों ने उसे एक परिचित स्त्री से बातचीत करते हुए सुना था। उस सिलसिले में उसने कहा—

"हमारे कस्बे में पशु-चिकित्सक की ओर से कोई निरीक्षण नहीं होता, यही कई फैलने वाली बीमारियों का कारण है। हम प्रति दिन ही सुनते हैं कि आज अमुक दूध के कारण बीमार हो गया अथवा घोड़े व गाय से उसे बीमारी लग गई। पालतू जानवरों के स्वास्थ्य का भी उतना ही ध्यान रक्खा जाना चाहिये जितना मनुष्यों का।"

ऊपर के शब्द पशु-चिकित्सक के थे जो उसने दुहराये थे और वह उससे सहमत भी थी। यह स्पष्ट झलकता था कि वह साल भर भी बिना किसी प्रेम-सम्बन्ध के नहीं रह सकती और उसने अपना सुखमय जीवन बसर करने के लिये एक नया साथ ढूंढ लिया था। अगर ओलेंका की जगह कोई दूसरा इस प्रकार करता तो वह लोगों की टीका-टिप्पणी का विषय बन जाता, परन्तु उसके लिये किसी के मन में भी अहितकर विचार नहीं आये थे, क्योंकि उसका यह सब व्यापार लोगों को बिल्कुल स्वाभाविक दिखलाई पड़ता था। न तो उसने और न पशु-चिकित्सक ने ही अपने नवीन सम्बन्ध के बारे में किसी से कुछ कहा और इस प्रयत्न में रहे कि किस प्रकार यह दूसरों से गुप्त रखा जावे, परन्तु यह सम्भव न हो सका क्योंकि ओलेंका कोई बात अपने तक रख ही नहीं सकती थी। जब कभी पशु-चिकित्सक के यहां अतिथि आते थे तथा ओलेंका उन्हें चाय पिलाती अथवा भोजन परोसती थी तो वह पशुओं में

प्लेग, उनकी खुर और मुंह की बीमारी तथा बूचड़खानों की बातें करती। पशु-चिकित्सक बड़े सशोपंज में पड़ जाता और अतिथियों के चले जाने के बाद बांह पकड़ ओलेंका से किंचित गुस्से में कहता:—

"मैं तुमसे पहले भी कह चुका हूं कि जो विषय तुम्हारी समझ से बाहर हो उस पर इस प्रकार बातचीत मत किया करो। जब हम डाक्टरों की बातचीत चल रही हो तब तुम कृपया दखल न दिया करो। यह बड़ा बुरा मालूम होता है।"

प्रति-उत्तर में वह उसकी ओर आश्चर्य और निराशा मुखाकृति से देखती और डरते हुए उससे पूछती, "परन्तु मैं, कहो, फिर बातचीत भी किस के बारे में करूं ?"

उसके नेत्रों में आँसू आजाते। वह उससे बड़े विनीत स्वर में उसे गुस्से न होने के लिये कहती और वे फिर अपना सुखमय जीवन यापन करने लगते।

परन्तु यह सुखमय जीवन अधिक समय तक न रह सका। पशु-चिकित्सक वहां से चला गया; अपने रेजीमेण्ट के साथ जिसका तबादला कदाचित साइबेरिया में हो गया था सदैव के लिये चला गया। और ओलेंका फिर अकेली रह गई।

अब वह निपट अकेली थी। उसके पिता की मृत्यु बहुत समय पहले हो चुकी थी। वह पहले से कुछ दुर्बल भी हो गई और उसके जीवन में सादगी आगई थी। सड़क पर जो आदमी उसे चलते हुए मिलते थे वे न उसकी ओर देखते ही थे और न मुस्कराते ही जैसा कि वे पहले किया करते थे। वास्तव में उसके जीवन के श्रेष्ठतम वर्ष बीत चुके थे तथा पीछे रह गये थे और अब जीवन का एक

नव युग आरम्भ हो गया था जिसके प्रति कोई आकर्षण नहीं था। संध्या होने पर ओलेंका बरामदे में कुर्सी डालकर बैठ जाती। उसे टिवोली के बैंड की आवाज़ तथा आतिशबाजी की रोशनी दिखलाई पड़ती परन्तु वे उसे प्रभावित नहीं कर पाते थे। अपने बगीचे में उसे अब कुछ चित्ताकर्षक दिखलाई न पड़ता। विचार करने के लिये उसके पास कुछ नहीं रहा, न कोई इच्छा ही उसकी रही, रात होने पर वह सो जाती और स्वप्न में वह अपना खाली अहाता ही देख पाती। उसका खान-पान भी अब अनिच्छापूर्वक होता।

परन्तु अधिक चिन्तनीय बात यह थी कि उसके अपने कोई विचार भी नहीं थे। वह अपने आसपास वस्तुएं देखती, उनका व्यापार-कार्य समझती, परन्तु अपना कोई मत न बना पाती और इसलिये उनके बारे में क्या बातचीत की जावे यह भी उसकी समझ में न आता। ओह, कितना दयनीय है उसका जीवन जिसके अपने कोई विचार नहीं! उदाहरणार्थ कोई एक बोतल देखता है, अथवा वर्षा, अथवा मोटर में जाता हुआ एक रईस परन्तु इन सब बातों का क्या आशय है जब कोई यह नहीं बतला पाता और एक हजार रुबल लेकर भी नहीं। जब ओलेंका के साथ कुकीन, वासिली और पशु-चिकित्सक था तब वह प्रत्येक बात समझा सकती थी और अपना मत किसी भी वस्तु के बारे में दे सकती थी, परन्तु अब उसके अहाते के समान ही उसका मस्तिष्क, उसका हृदय रिक्त हो चुका था।

धीरे २ कस्बा विस्तार में बढ़ने लगा। गलियों के स्थान पर सड़कें बन गईं और जहां पहले टिवोली और कामीदा लकड़ी के गोदाम थे वहां अब नये मकान और नये रास्ते बन गये। समय

कितनी द्रुत गति से व्यतीत होता है ! ओलेंका का मकान गन्दा हो गया, छत पर काई लग गई, और एक ओर की बरामदे की छत भी पूरी तरह गिर चुकी थी। अहाते में जगह जगह पर घास खड़ा हुआ था और बर्र इधर-उधर उड़ती फिरती थीं। ओलेंका स्वयं भी बड़े साधारण तरीके से रहने लग गई थी। वह उमर में भी अब अधिक प्रतीत होती थी। ग्रीष्म में वह बरामदे में बैठी हुई दिखलाई पड़ती। उसका मन पूर्ववत ही विचार-शून्य, भयभीत और संवेदनापूर्ण था। शरद में वह खिड़की में बैठ जाती और गिरती हुई बरफ को देखती। बसन्त के आगमन के साथ अथवा जब कभी उसे गिर्जे की घण्टियां सुनाई देतीं तो बीते हुए जीवन की घटनाएं घटाटोप होकर उसके मन में आतीं, दिल में एक हल्की सी टीस उठती और आखों में आंसू झलकने लगते, परन्तु यह सब दो चार क्षण तक रहता, फिर उसका मन शून्यवत हो जाता और उसे अपने जीवन की निष्फलता मालूम होने लगती। उसका बिल्ली का बच्चा गोदी में आ बैठता, चूमता, चाटता, पर वह उसके प्यार से प्रभावित न होती। उसे इन वस्तुओं की अब आवश्यकता नहीं थी। वह उस प्यार की भूखी थी जो उसके सारे शरीर को प्रेममय बना सके, यहां तक कि उसका मन और आत्मा उससे ओतप्रोत हो जावें ताकि उसके अन्दर विचार पैदा हो जावें, उसे अपने जीवनोद्देश्य का पता लग जावे और उसकी नाड़ियों में उष्ण रक्त प्रवाहित होने लगे। वह बिल्ली के बच्चे को गोदी से उतार देती और कहती, "जा, खेल, मुझे तेरी जरूरत नहीं !"

इस प्रकार दिन पर दिन और साल पर साल बीत गये, न जीवन में सुख था और न मन में विचार। उसकी खाना पकाने

वाली मात्रा जो कहती थी उसे वह मन्जूर कर लेती थी।

जुलाई का महीना था; गर्मी पड़ रही थी; शाम के समय जब जानवर गुज़र रहे थे और सारा अहाता धूल के उड़ने से भर गया था, किसी ने अकस्मात् दरवाजा खटखटाया। ओलेंका स्वयं ही दरवाजा खोलने को पहुंची और ज्यों ही उसने बाहर झांका कि वह भौंचक्की सी रह गई। उसे पशु-चिकित्सक स्मिरनिन दिखलायी पड़ा। उसके सिर के बाल सफेद हो चुके थे और वह साधारण कपड़े पहने हुए था। एकाएक ही ओलेंका को सब स्मरण हो आया। उसके मुख से चीख निकल गई, उसका सिर पशु-चिकित्सक की छाती पर जा गिरा और वह कुछ भी न बोल सकी। अपने इस भावावेश में उसे यह भी न पता लगा कि कब वे अन्दर दाखिल हो गये और चाय के लिए जा बैठे।

"प्यारे व्लाडीमीर प्लेटोनिच! किस तरह तुम इधर भूल बैठे?" प्रेम से विह्वल होकर उसने लड़खड़ाते शब्दों में कहा।

"मैं सदैव के लिये यहीं बसना चाहता हूं, ओल्गा सेम्योनोवना" डाक्टर ने उससे कहा। "मैं नौकरी से इस्तीफा दे आया हूँ और यहां रह कर अपना काम चलाना चाहता हूँ। मेरे लड़के के भी स्कूल जाने के अब दिन आगये हैं। वह अब काफ़ी बड़ा हो गया है। तुम्हें यह तो मालूम ही हो गया होगा कि मेरा अब अपनी स्त्री से समझौता हो गया है।"

"वह आजकल कहां है?" ओलेंका ने पूछा।

"वे होटल में हैं, मैं मकान की तलाश में इधर निकल आया।"

"ओ भई! मकान की तलाश! मेरे ही मकान में क्यों नहीं आजाते? वह तुम्हारे उपयुक्त क्या नहीं है? मैं उसके लिये कोई

किराया भी नहीं लूंगी", ओलेंका ने विनम्र स्वर में कहा। वह अब रोने लग गई थी। "तुम यहीं रहो, मकान अब मुझे भी अच्छा लगने लगेगा। प्रियतम ! मुझे कितनी प्रसन्नता हो रही है !"

अगले दिन छत पर रंग हो गया; दीवारों पर सफेदी कर दी गई और ओलेंका खुशी खुशी अहाते में काम करवाने में लगी हुई थी। उसका मुख-मण्डल पूर्ववत् खिल गया और उसके शरीर में स्फूर्ति, नव शक्ति आगई थी मानों वह एक गहरी नींद के बाद उठी हो। पशु-चिकित्सक की पत्नी आगई—वह दुबली-पतली, सीधी-साधी थी। बाल उसके छोटे-छोटे थे और स्वभाव में कुछ चिड़चिड़ापन मालूम होता था। उसके साथ ही उसका छोटा सा बच्चा शशा था। उम्र उसकी दस साल की थी, परन्तु वह इतना प्रतीत नहीं होता था। उसकी आंखें नीली थीं, गालों में गहरे गढ़े पड़े हुए थे परन्तु चेहरा गोल था। बालक अभी अहाते में मुश्किल से ही आकर पहुंचा होगा कि वह बिल्ली के पीछे भागा और तत्क्षण ही कमरा उसके हास्य और शोर से गूंज उठा।

"क्या यह तुम्हारी बिल्ली है, आंटी", उसने ओलेंका से पूछा। "जब उसके बच्चे हों तो एक हमें जरूर देना। मां को चूहों से डर लगता है।"

ओलेंका उससे बातचीत में लग गई। उसने उसे चाय पीने को दी। उसका हृदय भर आया, उसमें मृदु हिलोर उठी मानों वह उसका अपना ही बच्चा हो। जब वह शाम को मेज के सामने बैठा हुआ पढ़ रहा था तो वह उसकी ओर प्रेम भरी दृष्टि से देख रही थी और साथ-साथ गुनगुनाती जाती थी।

"कितना सुन्दर है !......बेश कीमत !......इतना भोला

भाला, आकर्षक और चतुर!"

"द्वीप जमीन के उस टुकड़े को कहते हैं जो चारों ओर पानी से घिरा रहता है", शशा ने ऊंचे स्वर में पढ़ा।

"द्वीप जमीन के उस टुकड़े को कहते हैं......", ओलेंका ने दुहराया और यह उसका पहला मत था जिसे उसने बरसों के मौन और विचार-शून्यता के बाद प्रकट किया था।

अब उसके अपने विचार उदय हो गये थे जिसे वह शशा के मां-बाप के सामने खाने के समय प्रकट कर रही थी। उसका कहना था कि यद्यपि हाईस्कूल की पढ़ाई मुश्किल पड़ती है फिर भी शिल्प-शिक्षा से इसलिये अच्छी है कि आगे चलकर विद्यार्थी डाक्टरी व इंजीनियरिंग में जा सकता है।

शशा ने हाईस्कूल में जाना शुरू कर दिया। उसकी मां अपनी बहिन के पास हारकोव में चली गई और फिर वापिस न लौटी; उसका पिता प्रतिदिन पशुओं के निरीक्षण के लिये चला जाता और कई बार तीन-तीन दिन तक घर वापिस नहीं लौटता। ओलेंका को इससे यह प्रतीत होने लगा कि शशा की उचित देख-भाल नहीं हो पाती, घर में उसकी किसी को आवश्यकता भी नहीं, भर पेट उसे खाना भी नहीं मिल पाता। वह उसे अपने घर पर ले आई और वहीं उसे एक छोटा-सा कमरा रहने के लिये दे दिया।

शशा छः महीने तक उसके घर में रहा। प्रतिदिन सुबह होते ही ओलेंका उसके कमरे में आ जाती। उसे वह सिर के नीचे बांह रखे हुए एक करवट सोया हुआ पाती। उसे जगाने की उसकी तबियत भी न होती।

"शशेंका", कुछ रोती-सी शकल बनाकर वह कहती, "प्यारे

बच्चे, उठो। स्कूल जाने का समय हो गया है।"

वह उठता, नित्यकर्म से निपट कर कपड़े पहनता और फिर प्रार्थना करने के बाद नाश्ता करने बैठ जाता। वह तीन प्याली चाय, दो टुकड़े टोस्ट के और आधा पैकेट मक्खन का खाता। इतना सब कुछ निपटाने पर भी उसकी सुस्ती दूर न होती और वह कुछ कुढ़ा हुआ सा रहता।

"शशेंका, तुझे वह कहानी अच्छी तरह याद नहीं मालूम होती", ओलेंका उसकी तरफ इस प्रकार देखकर कहती मानो वह एक लम्बी यात्रा के लिये जाने वाला हो। "मुझे तेरे लिये कितनी मुसीबत उठानी पड़ती है! तुझे चाहिए खुद अच्छी तरह पढ़े और जैसा मास्टर साहब कहते हैं वह करे।"

"मेरा पीछा भी छोड़ो", शशा कहता। इसके बाद वह स्कूल के लिये रवाना हो जाता। सड़क पर एक बड़ी सी टोपी पहने, कन्धे पर बस्ता लटकाये, एक छोटी-सी मूर्ति दिखलाई पड़ती। ओलेंका चुपचाप उसके पीछे-पीछे हो लेती।

"शशेंका!" वह पीछे से बुलाती और उसके हाथ में एक छुहारा या बर्फी का टुकड़ा दे देती। जब वह उस सड़क पर पहुंच जाता जहां पर स्कूल था तो एक लम्बी-चौड़ी औरत को पीछे आती देखकर शरमा जाता। वह गर्दन मोड़ कर कहता:—

"आंटी, तुम घर लौट जाओ। मैं अकेला ही अब बाकी रास्ता काट लूंगा।"

वह चुपचाप खड़ी हो जाती और तब तक उसे देखती रहती जब तक कि वह स्कूल के फाटक में घुसकर आंखों से ओझल न हो जाता।

वह उसे कितना प्यार करती थी। उसके पहले रिश्तों में कोई भी इतना तीव्र नहीं था; इससे पूर्व कभी भी उसने अपने आपको निस्वार्थ भाव से स्वयमेव प्रसन्नतापूर्वक दूसरे के आधीन नहीं किया था जितना अब उसके वात्सल्य भावों के जाग्रत होने पर। इस छोटे से बालक के लिये जिसके गाल अन्दर घुसे हुए थे, सिर पर एक बड़ी सी टोपी रहती थी, वह अपना सारा जीवन प्रसन्नतापूर्वक न्योछावर करने के लिये तैयार थी! क्यों! इसका भला कौन उत्तर दे सकता है?

आंखों से ओझल हो जाने पर ओलेंका तृप्त और शान्त मन से प्रेम-विह्वल होकर घर लौट आती; चेहरा पिछले छः महीनों में भर गया था और वह खिला रहता था; उससे मिलने-जुलने वाले व्यक्ति अब उसे देखकर खुश होते थे।

"नमस्ते, ओल्गा सेम्योनोवना, प्यारी। कैसे हो प्यारी?"

"हाईस्कूल की पढ़ाई आजकल बड़ी सख्त हो गई है", वह बाजार में बातचीत करते हुए कहती। "कितना पढ़ना पड़ता है। प्रथम कक्षा में ही वे उसे एक कहानी रटने के लिये, लेटिन का अनुवाद, और कुछ सवाल दे देते हैं। तुम समझती ही हो एक छोटे बालक के लिये इतना करना कितना मुश्किल है।"

और वह शिक्षक, पाठ, स्कूल की पुस्तकों वगैरह की चर्चा छेड़ देती जो शशा से उसे मालूम होती।

तीन बजे शाम के वे इकट्ठे भोजन करते। उसके बाद वे दोनों अध्ययन करते और चीखते-चिल्लाते। जब वह उसे सुलाती तो काफी अर्से तक वह उसके ऊपर क्रॉस का निशान बनाकर प्रार्थना करती रहती, तत्पश्चात् वह लेट जाती और सोचने लगती

कि शशा अध्ययन समाप्त करने के बाद डाक्टर या इंजीनियर बन जाएगा, उसकी अपनी स्वयम् की फिर एक कोठी व बग्घी होगी, उसका विवाह होगा और फिर उसके बच्चे होंगे......। वह इस प्रकार सोचते-सोचते सो जाती, उसके बन्द नेत्रों से आंसू गालों पर टपक पड़ते। उसकी बिल्ली पास में लेटी हुई 'म्याऊं-म्याऊं' करती रहती।

अकस्मात् दरवाजा खटखटाने का शब्द होता।

ओलेंका घबराई हुई उठ बैठती, दिल उसका धड़कने लगता। कुछ क्षण बाद फिर खटखटाने की आवाज़ आती।

"अवश्य ही कोई हारकोव से तार लेकर आया होगा", इस विचार के साथ ही सिर से लेकर पैर तक वह कांपने लगती। "शशा की मां ने अवश्य ही उसे हारकोव बुला भेजा होगा।......हे प्रभो, मुझ पर दया करो!"

वह हतोत्साह हो जाती। उसका सिर, हाथ व पैर ठण्डे पड़ जाते, और वह अनुमान करती कि वह दुनिया की सबसे अभागिनी स्त्री है। कुछ क्षण के बाद ही फिर उसे कई मनुष्यों के बोलने का शब्द सुनाई देता। मालूम होता वह पशु-चिकित्सक है और क्लब से लौट रहा है।

"ईश्वर को धन्यवाद है", वह मन में कहती। धीरे-धीरे उसकी घबराहट दूर हो जाती और उसका चित्त शान्त हो जाता। वह शशा के बारे में सोचती हुई फिर जाकर बिस्तर पर लेट जाती।

शशा दूसरे कमरे में सोया हुआ नींद में कभी-कभी बड़बड़ाता, "मैं तुम्हें दे दूंगा! चली जाओ! चुप रहो!"

परित्यक्ता

[विल्हेल्म श्मिटबॉन्न]

प्रतिदिन ही सड़क पर जाती हुई एक औरत दिखलाई पड़ती थी। एक दिन गांव से शहर को जाती थी, दूसरे दिन वह शहर से गांव को और तीसरे दिन पहले दिन की तरह। रास्ते में तीन गांव पड़ते थे। इन तीनों गांवों के आदमी अपने बचपन से, जब वे खेतों की मुंडेरों पर बैठे खेला करते थे, उसे जानते थे। इस समय उसके बाल पक गये थे, और कमर झुक गई थी, परन्तु वह औरत उस सड़क से अब भी आती-जाती थी।

ठीक पहले की तरह वह अब भी गाड़ी के पीछे-पीछे चलती थी। गाड़ी वही पहले वाली थी और उसमें बक्से, बोरे और कबाड़ लदा रहता था। वही नीले रंग का पेटीकोट वह पहने रहती थी, जिससे आदमियों की तरह घुटने बाहर निकले रहते थे, परन्तु क़द उसका लम्बा नहीं था; एक हाथ में उसके अब भी चाबुक रहता था और दूसरे हाथ में हुक्का। वह हुक्का पीती जाती थी और सूरज की तपस के कारण झुलसे हुए मटीले मुंह से धुंआ छोड़ती जाती थी; उसकी भूरी-भूरी आँखें अब भी दांयें-बांयें खेतों को देखती चलती थीं। अब भी वह अपने टट्टू की गर्दन पर हाथ रखकर पुचकारती थी, जिसके खुरों का शब्द पक्की सड़क पर पड़ने के कारण होता था। घोड़ा, निःसन्देह, वह नहीं था। पहले जो घोड़ा था

वह सफेद रंग का था, परन्तु अब मोटा, ताज़ा, और काला घोड़ा था। वह बदन में इतना चौड़ा था कि सामने से देखने पर मामूली सी गाड़ी बाहर निकली हुई दिखलाई पड़ती थी। परन्तु वह टट्टू भी अब उम्र के कारण सख्त पड़ गया था।

खेतों में हल चलाते हुए किसान और अपने घरों के सामने बैंचों पर बैठे हुए आदमी उसे जाती हुए देखकर नमस्कार करते थे। वह बड़े शुद्ध स्वर में उत्तर देती थी और अपना चाबुक घुमाती थी, परन्तु इसके अतिरिक्त वह न कोई दूसरा शब्द निकालती थी और न क्षण भर के लिए ठहरती ही थी।

उसके चले जाने के बाद लोग कहते थे, "हमारे सामने वह मरती नहीं दिखती; जब हमारे बच्चों के भी बाल पक जावेंगे तब भी वह इसी प्रकार पैदल चलती रहेगी।" इसमें सन्देह भी क्या था। उसकी जिस आयु ने तीनों गाँवों की एक पीढ़ी को सड़क पर चलते-चलते समाप्त कर दिया था। और नई पीढ़ी उसकी जगह आगई थी, और वह भी उसके छोटे-छोटे पावों को जिन पर नालदार जूते चढ़े रहते थे थकाने में बिलकुल असमर्थ रही थी।

इसमें सन्देह नहीं कि उसकी उम्र इस समय ८० बरस से कम नहीं होगी, परन्तु शाल के अन्दर से, जो उसने ओढ़ रखा था, अब भी काफी काले बाल दिखलाई पड़ते थे।

आखिरकार वह दिन भी आगया जब सबने यह सोच लिया कि अब वह इस सड़क पर इस प्रकार चलती हुई दिखलाई नहीं देगी। यह था नया ज़माना जो नई पीढ़ी के साथ आगे बढ़ रहा था। एक दिन ढेर के ढेर मज़दूर सड़क पर दिखाई दिये। वे कुछ दिन काम करते रहे। उन्होंने सड़क के किनारे गट्टी और मिट्टी

डालकर ऊंची जगह बना दी। मजदूर चले गये, परन्तु जल्दी ही रेल की पटरियां लेकर फिर आगये। ये पटरियां उन्होंने उस सड़क से ऊंची की हुई जमीन पर बिछा दीं। उन्होंने उस बुढ़िया को सड़क से गुजरते देखकर कहा, "अब हमारी बारी आगई। तुमने अपनी इस पुरानी गाड़ी के साथ सड़क के कई चक्कर काट लिये हैं।"

बुढ़िया हंसी और उसने अपना चाबुक हवा में फटकारा, परन्तु पीछे गर्दन नहीं मोड़ी; वह सदा की तरह अपने छोटे छोटे डग भरती चली गई। परन्तु जिस दिन उसे भक-भक करता हुआ गाड़ियां खींचता इंजिन दिखलाई दिया तो उसने चाबुक हवा में न घुमाते हुए टट्टू की पीठ पर मारा। घोड़े ने पैर जल्दी जल्दी उठाने शुरू किये और गाड़ी के पहिये भी तेजी से लुढ़कने लगे, परन्तु बुढ़िया को यह देखने का अवसर भी नहीं मिला कि उसने इतनी देर में कितना फासला तय किया है कि वह भीमकाय काला देव गाड़ियां खींचता हुआ धक-धक करते हुए उसके बराबर आया, क्षण भर में काला धुआं छोड़ता हुआ आगे बढ़ा और दूसरे क्षण दूर एक छोटी सी वस्तु में बदल गया। बुढ़िया का दुबारा टट्टू के चाबुक लगाना भी व्यर्थ ही हुआ; उसने लगाम हाथ में ली, उसे झटका मारा और घोड़े के साथ आप भी दौड़ने लगी परन्तु कहां रेल और कहां घोड़ा-गाड़ी, वह एकदम पीछे रह गई। खेतों में जो लोग थे वे यह देखकर हंसने लगे, उन्होंने अपनी टोपियां ऊपर उछालीं। "आज उसका यह अन्तिम दिन है, अब वह कभी इस रास्ते पर दिखलाई नहीं देगी", लोग चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे थे। कुछ क्षण तक ऐसा प्रतीत हुआ मानों उनका कहना ठीक

निकलेगा। बुढ़िया ने टट्टू खड़ा किया, उसे पुचकार कर धीमी चाल पर डाला, सिर नीचे झुका लिया और गाड़ी के एक तरफ चलने लगी। उसने दायें-बायें देखना भी बन्द कर दिया और बजाय घोड़े की गर्दन के पास चलने के गाड़ी के पीछे चलने लगी। ऐसा प्रतीत होता था मानों वह हार गई है। अचानक ही दूसरे क्षण उसने अपना चाबुक फटकारा, घोड़े के सिर के बराबर आगई—और अगले दिन वह शहर को जाती हुई दिखलाई दी, फिर दूसरे दिन वापिस। उसकी चाल में अब भी पहली सी स्फूर्ति थी, और बदन में जोश।

उसने अपना कार्यक्रम इन नये आविष्कारों के, जो रेल की पटरी वग़ैरह के साथ-साथ राइन की उस घाटी के एकान्त स्थान में आ रहे थे, मुक़ाबिले में जारी रखा। उन नये आदमियों के बीच में जिन्होंने अपना रहन-सहन, पहनावा, खाने-पीने की आदतें सब बदल दी थीं, वह बग़ैर किसी हिचकिचाहट के उनके साथ गर्मियों में ढीली-ढाली, बरसों पुरानी, पुराने फैशन की रुई की कुड़ती और सर्दियों में पुराने जमाने का विचित्र मरदाना कोट पहन कर बैठती और शराब से डबल रोटी के टुकड़े भिगो-भिगोकर खाती थी। सड़क के दोनों ओर बड़े-बड़े दुमंजिले, तिमंजिले नये मकान खड़े हो गये थे। यहां तक कि बच्चों के बर्ताव में भी अन्तर आगया था। वे फ़ौजों में भागते फिरते थे; सेना की टुकड़ियां जहां पहले दो-तीन थीं वहां अब दस-बीस हो गईं थीं। वे उन्हें देखकर चिल्लाते थे और उनके घोड़ों को पत्थरों का निशाना बनाते थे।

इस पर भी वह बुढ़िया इस विचित्र, नई दुनिया में बढ़ती ही गई। दिन प्रति दिन उसने अपना काम जारी रखा। मुख-मण्डल

उसका प्रसन्न और सौम्य, शरीर में उसके स्फूर्ति, और नेत्रों में दीप्ति थी। वह ऐसी प्रतीत होती थी मानों प्रकृति का ही एक अंश हो, मानों उस सड़क से इस प्रकार अभिन्न हो जिस प्रकार वर्षा की बूंदें और सूर्य की किरणें जो उस सड़क पर पड़ती थीं। उसे इस बात की भी चिन्ता नहीं थी कि उसकी गाड़ी का बोझ पहले से अब आधा रह गया है क्योंकि आधा अब रेल ने ले लिया था। जो कुछ था वह भी अब घट रहा था। यह जानते हुए कि गाड़ी का बोझ अब बहुत कम हो चुका था उसने गाड़ी पर सवार होकर चलना आवश्यक नहीं समझा। वह सदैव की तरह गाड़ी के किनारे से चलती थी, और कदाचित् इस प्रकार के नियमित व्यायाम में उसे आनन्द आता था। रेलगाड़ी उसके सामने से प्रतिदिन गुज़रती थी परन्तु वह कभी उस ओर नहीं देखती थी। वह लगातार दृष्टि अपने सामने रखती थी और अपने हुक्के से जोर-जोर से धुंवा उड़ाना शुरू कर देती थी। साथ ही वह घोड़े से बातचीत करती जाती थी, जो अपने नथुने फुला कर उसकी बात को सुनता मालूम होता था। घोड़े के अतिरिक्त और किसी दूसरे को उसका स्वर सुनाई नहीं देता था, परन्तु उसके चाबुक चलाने के ढंग से, उसके नालदार जूतों के सड़क पर पड़ने के शब्द से और उसकी आंखों की सामने लगी हुई टकटकी से यह सहज ही अनुमान लगया जा सकता था कि वह उस काले धुंवादार दानव से जो उसकी रोजी और जीवन तक को भी छीनता जारहा है लड़ती ही चली जावेगी, और यह भी प्रतीत होता था कि उसने कहीं मन के किसी कोने में अपनी निधि गाड़ रखी है जिससे वह शक्ति और आनन्द प्राप्त करती है। ऐसा प्रतीत होता था मानों वह किसी अवसर की

खोज में है और उसके आने पर वह हारी हुई बाजी को जीत लेगी, और साथ ही वह साबित कर देगी कि उसकी गाड़ी एंजिन से बढ़िया है—किसी प्रकार भी कमज़ोर और घटिया नहीं है।

इस प्रकार शरद ऋतु आगई।

एक दिन शाम के समय वह शहर की आखिरी सराय के सामने खड़ी हुई अपनी गाड़ी पर सामान बांध रही थी। उसकी गाड़ी पर एक पलंग, एक मेज और कुछ कुर्सियां लदी हुई थीं जिन्हें उसने त्रिपाल से ढक कर मजबूती से कस दिया था। यह सामान सुबह ही विवाह-बन्धन में बंधने वाले दम्पति के घर के लिये था।

"क्यों? क्या तुम आज ही रात में वापिस लौट रही हो?", दरवाजे में फैल कर खड़े हुए सराय के मालिक ने कहा।

"अवश्य। मैंने वचन दिया हुआ है। मुझे अपनी लालटेन दे दो।"

सराय वाले ने ऊपर को निगाह उठाकर आसमान की ओर देखा।

"रात में बरफ अवश्य गिरेगी।"

"इससे क्या?", नीचे देखते हुए ही बुढ़िया ने जवाब दिया। वह घोड़े पर से झूल उठा रही थी। "मैंने न जाने कितनी बार अपने जीवन में इस प्रकार बरफ़ पड़ते देखी है।"

"अच्छा हो कि तुम रात को यहीं ठहर जाओ।"

"नहीं भई, मैंने वचन दे रखा है। ये वस्तुएं आज रात में वहां पहुँच ही जानी चाहियें।"

उसने अपना हुक्का तैयार किया और गाड़ी में से चाबुक खींचकर हाथ में ले लिया।

एक नौकरानी शहर से भागी-भागी उसके पास आई।

"साहब ने कहा है कि रात में चूंकि बरफ़ गिरेगी, इस लिए तुम सामान सुबह नहीं पहुंचा सकोगी। तुम्हें यह सब सामान यहीं खाली करना होगा। वह रेलगाड़ी से भेज दिया जायगा।"

बुढ़िया ने लड़की की ओर आंख उठाकर देखा। वह अपने जूते का फ़ीता पहिये पर पैर रखकर बांध रही थी। धीरे-धीरे उसने निगाह इस ओर फेरी।

"नहीं, ले जाने के लिये मुझे यह सामान सौंपा गया है। वह गाड़ी में कसा जा चुका है और अब खाली नहीं किया जा सकता। मैं उसे वहां पहुँचा कर ही रहूंगी।"

"अच्छा यही होगा कि तुम सामान उतार लो", सराय के मालिक ने कहा। "तुम इतनी बरफ़ में नहीं चल सकोगी। रेलगाड़ी से ही इस सामान को जाने दो।"

"यह कैसे हो सकता है? मैं इस सामान को अवश्य वहां पहुँचाकर रहूंगी.........और वह भी रेल से पहले।"

"तुम यह किस हिसाब से कहती हो?"

"अभी रेल के छूटने को चार घण्टे बाकी हैं और मैं वहां पहुंचने में कुल तीन घण्टे लूंगी।" उसने अपना चाबुक घुमाया। 'चलो' कहते ही गाड़ी आगे बढ़ने लगी। बुढ़िया का चेहरा जो पहले साधारणतः विनम्र और किंचित् उदास रहता था अब उसके स्वामी और पांच बच्चों के मरने के कारण कठोर हो गया था। चेहरे पर बड़ी-बड़ी झुर्रियां पड़ गई थीं और हड्डियां ही चेहरे पर अधिक नज़र आती थीं।

सराय से कुछ दूर जाने पर ही चढ़ाई शुरू हो गई। सड़क की

बाईं ओर ढलान में चरागाहें थीं जिनके आगे जाकर जंगल शुरू हो जाता था। उसके दाहिनी ओर आलुओं के खेत थे जिनके पीछे पहाड़ी पर क्रुज़बर्ग का गिरजाघर दिखलाई पड़ता था।

बुढ़िया प्रतिदिन से कुछ तेज़ ही चल रही थी। वह धीरे-धीरे गाती जाती थी, परन्तु हवा के भारी हो जाने के कारण अब उसका स्वर धीमा पड़ गया था, क्योंकि सांस लेना तक मुश्किल हो गया था। मुंह से जो वह सांस निकालती थी वह बजाय हवा में जाने के वहीं धुंवे के रूप में बदल जाता था। उसके चाबुक का दस्ता भी इतना भीग चुका था कि मानों अभी-अभी पानी में भिगोकर निकाला गया हो। इतने समय में जो कि गाड़ी ने नीची-नीची पहाड़ियों पर चढ़ने में बिताया था उस पर हज़ारों बूंदें दिखलाई देने लग गई थीं। यह उनके बादलों में से होकर गुज़रने के कारण था।

"इससे तो यह समझना चाहिये कि पानी पड़ेगा, न कि बरफ़," बुढ़िया ने आदतवश ज़ोर से कहा। परन्तु उससे कोई यह अन्दाज़ा न लगा पाता था कि वह अपने आपको सम्बोधन करके कह रही है अथवा अपने घोड़े को। घोड़ा चूंकि इस समय चढ़ाई के बाद विश्राम ले रहा था उसने शहर की ओर गर्दन फेर कर देखा। वह इस शहर को उस काल से जानती थी जब इसमें कहीं इनेगिने ३ व ४ गुम्बद सफेद मकानों से निकले हुए दिखलाई पड़ते थे—अब तो सैंकड़ों ही गुम्बद नज़र आते थे। रेल के स्टेशन की तरफ़ बुढ़िया आंखें फाड़-फाड़ कर देखती थी, उसे देखने के लिये उसको ढूंढ़ना नहीं पड़ता था। जब वह वहां खड़ी होती थी तो उसे रेल का स्टेशन अपने आप ही दिखलाई पड़ जाता था। इसके बाद

उसकी निगाह मकानों के उस पार राइन पर पड़ती थी, जिसने ऐसा मालूम होता था, मानों खेतों को एक धागे में पिरो रक्खा है। नदी पर और उसके आसपास धुंवा ही धुंवा नज़र आता था, हर एक जगह चिमनियां और मशीनें दिखाई देती थीं। जहां देखो वहां उसे नई, विचित्र और हलचलमय ज़िन्दगी दिखलाई पड़ती थी। वहां पर नीचे कभी मल्लाह छाती पर चमड़े की पेटी बांधकर पानी के चढ़ाव की ओर किश्तियां खेते थे; सड़कों पर से अन्य औरतों की गाड़ियां चलनी भी कभी की बन्द हो चुकी थीं, केवल वह अकेली अब इस सड़क पर चलने वाली शेष रह गई थी। शहर में बत्तियां जलने लग गई थीं। स्टेशन से एंजिनों की लम्बी रोशनी उसे दिखलाई पड़ी। उसने सोचा जब ये ही हमेशा इधर उधर घूमते रहते हैं और थोड़े समय के लिये ही केवल ठहरते हैं तो फिर उसे ही क्यों अधिक ठहरना चाहिये। "अच्छा," उसने कहा, "जब शहर की बत्तियां ही जल पड़ीं तो फिर मैं अपनी लालटेन ही क्यों न जला लूं।" उसने लालटेन जलाई और आगे ऐसे स्थान पर रख दी कि जहां से सामने सड़क पर रोशनी पड़ सके।

उसे अकस्मात् आसमान गहरा और पीले रंग का होता हुआ दिखाई पड़ा। उसी समय हवा का एक ठण्डा झोंका आया और वह उसके कपड़ों को चीरता हुआ अन्दर घुस गया। "बरफ़ गिरने का समय आगया", उसने कहा और घोड़े के साथ-साथ चलकर उसने समझा कर कहा कि आज उसे अपनी चाल तेज़ रखनी होगी।

चूंकि अब चढ़ाव समाप्त हो गया था इसलिये घोड़ा जल्दी-जल्दी आगे बढ़ने लगा। घोड़े के खुरों की टाप, बुढ़िया के पैरों का शब्द, और पहियों की चर्र-चर्र ने बुढ़िया के अन्दर आनन्द की

एक लहर भर दी। उसने अपना चाबुक ऊपर उठाया और अपने दायें और बायें को कई बार घुमाया। धरती यहां पर कहीं ऊंची हो जाती थी और कहीं नीची, मानों समुद्र में लहरें आती हों; वृक्ष वहां पर ऐसे मालूम होते थे मानों जहाज तैरते हों।

"बरफ़ पड़ने ही वाली है," पहले गांव वालों ने उसे पुकारकर कहा।

वह ठहरी नहीं, चलती ही चली गई। खिड़कियों के अन्दर से प्रकाश बाहर आ रहा था।

बुढ़िया को अन्तिम घर पीछे छोड़कर मैदान में आने पर, यह अवश्य विदित हो गया कि रात्रि कितनी शीघ्रता से बढ़ी चली आ रही है। केवल आसपास ही झाड़ियां वगैरह दिखलायी पड़ रही थीं। दूर घना काला आसमान दृष्टिगोचर हो रहा था। औसत से हर एक वस्तु बड़ी दिखलाई पड़ती थी क्योंकि वस्तुओं का घेरा घनी हवा में छिप जाता था। कभी-कभी कोई झाड़ी उसके साथ और उसकी गाड़ी के साथ-साथ चलती दिखलाई पड़ती थी; जब वह खड़ी होकर टकटकी लगाकर उसकी ओर देखती थी तब वह खड़ी हो जाती थी, परन्तु ज्योंही वह फिर चलने लगती वह भी साथ-साथ चलने लगती।

"बरफ़ पड़ने ही वाली है। बहतर यही होगा कि तुम यहां पर ठहर जाओ," दूसरे गांव वालों ने चिल्लाकर कहा। उनके चेहरे और हाथ कोहरा जम जाने के कारण सफेद दिखलाई पड़ रहे थे। वे जल्दी-जल्दी गाड़ियां और औजार झोपड़ों में लाने में जुटे हुए थे। तेज़ रफ़्तार से घर को आती हुई गाड़ियां बुढ़िया के घोड़े के पास से होकर गुज़र रही थीं। कुत्ते भी घरों में पहुंच चुके थे और

गाड़ी की आवाज़ सुनकर दबे हुए स्वर में भोंकते थे। जब कभी कोई उन खिड़कियों में से जिनसे रोशनी बाहर आ रही थी अन्दर झाँकता था तो उसे बाप, मां और बच्चे चुपचाप लैम्प की ओर दृष्टि गड़ाये हुए बैठे दिखलाई पड़ते थे।

ज्यों ही बुढ़िया खुले स्थान में आई तो खेतों में सब जगह उसे अन्धकार ही अन्धकार नज़र आने लगा। न कोई झाड़ी दिखलाई पड़ती थी और न कोई वृक्ष। जो थोड़ा-बहुत कुछ दिखाई भी देता था वह लालटेन की रोशनी में गाड़ी का ढांचा, घोड़े की पीठ, दायें और बायें की सड़क का कुछ हिस्सा, घोड़े के खुरों के टूटे हुए नाल और लीद वगैरह ही दीखते थे। उसे अपने शरीर का नीचे का हिस्सा भी अब नहीं दिखाई देता था। अगर उसे अपना हाथ भी देखना होता था तो उसे उठाकर चेहरे तक लाना पड़ता था। परन्तु वह बड़े जोरों से खिलखिलाकर हंस रही थी, साथ में गुनगुनाती भी जाती थी और जोर के साथ चाबुक भी हिलाती जाती थी। कदम बढ़ाने के साथ ही वह घोड़े को पुचकारती भी जाती थी। उसके चलने से ऐसा मालूम होता था मानो किसी युवा स्त्री के कदम पड़ रहे हों।

सामने से एक और गाड़ी आ रही थी। "हैं! क्या यह बुढ़िया है?" कोचवान ने चिल्लाकर कहा। वह गाड़ी के साथ-साथ बगल से चल रहा था। उसने कॉलर ऊपर उठा रखा था और हाथ अपनी जेब में डाले हुए थे। "क्या तुम्हारा दिमाग़ खराब हो गया है? और तो और बरफ़ तो इस समय भी पड़ रही है। ऐसे समय में तुम जंगल में क्या कर रही हो?"

ज्यों ही घोड़े एक दूसरे के पास आये उस आदमी ने बुढ़िया को

वापिस फेरने के लिये उसका हाथ पकड़ कर खींचा, परन्तु वह उसकी तरफ हंसकर रह गई और आगे बढ़ गई ।

शीघ्र ही उस गाड़ी की आवाज़ सुनाई देनी भी बन्द हो गई, आसपास केवल सड़क के किनारे लगे हुए तार के खम्भों का हमेशा होने वाला नाद सुनाई पड़ रहा था ।

वह जंगल में पहुंच गई । जंगल में जो अन्धकार उस रात्रि में छाया हुआ था, उससे अधिक कल्पना में भी नहीं लाया जा सकता था ।

बुढ़िया निडर होकर उस बियाबान जंगल में बढ़ती चली गई । उसने घोड़े के सामने रोशनी करने के लिये लालटेन हाथ में ले ली । अकस्मात् ही उसे सफेद-सफेद कपास के फाये सरीखे उड़ते हुए दिखलाई पड़े । रोशनी में उसने उन्हें धीरे-धीरे करके जमीन पर पड़ते देखा । उसने रोशनी पहले अपने कपड़ों पर डाली, बाद में घोड़े पर और अन्त में ज़मीन पर डाली । उसे सब ही स्थानों पर बरफ़ पिघलती दिखलाई पड़ी । वह तिरस्कारसूचक स्वर में हंसी । "नहीं, यह बरफ़ नहीं है । यह तो केवल पानी है ।"

लालटेन उसने अब भी हाथ में ही ले रखी थी । बरफ़ अब और भी घनी पड़ने लग गई थी । जहां भी वह लालटेन की रोशनी डालती थी वहीं उसे ज़मीन सफेद दिखाई देती थी । चलते समय उसके बूटों की आवाज़ भी अब दबी हुई आने लग गई थी; एड़ियों में बरफ़ के टुकड़े चिपकने के कारण उसके पैर अब भारी पड़ रहे थे । सांस के साथ उसे चीड़ वगैरह के वृक्षों की खुशबू आती थी परन्तु वृक्षों का कहीं उसे नामोनिशां भी नज़र नहीं आता था । वह खुशबू तरी के कारण और भी बढ़ गई थी । वह अपना चाबुक और

भी जोश के साथ हिलाने लग गई थी। मानो उस महक ने उस पर अपना प्रभाव डाल दिया हो। परन्तु इस जोश का असर अधिक देर तक न रह सका। एक तो चाबुक भीगा हुआ होने के कारण और दूसरे बरफ़ की तेजी बढ़ने के कारण वह हवा भी न चीर सका।

कुछ समय से घोड़ा गर्दन हिलाकर चल रहा था, क्योंकि बरफ़ उसकी आंखों में आकर पड़ती थी। अकस्मात् ही वह गर्दन बुढ़िया की ओर फेरकर ठहर गया। "बढ़ो, चलते चलो!" बुढ़िया ने उत्साह-वर्धक शब्दों में उसकी गर्दन पर हाथ फेरते हुए कहा, और घोड़ा एक बार फिर आगे बढ़ने लगा।

जमीन पर पड़ी हुई बरफ़ अभी नरम ही थी। बुढ़िया जो भी पैर जमीन पर रखती थी वह ही बरफ़ में गिट्टे तक धंस जाता था और उसे ताकत के साथ बाहर खींचना पड़ता था। वह सड़क के एक ओर चलने लगी और उसने ऊपर वृक्षों पर रोशनी डाली, वृक्षों की टहनियां सब नंगी नज़र आती थीं। सड़क के किनारे के वृक्षों को ग़ौर के साथ देखने पर उसे पता लग गया कि वह अभी जंगल के बीच में न पहुंच कर उसके पहले सिरे पर ही है।

उसने, गाड़ी के रोकने के लिये पहियों के पास जो लकड़ी के ब्रेक लगे हुए थे, उन्हें हटाकर और भी दूर कर दिया, परन्तु बरफ़ इस पर भी उनके अन्दर पहुँच कर रुकावट पैदा करने लगी, जिसके कारण पहिये घूमने के बजाय घिसटने लगे।

लगातार उसे अपने मुख से बरफ़ पोंछनी पड़ती थी। हर एक कदम के साथ उसके बूट नीचे धंस जाते थे, बरफ़ उसके पैर और बूट के बीच में भी घुसने लगी और ज्यों ही वह गिट्टे पर जोर देकर

पैर बाहर खींचती थीं कि बरफ़ की रगड़ उसके पैर में ऐसे लगती थी मानों उसका पैर पत्थर के टुकड़ों के साथ रगड़ खा रहा हो।

एक बार घोड़ा फिर चुपचाप खड़ा हो गया। बुढ़िया ने लालटेन की रोशनी घोड़े पर डाली। उसकी पीठ पर से परनालों की शकल में पानी बह रहा था। उसने लालटेन आगे गाड़ी पर कसकर बांध दी और आप गाड़ी को पीछे से ढकेलने लग गई। घोड़े को हांकने के लिये वह साथ में शोर भी करती जा रही थी। इस प्रकार वे आगे बढ़ने लगे।

सांस लेने के लिये उसे अपना मुंह भी खुला रखना पड़ा। उसके मुंह में बार बार बरफ़ जोर के साथ आकर भर जाती थी, मानों कोई ढेले फेंक कर मार रहा हो। उसके शाल पर; उसके कन्धों पर और उसके हाथों पर बरफ़ के छोटे-छोटे ढेर लग गये थे। उसने गाड़ी को ढकेलना जारी रखा। फलस्वरूप पहले उसकी छाती में दर्द शुरू हुआ, और धीरे-धीरे सारे शरीर में फैल गया। अपनी बरफ़ में गड़ी हुई टांगों को खींचने के लिये उसे अपनी सारी शक्ति लगानी पड़ती थी। वे अब लड़खड़ाने लग गई थीं। उसकी बाहें जो गाड़ी को ढकेल रही थीं लकड़ी की तरह सख्त पड़ गई थीं और उसकी कलाइयां दर्द करने लग गई थीं।

बुढ़िया ने बरफ़ को बोलना शुरू किया। पहले उसकी खिल्ली उड़ाई, बाद को उसे गालियां देना शुरू किया, उसने उस पर थूका, फिर उसने घूंसे मारे। उसके लिये वह एक जीवित वस्तु थी, जिसे उसके दुश्मनों ने अर्थात् रेल के अधिकारियों ने उसे रोकने के लिये भेजा था।

अपनी मुसीबतों के लिये वह परेशान न थी बल्कि उसे घोड़े की

मुसीबतों का रह रह कर विचार आ रहा था। बरफ़ के कारण अपने बैठे हुए गले से वह धीमे परन्तु भारी स्वर में घोड़े को सम्बोधित कर कह रही थीः—

"पीटर, बुद्धिमत्ता से काम लो। तुम जानते ही हो कि हमें रेल के पहुंचने से पहले वहां पहुँच जाना चाहिये। हमने वचन दिया है, क्यों याद है न तुम्हें? अगर रेलगाड़ी अकेली यह काम कर सकती है तो हम दोनों क्यों नहीं? पीटर, तुम कितने अच्छे हो! बढ़ते चलो।"

इससे अधिक वह और कुछ न बोल सकी। उसके गले से शब्द अब नहीं निकल पाता था, केवल कराहने की आवाज़ आरही थी। अक्सर उसे प्रतीत होता था मानों उसका थका, टूटा और हारा हुआ शरीर उससे अलग होकर बरफ़ में ही गड़ा रह जाना चाहता है। परन्तु गाड़ी से अपनी छाती अड़ाकर वह ढकेलती ही चली गई।

गाड़ी के पहिये सड़क के किनारे पर इतने बढ़ गये थे कि हवा से उड़ता हुआ उसका कोट किसी सख्त चीज़ से छुआ। इसका आभास उसे हुआ और पहचानने पर उसे मालूम हुआ कि जंगल के सिरे पर लगा हुआ एक प्राचीन खम्भ था।

'यह लो पीटर—अब हम घर आ पहुँचे।'

अकस्मात् बुढ़िया को यह अनुभव हुआ मानों कोई उसके साथ साथ आ रहा है। वह अन्धकार में न तो उसे देख ही पाती थी और न उसकी आहट बरफ़ में सुन ही पाती थी। डर के मारे वह गाड़ी के साथ ज़ोर से चिपक गई और उस ओर मुख फेरा जिधर उसे किसी अज्ञात व्यक्ति के साथ-साथ चलने का आभास होता था।

उसने अपनी भुजाएं उधर बढ़ाईं, परन्तु सिवाय हवा के और कुछ न पकड़ सकी। उसे अपने आप पर हंसी आगई। इन सब के होते हुए भी उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उसकी छाती किसी भारी बोझ से दबी जा रही है और जो थोड़ी-बहुत हवा बरफ़ में होकर उसके अन्दर पहुंचती है यह भी कोई और बांट लेता है। उसे ऐसा जान पड़ा जैसे कुछ पहले उसके एक कन्धे पर आकर गिरा और फिर दूसरे पर; वे सिवाय इसके कि किसी के दो हाथ उसके कन्धों पर आकर पड़े हों और हो भी क्या सकता है? उसका सारा शरीर थर-थर कांपने लगा; उसने गाड़ी छोड़ दी; वह झपट कर आगे बढ़ी और उसने घोड़े को छूना चाहा, केवल यह जानने के लिये कि कोई जान-पहचान की जीवित वस्तु उसके पास है भी या नहीं। घोड़ा अपनी धीमी चाल से चल रहा था। उसे ऐसा मालूम होता था मानों मुसीबत का पहाड़ अब टल चुका है और घर अनक़रीब आगया है। बुढ़िया को वह अज्ञात व्यक्ति फिर पास में प्रतीत होने लगा। उसे साफ़ साफ़ यह मालूम होने लगा कि वे हाथ जो पहले उसके कन्धों पर पड़े थे वे अब नीचे उतर रहे हैं और वे सारे शरीर को जकड़ते जा रहे हैं। फलस्वरूप वह अब न खड़ी हो सकेगी और न अपनी टांगें ही हिला सकेगी।

वह बांई ओर अन्धकार में आंखें फाड़-फाड़ कर देखने लगी, पीछे गर्दन फेरने का उसे साहस न हुआ। वह बरफ़ की तरह जम रही थी; उसे ऐसा मालूम होता था मानों उसके दिल पर एक बड़ा पत्थर का टुकड़ा रख दिया गया है और वह धीरे-धीरे आकार में बढ़कर नीचे की ओर फैलता जा रहा है और कुछ समय में उसके सारे शरीर को दबोच लेगा। बड़ी हिम्मत बांधकर उसने अपने

ओंठ खोले और चिल्लाकर कहा, "कौन है ?"

परन्तु उसके आसपास कुछ था ही नहीं। तार के खम्भों और तारों की हमेशा होने वाली झन-झन की आवाज़ भी बरफ़ के शोर में दब चुकी थी। ओह, यह कैसा पागलपन! वह इतनी मूर्ख कैसे बनी ? यह तो केवल कल्पनामात्र थी, यह वह अच्छी तरह जानती थी; उसके आसपास कोई भी न था; वह तो उसके शरीर के अन्दर था—वही भारी बोझ। उसकी ओर से बोलने की आदत अब जाती रही थी; वह केवल अपने भय को मूर्त रूप देने के लिये थोड़े-थोड़े ओंठ शीघ्रता से हिला रही थी।

उसे अब एक आवाज़ भी सुनाई दी जैसे कोई उसके कोट से बरफ़ झाड़ रहा था। उसने चिल्लाना चाहा, परन्तु गले से उसके कोई शब्द न निकला। अपनी सम्पूर्ण शक्ति एकत्रित करते हुए उसने अपना चाबुक तलाश किया, उसे उठाया, और ज़ोर के साथ बांई ओर दे मारा।

अकस्मात् सारे शरीर में उसे पसीना आगया। भला इसका क्या कारण ? स्पष्ट शब्दों में उसने क्रोधपूर्ण स्वर सुना, "शैतान, इस बरफ़ को यहां से हटा।"

अपनी बची-खुची सारी शक्ति समेट कर उसने भारी बोझ को एक तरफ़ फेंका और लालटेन को दांयें, बांयें और पीछे को घुमाकर देखा। उसे घास सड़क के किनारे पर लगा हुआ दिखाई दिया। उसे खाइयां और उसके आगे खुला मैदान बरफ़ से ढका हुआ दिखलाई पड़ा; न कोई झाड़ी नज़र आती थी और न कोई वृक्ष, वह जंगल से निकल चुकी थी; जंगल अब पीछे छूट चुका था; अब उसे पहाड़ी से नीचे उतरना शेष रहा था, और उसके

बाद बस उसका घर था—अर्थात् रेल से पूर्व। उसने एक बार फिर लालटेन आगे हांकने वाली जगह पर रख दी और सामने धुंधलेपन में से मन्द मन्द प्रकाश आता हुआ उसे दिखाई दिया। यह तीसरा गांव था जिसके मकान सड़क के पिछवाड़े में थे।

परन्तु उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानों वह उस आनन्द में हिस्सा नहीं बंटा सकती। भारी बोझ फिर उसके ऊपर आगया, वह उसे हटा नहीं सकी, वह वज़न में और भी बढ़ गया। उसका चेहरा मुर्झा गया। उसे स्पष्ट दीखने लगा, वह भली प्रकार समझ गई कि किसी वस्तु ने उसे आ घेरा है—यह वही वस्तु थी जो उसकी मां के पास भी आई थी। उसके सामने मृत्यु मुंह बाये खड़ी थी। जिस शक्ति को पहले वह गाड़ी के ढकेलने में लगा रही थी अब बिल्कुल नष्ट हो चुकी थी। वह अब आगे नहीं बढ़ सकी; उसके लिये अब वहीं लेटना और मरना बदा था। बरफ़ के ऊपर तो वह बाज़ी मार ले गई थी परन्तु अब जिस चीज का उसे सामान करना था वह उससे बहुत शक्तिशाली थी, वह उस पर काबू नहीं पा सकी, उसे संग्राम से हटना ही पड़ेगा, वह अपने वचनों पर दृढ़ नहीं रह सकी—उसका शत्रु, एंजिन अब उससे पहले वहां पहुंच जायेगा।

वह गाड़ी के नज़दीक बरफ़ में गिर पड़ी और शान्त लेट गई।

परन्तु घोड़ा! उसने अपनी गर्दन उठाई, हिनहिनाया, और पूंछ हिलाते हुए तेज़ी के साथ आगे बढ़ने लगा। घोड़े को, मालूम होता था, अस्तबल की गन्ध आगई थी। जब बुढ़िया हारकर बैठ गई, घोड़े ने कदम बढ़ाया। लगातार हिनहिनाते हुए वह अपनी गर्दन ऊपर-नीचे करता रहा मानों वह बुढ़िया को अपने पास बुला

रहा हो।

घोड़े के इस प्रयत्न पर बुढ़िया पहले उठकर बैठी, और फिर उसने अपने वज़नी पैरों के सहारे से धीरे-धीरे आगे बढ़कर गाड़ी को पकड़ लिया। वह गाड़ी के साथ लटक गई, और धीरे-धीरे हाथों और घुटनों के सहारे कुर्सियों वगैरह को पार करती हुई लालटेन के पास पहुंच कर कोचवान की जगह से बरफ़ हटाकर बैठ गई। उसने शाल मज़बूती से अपने सिर पर कस लिया, चाबुक को अपने अकड़े हुए हाथ में ले लिया और वहां जम कर बैठ गई। गाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ती गई।

"पीटर, तू ठीक कहता है, मैं अभी नहीं मरूंगी। पीटर, चलता चल; हम अवश्य ही वहां पर पहले पहुंचेंगे।"

उसने अपनी गर्दन सारस की तरह बाहर निकाल ली। वह बरफ़ में से चिल्लाती जाती थी, "बढ़ते चलो, पीटर, बढ़ते चलो", और घोड़ा कदम आगे बढ़ाता जाता और हिनहिनाता जाता था।

अन्तिम गांव के सराय वाले को ऐसा मालूम हुआ कि बाहर से कोई आवाज आई है। वह लैम्प के पास बैठे हुए अपने महमानों को वहीं छोड़कर मेज पर से उठा और बाहर सड़क पर पहुंच गया।

वास्तव में वहां एक गाड़ी खड़ी थी। "ओह! तुम? क्या सचमुच वापिस आ पहुँची?"

छोटे कद का आदमी होने के कारण उसने पायदान पर पैर रखा और बरफ़ से ढकी हुई लालटेन को हाथ में उठाकर उसके सामने किया; वहां सिवाय बरफ़ के ढेर के और कुछ था ही नहीं। अवश्य, नीचे की ओर नीले कपड़े का एक टुकड़ा दिखलाई दे रहा

था। सराय के मालिक ने बरफ़ हाथ से एक ओर हटाई और बुढ़िया के पञ्जरवत् मुख को, जो पहले कभी भूरे रंग का हुआ करता था, परन्तु अब बरफ़ की तरह सफेद रंग का हो गया था, छुआ।

वह औरत की तरह जोर से चिल्लाया और नीचे उतरकर खिड़की से जा टकराया।

दूर से रेलगाड़ी की घर्र-घर्र की आवाज़ सुनाई दी। वह बड़ी तेज़ी से भागी चली आ रही थी ताकि समय पर वहां पहुँच सके। ज्यों ही एंजिन घरों के पास से गुज़रा उसने जोर के साथ सीटी मारी, मानों वह बुढ़िया की गाड़ी अपने से पहले वहां पाकर गुस्से में भर गया हो, और स्वयं बड़ी देर से वहां पहुँचा हो।

खान और उसका बेटा

[मैक्सिम गोर्की]

कई वर्ष व्यतीत हुए जब क्रीमिया में असरब नाम का एक खान रहता था। उसके एक बेटा था। जिसका नाम था अलगाला।

एक अन्धे तातारी भिखारी ने इन शब्दों में अपनी कहानी आरम्भ की। प्रायद्वीप में ऐसी कई दन्त-कथाएं प्रचलित हैं, जिनमें असंख्यों अतीत की स्मृतियां वर्तमान हैं। वह अन्धा भिखारी भूरे रंग के एक वृक्ष के चमकते हुए तने का सहारा लेकर बैठा हुआ था, उसके चारों ओर और कई तातारी बैठे थे। उन्होंने काले रंग की चमकती हुई वास्कटें पहन रखी थीं और सिर पर उनके टोपियां थीं, जिन पर ज़रदोज़ी का काम किया हुआ था। जहां पर वे बैठे हुए थे वह स्थान ऊबड़-खाबड़ प्रतीत होता था। कदाचित् किसी खान के महल के ध्वंसावशेष थे। सन्ध्या का समय था, सूर्यदेव अस्ताचल की ओर जा रहे थे, उनकी लोहित किरणें खण्हरों के आसपास उगे हुए वृक्षों में से छन छनकर आरही थीं और काई-आच्छादित शिलाओं पर पड़ रही थीं। हवा बड़े-बड़े वृक्षों की शाखाओं और पत्तियों में झनझनाहट पैदा कर रही थी, मानों आकाश में अदृश्य झरने झरते हों। वृद्ध भिखारी

की आवाज धीमी और लड़खड़ाती हुई थी, उसका मुख-मण्डल कुछ कठोर प्रतीत होता था, परन्तु उस पर पड़ी हुई झुर्रियों से शान्ति के अलावा और कोई भाव अङ्कित नहीं होता था। कहानी कहने के ढङ्ग से यह सहज में ही जाना जा सकता था कि उसका प्रत्येक शब्द उसकी जिह्वा पर वर्तमान है। वह अपने श्रोताओं के सम्मुख अतीत जीवन का समा बांध रहा था, जिसमें भावुकता का प्राधान्य था।

उस अन्धे ने कहा—खान वृद्ध अवश्य था, परन्तु उसके हरम में कई युवतियां थीं। वे उस वृद्ध से प्रेम करती थीं। कारण यह था कि उसके शरीर में अब भी काफी बल और स्फूर्ति तथा उत्साह था। उसके चुम्बन मधुर परन्तु बड़े मादक होते थे। स्त्रियों का यह स्वभाव है कि वे उसी से प्रेम करती हैं, जिसके आलिंगन में शक्ति है, चाहे उसके केश श्वेत क्यों न हो चुके हों और उसके चेहरे पर झुर्रियां क्यों न पड़ चुकी हों। स्त्रियों के आकर्षण के लिये पौरुष की आवश्यकता होती है, कोमल त्वचा व लाल कपोलों की नहीं।

वे सब खान से प्रेम करती थीं, परन्तु वह एक कज्जाक से बन्दिनी बनाकर लाई गई बालिका की ओर अधिक झुका हुआ था, जिसे वह नीपर के मैदानों से पकड़ लाया था। हरम की अन्य स्त्रियों की अपेक्षा, जो संख्या में ३०० से भी अधिक थीं और भिन्न-भिन्न देशों की थीं, वह इसको ही अधिक चाहता था। बसन्त के पुष्पों के समान वे सब सुन्दर और आकर्षक थीं। वे आमोद-प्रमोदमय जीवन व्यतीत कर रही थीं। खान उनकी इच्छानुसार भोजन और मिष्टान्न बनवा दिया करता था और उनके खेल-कूद

और नाच में कभी कोई रुकावट नहीं डालता था।

कज़्ज़ाक-बालिका को खान अपने महल की उच्च अट्टालिका में बुला लिया करता था। उस अट्टालिका से लहराता हुआ सागर दिखलाई पड़ता था। वह स्थान उस सब साज-सामान से सुसज्जित था जो एक स्त्री के जीवन को आमोद-प्रमोदमय बनाने के लिये वाञ्छनीय हो सकता है। वहां पर उपस्थित थीं तरह-तरह की मिठाइयां, भड़कीले वस्त्र, स्वर्ण और तरह-तरह के जवाहिरात, भिन्न-भिन्न देशों के गाने वाले पक्षी, और सर्वोपरि खान का आलिंगन। अपनी प्रेयसी के साथ वह दिन भर प्रेमालाप में व्यतीत कर देता था। उसका जीवन इससे पूर्व रूस के सरहद्दी मुल्कों में चीते की तरह आक्रमण करने, लूटमार का माल बटोरने, स्त्रियां भगा लाने और गांवों के उजाड़ने में गुज़रा था। उसे विश्वास हो गया था कि उसका बेटा उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ावेगा ही, कम नहीं करेगा। इसलिए ये दिन उसके अब विश्राम के थे।

एक बार उसका लड़का रूस में हमला करके लौटा। उसके आने पर उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के हेतु बड़ी-बड़ी खुशियां मनाई गईं। प्रायद्वीप के बड़े-बड़े अमीरों और सरदारों को निमन्त्रित किया गया था, खेल-कूद और नाच-गान का पूरा प्रबन्ध था। अपनी भुजाओं का बल तोलने के लिये बड़े-बड़े सरदारों ने बन्दियों के नेत्रों को निशाना बनाकर कमान से तीर छोड़े थे।

वैरियों के लिये त्रास उपजाने वाला और सल्तनत का स्तम्भ ऐसे अलगाला की विजय के हर्षोल्लास में उन्होंने खूब मद्यपान किया। वृद्ध खान भी पुत्र की विजय-श्री पर फूला नहीं समाता

था। वास्तव में इससे अधिक एक वृद्ध के लिये खुशी का विषय और हो भी क्या सकता है कि उसके मरने के बाद सल्तनत उसके वीर पुत्र के हाथों में जावेगी।

अपने प्रेम को प्रत्यक्ष करने के लिये, सब दावत पर बैठे हुए अमीरों और सरदारों की उपस्थिति में मद्य का प्याला हाथ में उठाते हुए, खान ने अपने पुत्र से कहा, "मेरे प्रिय पुत्र, अल्लाह सर्वशक्तिमान है, उसके पैगम्बर की जय हो······।"

पैगम्बर का नाम लेते ही उन लोगों ने खड़े होकर उच्च स्वर में अल्लाह का जयजयकार किया। तत्पश्चात् खान ने कहा, "अल्लाह सर्वशक्तिमान है। मुझे तो ऐसा समझ पड़ता है, मानों मेरे जीते जी ही मेरे पुत्र को मेरी ही जवानी प्रदान कर दी गई है। यद्यपि मेरे नेत्रों की ज्योति कम हो चुकी है, फिर भी मुझे दिखाई दे रहा है कि जब सूर्य का प्रकाश मेरे नेत्रों से ओझल हो जावेगा, और जब कृमि मेरे हृदय को छलनी बना देंगे, तब भी मैं अपने पुत्र में विद्यमान रहूंगा। ईश्वर सर्वशक्तिमान है और मोहम्मद साहब उसके सच्चे पैगम्बर हैं। अल्लाह ने मुझे एक वीर पुत्र दिया है— उसकी भुजाएं लोहे के समान, हृदय शेर के सदृश और मस्तिष्क जल के समान निर्मल है। अलगाला बोलो, अपने पिता के हाथों से तुम किस चीज की आशा करते हो? जो मांगोगे वही तुम्हें मिल सकेगी।"

अभी वृद्ध खान ने बोलना समाप्त नहीं किया था कि अलगाला उठ खड़ा हुआ। उसके कृष्ण वर्ण नेत्रों में पुतलियां बिल्ली की तरह चमक रही थीं।

"ए बादशाह सलामत और मेरे पिता, मुझे रूस से बन्दिनी

बनाकर लाई गई बालिका सौंप दो", उसने कहा।

इतना सुनते ही खान चेष्टा करने पर भी कुछ काल के लिये शब्द न निकाल सका। उसका हृदय धड़कने लगा। धड़कन शान्त होने पर उसने उच्च परन्तु स्थिर स्वर में कहा, "जाओ ले लो, दावत के बाद से वह तुम्हारी हो चुकी।"

साहसी अलगाला का वदन प्रसन्नता के मारे खिल उठा; उसके नेत्र आनन्द से चमकने लगे। वह अकड़ कर खड़ा हो गया। उसने अपने बाप खान से कहा, "मैं जानता हूँ कि जो वस्तु, ए बादशाह सलामत और मेरे पिता, मुझे दे रहे हैं उसका मूल्य आपके लिये कितना है वह मुझसे छिपा नहीं है। मैं तो आपका दास हूँ, आपका बेटा हूं—मेरा खून आपके लिये हाज़िर है, चाहे बूंद-बूंद करके निचोड़ लीजिये। मैं तो आपके लिये एक बार नहीं, बीसियों बार मरने को तैयार हूँ।"

खान ने कहा, "मुझे किसी चीज़ की जरूरत नहीं।" इतना कहकर उसका श्वेत सिर, जो विजय और वीरता के कारण सदैव उन्नत रहता था, सहसा झुक गया।

दावत शीघ्र समाप्त हो गई। वे महल से बाहर निकल कर हरम की ओर चल पड़े, पर दोनों चुपचाप थे।

रात्रि अन्धकारपूर्ण थी, चन्द्रमा और तारे भी कहीं दिखाई न पड़ते थे। बादल रूपी पर्दे ने आसमान को ढक लिया था।

बहुत देर तक वे चुपचाप चलते गये। आखिरकार खान बोला, "मेरी जीवनी-शक्ति का दिन ब दिन ह्रास होता जा रहा है, मेरे हृदय की धड़कन भी मन्द पड़ती जाती है। इस कज्ज़ाक बन्दिनी का प्रेमालिंगन ही मेरे जीवन को प्रसन्न व उष्ण बनाए हुए है।

अलगाला, क्या सचमुच उसकी तुम्हें ज़रूरत है ? मेरी अन्य सहस्र औरतों को तुम ले लो, उस एक के बदले में मैं वे सब तुम्हें दे सकता हूं। उसे बस मेरे लिये छोड़ दो। बोलो, क्या तुम्हें स्वीकार है।"

अलगाला ने गहरी सांस ली। वह चुप था।

"मुझे अब जीना ही कितने दिन है; मेरे अब इस भूमि पर दिन ही कितने रह गये हैं। वह रूसी बालिका ही मेरे जीवन का आधार है। वह इसे खूब जानती है, इसलिये मुझे प्रेम करती है। मुझे एक वृद्ध पुरुष को अगर वह ही प्रेम न करेगी तो और आशा भी किससे है ?"

अलगाला पूर्ववत् चुप था।

"यह देख कर कि तुम उसे अपने बाहुपाश में बांधे हुए हो, और वह तुम्हें चुम्बन कर रही है, मैं किस प्रकार जीवित रह सकूंगा। अलगाला जहां स्त्री से वास्ता है, वहां मेरा और तुम्हारा सम्बन्ध पिता-पुत्र का नहीं रह जाता। वहां तो हम दोनों पुरुष हैं। क्यों न, अलगाला, मेरे सब घाव फिर से भर आवें और उनसे रक्त-स्राव होने लगे ? क्या ही अच्छा होता कि मुझे यह रात देखने को ही न मिलती।"

अलगाला अब शान्त था। वे हरम के दरवाजे पर जाकर रुक गये। उनके सिर झुके हुए थे। वे वहां न जाने कब तक खड़े रहे। उनके चारों ओर अन्धकार का साम्राज्य था, बादल इस ओर से उस ओर भागते हुए नज़र आ रहे थे, हवा के झोंकों से वृक्ष डोल रहे थे, एक प्रकार की संगीत की ध्वनि आ रही थी।

अलगाला ने धीमे स्वर में कहा, "पिताजी, न जाने कब से

मैं उस पर मोहित हूँ।"

खान ने उत्तर दिया, "निश्चय तू उससे प्रेम करता है, यह मुझसे छिपा हुआ नहीं है, परन्तु मुझे यह भी ज्ञात है कि वह तुझे नहीं चाहती।"

"उसका ख़याल आते ही मेरे दिल के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं।"

"क्या अब मेरे दिल की भी वही दशा नहीं हो रही है?"

वे दोनों फिर चुप होगये। अलगाला ने एक दीर्घ निश्वास ली और कहाः—

"मुल्ला का कहना सत्य ही हुआ। स्त्री पुरुष के लिये हानिप्रद ही सिद्ध होती है। अगर वह सुन्दर हो तो औरों को आकर्षित किये बिना नहीं रहती, उनके मन में उसे अपनाने के भाव उदय हो जाते हैं। उसके पति को यह देखकर डाह होने लगती है। अगर वह कुरूप हो तो उसके पति को दूसरों के प्रति ईर्ष्या होने लगती है। स्त्री के न तो कुरूप और न सुन्दर यानी साधारण होने पर पुरुष उसमें प्रथम सुन्दरता का आरोप करता है, परन्तु जब उसे अपनी भूल प्रतीत होती है तो उसे फिर अतीव दुःख होता है। इसलिये प्रत्येक दशा में स्त्री दुखदायक ही सिद्ध होती है।"

खान बोला, "बुद्धिमानी की ये बातें दिल के दर्द को तो नहीं मिटा सकतीं।"

"पिताजी, हम दोनों की स्थिति वास्तव में दयनीय है।"

खान ने अपना सिर ऊपर उठाया और विषादपूर्ण दृष्टि अपने पुत्र पर डाली।

अलगाला ने सलाह दी, "क्यों न हम उसका अन्त कर दें?"

कुछ क्षण तक खान सोचता रहा। फिर धीरे से उसने कहा, "इतनी स्वार्थपरता, अपने सामने मेरा और उसका कुछ मूल्य न रखना।"

"हां, और आप……।"

कुछ क्षण के लिये फिर वे मौन हो गये।

खान ने कातरतापूर्ण स्वर में उत्तर दिया, "हां, मैं भी तो……।" शोक के मारे उसकी अवस्था एक बालक के सदृश हो गई थी।

"तो क्या उसका अन्त कर दिया जावे?"

खान ने कहा, "उसे मैं तुम्हें सौंप दूं, कदापि नहीं। ऐसा तो हो ही नहीं सकता।"

"मुझे भी तो वह स्थिति असह्य हो चुकी है, या तो मेरे हृदय में छुरी भोंक दो, अथवा उसे मुझे दे दो।"

खान चुप था।

"तो क्यों न हम लोग चट्टान पर से नीचे अथाह जल में उसे फेंक दें?"

खान के मुख से भी वही शब्द कर्ण-गोचर हुए, परन्तु स्वर इस प्रकार का था कि मानों वह उसके पुत्र के शब्दों की प्रतिध्वनि मात्र हो।

इसके पश्चात् वे हरम में दाख़िल हुए। वहां पर वह दरी पर पड़ी सो रही थी। वे उसके पास आकर रुक गये, और एकटक बहुत देर तक उसे देखते रहे। बृद्ध खान के नेत्रों से अश्रु निकलकर उसकी सफेद दाढ़ी पर ठहर गये, और इस प्रकार झलकने लगे मानों मोती हों। वहीं पर पास ही में उसका लड़का खड़ा था।

उसके नेत्रों में से आग बरस रही थी। अपने क्रोध को छिपाने के लिये वह दांत पीस रहा था। ज्योंही खान ने कज़्ज़ाक बालिका को स्पर्श किया वह जग गई। उसका मुख-मण्डल ऊषा के सदृश मधुर और अरुण था। उसके नेत्र प्रभात-कालीन फूल के समान उन्मीलित हो गये। अलगाला उसे दिखाई न पड़ सका। उसने अपने लाल ओंठ खान की ओर बढ़ा दिये, और चुम्बन के लिये कहा।

खान ने धीमे स्वर में कहा "उठो, और हमारे साथ हो लो।"

तब उसकी दृष्टि अलगाला पर पड़ी और उसने खान के अश्रुपूर्ण नेत्रों को देखा। उसे वास्तविक स्थिति समझने में किंचित्-मात्र भी विलम्ब न हुआ। उसने कहा, "मैं तैयार हूँ, कदाचित् आप लोगों ने यही फैसला किया है कि मैं किसी की होकर भी न रहूं। कठोर हृदय पुरुष इसके अतिरिक्त और तब भी क्या कर सकते हैं?"

वे समुद्र की पगदण्डी पर हो लिये। तीनों ने मौन धारण कर रखा था। उन्हें कण्टकाकीर्ण, सकड़ी पगदंडियों से होकर गुजरना पड़ा। हवा झन-झन करती हुई बह रही थी।

कोमल होने के कारण वह बालिका थक गई। प्रस्वेद-कण उसके मुख पर झलकने लगे, परन्तु उसने यह प्रकट नहीं होने दिया कि वह थक चुकी है।

खान के पुत्र ने उसे पीछे रहते हुए देखकर पूछा, "क्या तुम जाने से डरती हो?"

क्रोधपूर्ण नेत्रों से उसने अपने पैरों की ओर संकेत किया; उनसे लहू बह रहा था।

अपने हाथ उसकी ओर बढ़ाते हुए अलगाला ने कहा, "आओ मैं तुम्हें गोद में उठा लूं।" परन्तु उसने अपनी भुजाएं वृद्ध खान के गले में डाल दीं। खान ने उसे एक बच्चे की तरह गोद में ले लिया। खान के नेत्रों को रास्ते के झाड़-झंकाड़ों से बचने के लिये वह अपने कोमल हाथों की परवाह न कर उन्हें अलग करती जा रही थी। इसी प्रकार वे बहुत दूर निकल गये, तब कहीं उन्हें पानी के टकराने की अवाज़ सुनाई पड़ी। अलगाला उनके पीछे-पीछे चल रहा था। उसने पिता से कहा, "मुझे आगे आने दो। शायद मैं कहीं आपकी गर्दन पर कटार का वार न कर बैठूं।"

"आगे हो लो, अल्ला तुम्हारी इच्छा-पूर्ति करेगा या तुम्हें माफ़ी दे देगा। वह सर्वशक्तिमान है। मैं पिता की हैसियत से तुम्हें क्षमा करता हूं। प्रेम मनुष्य को कहां तक पागल बना देता है यह मुझसे छिपा हुआ नहीं है।"

वे समुद्र के किनारे जा पहुँचे। नीचे उन्हें गहरा गर्त दिखाई दिया। लहरें चट्टानों से टकराकर शब्द कर रही थीं। नीचे अन्धकार ही अन्धकार था, भय और मृत्यु।

बालिका का चुम्बन करते हुए खान ने कहा, "विदा।"

"विदा", अपना सिर नवाते हुए अलगाला ने कहा।

बालिका ने दृष्टि नीचे की ओर की, जहां पर कि लहरें टक्कर मार रही थीं। उसका हृदय धड़कने लगा। अपने दोनों हाथों से छाती को दाबकर वह अपने हृदय की गति मन्द करने का प्रयत्न करने लगी।

उसने कहा, "मैं तैयार हूँ, मुझे समुद्र में फेंक दो।"

अलगाला ने एक दर्द भरी आह भरी और अपने हाथ उसकी

ओर बढ़ाये; परन्तु खान ने उसे अपनी गोद में ले लिया, कसकर अपनी छाती से लगा लिया और उसका मुख चूमा। इसके पश्चात् उसे अपने सिर से ऊपर उठाकर चट्टान के नीचे फेंक दिया।

नीचे लहरें टकरा रही थीं और शोर कर रही थीं। उनके शोर में उसके गिरने का शब्द विलीन हो गया, रोने-चिल्लाने की कोई आवाज़ सुनाई न पड़ी। खान उसी जगह शिला पर बैठ गया, उसे अन्धकार और दूर तक विस्तृत जल के अलावा और कुछ न दिखाई दिया। लहरों की गड़गड़ाहट हो रही थी और वायु के झोंके उसकी दाढ़ी को हिलाकर निकल जाते थे। उसके पास ही अलगाला शिला के समान निश्चल खड़ा हुआ था। अपने चेहरे को उसने हाथों में छिपा रखा था। काफ़ी समय इस प्रकार गुजर गया। गहरे काले रंग के बादलों को वायु उड़ाये लिये चला जा रहा था। खान गहन विचार में मग्न उसी चट्टान पर समुद्र के किनारे बैठा हुआ था।

अलगाला बोला, "पिताजी, हमें चलना चाहिये।" खान के मुख से निकला 'ठहरो।' शायद उसने सुन लिया था।

उसी प्रकार फिर समय गुज़रने लगा। नीचे लहरें अपने काम में मस्त थीं, हवा चट्टानों को छूती हुई, वृक्षों को कम्पायमान करती हुई अपना रास्ता नाप रही थी।

"पिताजी, चलो चलें," अलगाला ने कई बार चलने के लिये कहा, परन्तु खान अपने स्थान से तिलमात्र भी न हिला। यह वही स्थान था जहां से कि उसकी प्रेम-प्रतिमा सदैव के लिये विदा हो चुकी थी।

अन्त सब का ही होता है। यह सोचकर खान उठ खड़ा हुआ। उसमें अब नई स्फूर्ति और नया जोश आगया था। अन्यमनस्क भाव से उसने कहा, "चलो।"

वे चल पड़े। परन्तु खान शीघ्र ही रुक गया। वह अपने पुत्र से बोला, "मैं किधर चल रहा हूँ, मुझे जाना भी अब कहां है? मेरा जिन्दा रहना ही अब निस्सार है, मेरी जीवन-शक्ति तो उसमें चली गई। मेरी वृद्धावस्था में अब मुझे प्यार ही कौन करेगा, और जब प्रेम करने वाला ही कोई नहीं रहेगा, तो ऐसे जीने से लाभ क्या?"

"पिताजी, आप धनी-मानी व्यक्तियों में से हैं।"

"उसके एक चुम्बन पर यह अब वारकर तुम्हारे लिये छोड़ सकता हूँ। वे सब तो नाशवान हैं, केवल नारी-प्रेम है जो सदा एक-सा बना रहता है। जहां यह प्रेम नहीं, वहां जीवन नहीं; प्रेम रहित मनुष्य एक भिखारी के समान है, और उसका जीवन दयनीय है। पुत्र! विदा, अल्लाह का आशीर्वाद तुम्हें मुसीबतों से बचाता रहे", यह कहकर खान उलटा ही लौट पड़ा।

अलगाला ने पुकारा, "पिता, ए पिता!" खान के मुख से कुछ और न निकल सका। वह तो मृत्यु का हंसते हुए आलिंगन करने जा रहा था। ऐसे आदमी से और कहा भी क्या जा सकता है? उसे और ऐसी कोई शिक्षा दे भी कौन सकता है, जिससे कि वह जीवन से प्रेम करने लगे?

"मुझे जाने दो।"

"अल्लाह.........।"

"वह सर्वव्यापक है।"

लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ खान समुद्र की ओर बढ़ा चला गया। चट्टान पर पहुँचकर वह अथाह जल में कूद पड़ा। उसका पुत्र उसे रोक न सका, उसे इतना समय भी न मिला। समुद्र से इस बार भी कोई आवाज़ न आई। खान के गिरने का शब्द भी न हुआ। केवल पानी चट्टानों से टकरा रहा था, ऊपर वायु बीहड़ गान कर रहा था।

अलगाला बहुत देर तक चट्टान पर खड़ा हुआ नीचे की ओर देखता रहा। अन्त में उसके मुंह से निकला, "अल्लाह, मेरा भी ऐसा ही वीर हृदय बनाओ।"

वह अन्धकार को चीरता हुआ चल दिया।

यहूदी की कब्र

[रिकार्डा हुग]

जेद्दाम में सिर्फ एक यहूदी था और वह वहां इस प्रकार पहुँच गया था : उसकी स्त्री, जिसे वह बहुत प्यार करता था, जेद्दाम में पैदा हुई थी। जब उस स्त्री का पिता एक बड़ी जायदाद छोड़ कर मरा तो उसने यह उचित समझा कि वह स्वयं जाकर अपनी जायदाद की देख-भाल करे। अपने बचपन का घर देखने के विचार-मात्र से ही उसका घर के प्रति प्रेम उमड़ पड़ा और सारा परिवार— पिता, माता और दो जवान सन्तानें सब लम्बी यात्रा के लिये प्रस्तुत होगये। जेद्दाम को देखकर, जिसे कस्बे की बजाय गांव ही कहना चाहिये, जो छोटी छोटी पहाड़ियों के बीच में बसा हुआ था, जिसके उपजाऊ खेत और हरी घास से ढके हुए मैदान एक छोटी सी नदी मेल्क से सींचे जाकर आंखों को लुभाते थे, उसकी स्त्री की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। केवल इसी कारण ही उसके आरामतलब पति ने वहां रहने का निश्चय कर लिया। इतनी बड़ी जायदाद स्वयं सम्भालना कठिन समझकर उसने एक युवक ओवरसियर का प्रबन्ध किया और स्वयं कस्बे में पहले जैसी ही दूकान कर ली। जेद्दाम में यह इस प्रकार की पहली ही दूकान थी। वहां के निवासी पड़ोस के एक शहर से अपना बाजार किया करते

थे। इसलिये इसमें सन्देह नहीं था कि दूकान में बिक्री बड़ी अच्छी होती, बशर्ते कि उसका मालिक एक यहूदी न होता, क्योंकि यहूदियों से जेद्दाम वाले किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखना चाहते थे। बिक्री तो बहुत होती थी, परन्तु अधिक उधार ही और जिसके देने का कोई समय ही नहीं आता था। जब सेम्युल ने अपने कर्जाइयों पर दावा किया तो अदालत ने उसके दावे लेने से इन्कार कर दिया जिसके कारण उसे दावों के सारे खर्चे भरने पर भी न्याय का हाथ न मिला। उसे अब यह चिंता रहने लगी कि इस सब का परिणाम क्या होगा? अगर कहीं उसका कर्जा वसूल हो जाता और उसकी स्त्री की जायदाद बगैर घाटे के बिक जाती तो वह खुशी-खुशी सपरिवार इस स्थान को छोड़ देता।

इस प्रकार कुछ साल बीत गये। अकस्मात् एक दिन सेम्युल बीमार पड़ा और उसने पास के एक कस्बे से डाक्टर को बुला भेजा। जिस डाक्टर को पहले बुलाया गया था उसके मना करने पर जब दूसरे को बुलाया गया और उसने भी काम अधिक होने का बहाना कर आने से इन्कार कर दिया तो वह बहुत ही घबरा गया। उसे आज पहली बार ही यह अनुभव हुआ कि वह इस गांव में किस बुरी तरह से मर सकता है। अपने परिवार वालों से, जो उसके पलंग के चारों ओर बैठे सलाह-मशवरा कर रहे थे, उसने कहा, "मेरे लिये अब यही बहतर है कि मैं मर जाऊं और तुम लोगों को शान्ति और सुख से जीवन काटने दूं।" उसकी स्त्री रोज़ेटी और दो बच्चे, एनिटज़ा और एम्मान्युल, उसे ऐसा कहने से रोकते थे और कहते थे कि बगैर उसके वे स्वर्ग में भी सुखी नहीं रह सकेंगे। इवे—वही ओवरसियर, जिसकी अब सगाई

एनिटज़ा से हो चुकी थी—ने कहा कि इस प्रकार यह समस्या सुलझती दिखाई नहीं देती। कारण यह था कि जेद्दाम-निवासी एक विधर्मी यहूदी से शादी करने वाली स्त्री और उसके बच्चों का भी अपने बीच में रहना सहन नहीं कर सकते थे।

एनिटज़ा ने कहा, "पिताजी, अगर हम यह घोषित कर दें कि आपकी मृत्यु हो गई है और आपको दफ़ना दिया गया है जब कि आप अपने पुराने कस्बे में चले जावें और इवे, हमारा मित्र तथा रक्षक, यहां के काम-धन्धे को समेटकर आपके पास लिवा लावे तो यह कैसा रहेगा?"

पहले तो सेम्युल इस योजना को मानने के लिये तैयार नहीं हुआ, परन्तु जब ओवरसियर ने विश्वास दिलाकर कहा कि यह काम सफलतापूर्वक निपटाया जा सकता है और साथ ही जब उसकी स्त्री तथा बच्चे जेद्दाम निवासियों की आंखों में धूल झोंक कर उस खुशी का मज़ा लेना चाहते हैं तो वह इसके लिये तैयार हो गया। ज्यों ही वह यात्रा के लायक हुआ वह रात में जेद्दाम से चल पड़ा और छिप-छिपाकर पास के एक बन्दर पर पहुंच गया। वहां से वह जहाज में सवार हो गया।

इसी अर्से में रोज़ेटी और एनिटज़ा ने इवे की मदद से सेम्युल की एक अच्छी सी घास भरकर पुतली बना ली। इस पुतली की दाढ़ी घोड़े के बालों से बनाई गई थी। इस पुतली को सफेद चादर में लपेटकर सेम्युल के पलंग पर लिटा दिया गया। उन्होंने मुख को एक रूमाल से ढक दिया, परन्तु मोम के हाथों को जिनकी एक उंगली पर हीरे की अंगूठी चढ़ी हुई थी खुला रखा, जिससे कि लोग अच्छी तरह धोखे में आजावें। अगर यहूदी का

घर एक कोढ़ी की तरह बहिष्कृत न होता तो यह चालाकी, इतना सब कुछ करने पर भी, पकड़ ली जाती। इसमें सन्देह नहीं कि सेम्युल की मृत्यु का समाचार लोगों को विदित होते ही उनकी उत्सुकता शव को देखने को होती थी, परन्तु वे दूर से ही झांकते थे।

इवे अब गिरजे के पदाधिकारियों के पास मृत्यु का समाचार देने और उसके दफ़नाने का प्रबन्ध करने के लिये गया; परन्तु उन लोगों ने उसे एक पादरी के पास भेज दिया जो इसका प्रबन्ध करता था। इस आदमी के बाल बड़े घने और चारों ओर निकलते हुए थे, सिर छोटा सा परन्तु चपटा था जो एक चौड़े चेहरे पर जड़ा हुआ था। वह आदमी बहुत कम बोलता था, इसलिये नहीं कि उसका स्वभाव ही इस प्रकार का था अथवा वह जान-बूझ कर ही कम बोलता था बल्कि इसलिये कि उसके पास बोलने को कुछ होता ही नहीं था। उसकी बड़ी-बड़ी आंखें उसके खोखले सिर में से चिन्ता और डर के कारण झपकती रहती थीं। वह मूर्ख अवश्य था परन्तु साधारणतः किसी का बुरा चाहने वाला नहीं था। हां, जब मज़हब की कोई बात अटक जाती थी तो फिर उससे बुरा भी कोई नहीं था। जब कभी उसके सामने ऐसा प्रश्न आजाता था जिस पर वह अपनी सम्मति अधिकार के साथ दे सकता था तो वह निडर होकर उसमें दखल देता था और दुश्मन के विपरीत मनमाना ज़हर उगलता था और बदला लेने को दाव-पेंच खेलने लगता था। जब इवे उसके घर पहुँचा तो उसे सब खबर मिल चुकी थी और उसने इन शब्दों से उसका स्वागत किया, "हेर इवे! यह क्या मामला है? अवश्य ही कोई विशेष घटना घटी है

को तुम्हें मेरे पास आना पड़ा है। साधारणतः न तुम मेरे घर पर ही आते हो और न गिरजे में ही। चूंकि तुम्हारे उन आदमियों को अपनी आत्मिक उन्नति के लिये सहायता की ज़रूरत नहीं पड़ती, इसलिये मैं समझता हूँ कि तुम या तो जायदाद की विरासत के लिये आये हो अथवा विवाह के सिलसिले में।"

इवे ने नम्रतापूर्वक बात को टालते हुए कहा कि वह तो केवल हेर सेम्युल की मृत्यु का समाचार दर्ज कराने आया था; परिवार का संरक्षक होने के नाते से वह उसका काम था। "आहा, कितना अच्छा काम तुमने अपने जिम्मे लिया है," पादरी ने कहा, "क्या तुम यह नहीं जानते कि कोयले की दलाली में हाथ काले होते हैं? अपने मृत यहूदी का मेरे सामने नाम भी न लो, मुझे उससे कुछ भी वास्ता नहीं। मुझे अपना काम करने दो।"

इवे ने बताया कि उसे गिरजे की समिति ने उसके पास भेजा है जिसका काम मृतक का अन्तिम संस्कार करना होता है। "हां", पादरी ने गुस्से में चिल्लाकर कहा, "ईसाइयों के अन्तिम संस्कार, अवश्य! यहूदियों के गुरुओं को चाहिये कि इसका तथा अपना प्रबन्ध आप कर लें। इससे अच्छा भला उनके और हमारे वास्ते क्या होगा?"

पादरी यह जानता था कि जेद्दाम में न तो कोई यहूदियों के गुरु रहते हैं और न ही उनका कोई कब्रिस्तान है, इसलिये यह असम्भव था कि पादरी की आज्ञा का पालन किया जाय। मृत सेम्युल को जेद्दाम के अन्य मृतक नागरिकों के सदृश दफ़नाना तो पड़ेगा, चाहे इसका परिणाम अच्छा हो अथवा बुरा। अपनी पतली भौंहों को गोल घूमती हुई आंखों के ऊपर स्थिरकर पादरी ने तीन

बार अपना बन्द हाथ सामने रखी हुई मेज पर मारते हुए कहा, "ऐसा कुछ भी सम्भव नहीं! निकल जाओ बाहर! उस मृतक यहूदी को कहीं भी गढ़े में फेंक दो, परन्तु अपना चेहरा उसके साथ ईसाइयों के कब्रिस्तान में न दिखाना।" इस पर इवे, जिसका खून गुस्से के मारे खौलने लगा था, उठ खड़ा हुआ और तेजी से दरवाजे के बाहर निकल गया। उसके निकलते ही खट से दरवाज़े के बन्द होने का शब्द हुआ।

वहाँ से निकलने के बाद वह गिरजे की समिति के पास पहुंचा परन्तु उनके सलाह-मशवरा करने का कुछ भी परिणाम नहीं निकला, आखिरकार इवे मज़बूर होकर मेयर के घर पहुँचा। आम तौर पर मेयर लोगों का आना-जाना और उसे परेशान करना पसंद नहीं करता था। मेयर बड़े रौब-दाब वाला आदमी था। वह समझता था कि इस पद पर वह केवल इसलिये चुना गया है कि वह अन्य लोगों से अधिक बुद्धिमान है और साथ ही अधिक शिष्ट भी है। उसका मुख्य काम अपनी इज्ज़त को कायम रखना तथा अपने आपको किसी प्रकार की भूल से बचाना था, इसलिये बोलचाल में वह जितना अच्छा था उतना ही किसी प्रकार के निष्कर्ष पर पहुँचने के अयोग्य।

क्रोध से लाल इवे ने, पादरी से जो बातचीत हुई थी, वह मेयर को सब सुना दी। बीच-बीच में मेयर छोटी-मोटी बातों की व्याख्या करवाता जाता था; इन प्रश्नों से एक तो वह अपनी योग्यता और सहृदयता आगन्तुक पर प्रदर्शित करना चाहता था और दूसरे कुछ विचार करने के लिये समय। जब इवे सारा किस्सा सुना चुका और उसके निर्णय का व्यग्रता से इन्तजार कर रहा था तो मेयर ने

अपना सिर एक ओर झुका लिया, अपने पेट पर अपने हाथों को बांध लिया और विचारपूर्वक कहा, "अफसोस, सख्त अफसोस कि हेर सेम्युल को मरना पड़ा! एक परिश्रमी व्यक्ति, एक भला मानस, एक योग्य पिता और एक उपयोगी नागरिक, परन्तु एक यहूदी, निःसन्देह एक यहूदी। अच्छा तो यह होता कि वह कुछ दिन और जीता रहता!"

इवे ने आतुर होकर कहा, "श्रीमान, उस योग्यता और न्याय-प्रियता का परिचय इस बार भी देंगे जिसके लिये आप इतने प्रसिद्ध हैं। जिसे आपने एक उपयोगी नागरिक कहा है उसे एक सड़े हुए फल के समान किसी गड्ढे में नहीं फेंकने देंगे। उसे तो उपयुक्त मृतक-संस्कार मिलना ही चाहिये।"

मेयर भयभीत होकर चिल्लाया, "एक सड़े हुए फल के समान किसी गड्ढे में। यह तो एक अपराध होगा जिसके लिये मैं भरपूर सज़ा दूंगा। पादरी लोग धार्मिक जोश में कभी-कभी बह जाते हैं परन्तु मेयर से यह सम्भव नहीं। वह तो सदैव न्याययुक्त कार्य करता है। यह किस प्रकार हो सकता है कि एक शिष्ट जीवन व्यतीत करने वाला यहूदी एक गले हुए फल की तरह गलियों में फेंक दिया जाय?"

इवे ने इससे अन्दाजा लगाया कि मेयर मृतक के अन्तिम संस्कारों के लिये इजाज़त दे देगा और उसे सार्वजनिक कब्रिस्तान में जगह मिल जायगी। मेयर ने फिर कहा, "निःसन्देह, मैं सभा के विचार जानकर इसकी इजाज़त दे दूंगा।" उसने मुस्कराकर कहा, "अधिकार का मैं दुरुपयोग कर एक अत्याचारी नहीं बनना चाहता।"

इवे को इस प्रकार के अधूरे उत्तर से सन्तोष कर वहां से जाना पड़ा। वह सीधा सेम्युल परिवार को अपनी भेंट का वृत्तान्त बताने के लिये चल पड़ा। बातचीत के उस सिलसिले में और वादविवाद की गर्मी में वह लगभग भूल ही गया था कि उसका भावी श्वसुर मरा नहीं है। जब उसने घर पर हंस-मुख चेहरे देखे तब उसे यथार्थ बात का ज्ञान हो आया और उसे मेयर के कल्पित वस्तु-स्थिति के प्रति आवेश दिखाने पर खूब हंसी आई। सुन्दरी एनिटज़ा हंसी के मारे पलंग पर लोट-पोट हो गई और उसे हंसी का दौरा रोकने के लिये तकिये को बार-बार पेट पर दोनों हाथों से दबाना पड़ता था। उसकी मां, जो लम्बे-चौड़े कद की मजबूत औरत थी और जिसे इस प्रकार का बकवास पसंद नहीं आता था, उठी और कहने लगी; "इवे, तुम बहुत अच्छे हो परन्तु तुम्हारा दिल भेड़ का है, तुम यह नहीं समझते कि इन लोगों से कैसे निपटना चाहिये; इनके साथ शिष्टता का व्यवहार करने से कोई लाभ नहीं, इनसे तो तुम्हें उजड्ड और कठोर बनना पड़ेगा, क्योंकि वे तो इससे ही काबू में आते हैं। मेरा विचार है कि तुम संकोचवश दरवाजे पर खड़े होकर अन्दर आने की अनुमति ही मांगते रह गये थे, तुम्हें उसके विरोध में कहना चाहिये था, 'मैं अपने श्वसुर को कल दफनाऊंगा, और अगर तुम मुझे ऐसा करने से रोकोगे तो मैं घूंसों के मारे तुम्हारा मलीदा बना डालूंगा'।"

"मैंने एक पुरुष के सदृश वीरता से और निश्चयपूर्वक काम लिया था", इवे ने, जिसका सुन्दर मुख कायरता के आरोप को सुनकर लाल हो गया था, कहा, "समय आने पर मैं लड़ता-

लड़ता मर भी सकता हूँ, परन्तु मैं ऐसा तब नहीं सोच सका था कि उसका समय आगया है।"

बालक एम्मान्युल ने कहा, "मां! तुम तो जानती ही हो। ये लोग ठीक कहते हैं। ईसाइयों का कब्रिस्तान ईसाइयों के लिये है और यहूदियों का यहूदियों के लिये। यह इतना सरल मामला नहीं, जितना तुम समझती हो।"

रोज़ेटी के नथुने क्रोध से फूल गये। उसने चिल्लाकर कहा, "तेरे बाल की खाल निकालने से मेरी तसल्ली नहीं होती। तेरा पिता कोई चोर अथवा हत्यारा तो है ही नहीं, वह तो जेद्दाम के उन सब मूर्खों से अच्छा है, जिसे अपने कब्रिस्तान में पाकर उन्हें बड़प्पन अनुभव होना चाहिये। क्या तू समझता है कि वे तुझे, मुझे और एनिटज़ा को कुछ अधिक आदर से देखेंगे केवल इसलिये कि हम भले ईसाई हैं? उन्होंने इस मामले में मेरी कुछ परवाह ही नहीं की। उस खर-दिमाग पादरी और खोखले दिमाग़ मेयर को अब मैं समझूंगी।"

खुशी में तालियां बजाते हुए एनिटज़ा ने अपने भाई से कहा, "मां, अब उस पादरी से बदला लेने के लिये और पिता को ईसाइयों के कब्रिस्तान में दफ़न करवाने के लिये हम दोनों को मरवायेगी। और एम्मान्युल ने, जिसे अपनी मां को चिढ़ाने में मज़ा आता था, उत्तर दिया, "नहीं मां, स्त्री और बच्चे पिता के अनुसार अपना स्थान समाज में पाते हैं, इसलिये मुझे सन्देह होता है कि हमें जेद्दाम के कब्रिस्तान में स्थान मिल भी सकता है।"

"मूर्ख", उसकी मां चिल्लाई। "मेरा परदादा, दादा और बाप सब वहीं दफ़नाये गये हैं। देखती हूं कौन ऐसा माई का

लाल निकलता है जो मुझे उनके पास दफ़न होने से रोकता है। मैं सम्राट् तक इस मामले को ले जाऊंगी जिससे कि इन मद-मस्त अफसरों को यह पता चल जावे कि मेरे दफ़नाने का स्थान कौन-सा है।"

इवे ने उस जिद्दी औरत को मनाने की भरसक कोशिश की और कौंसिल के फैसले की प्रतीक्षा करने के लिये कहा, परन्तु वह कुछ जोर चलता न देखकर दोबारा फिर मेयर की तरफ चल पड़ा। कौंसिल के कमरे में, जहां पादरी तथा और सभासद् बैठे सलाह-मशवरा कर रहे थे, उसके पहुँचाये जाने से पहले मेयर ने उनसे कहा, "यह जानते हुए कि न्याय के अनुसार एक यहूदी ईसाइयों के कब्रिस्तान में स्थान नहीं पा सकता, मैं कानून की खिलाफवर्ज़ी कर उसे तोड़ना-मरोड़ना नहीं चाहता। इस पर भी मैं उस नवयुवक से कठोरता से पेश नहीं आना चाहता। मैं बड़े मीठे शब्दों में उसे यह निर्णय सुना दूंगा।"

इसलिये जब इवे अन्दर दाखिल हुआ तो मेयर ने उसका स्वागत किया और मिनट-बुक को जो उसके सामने खुली रखी थी धीरे-धीरे उंगलियों से बजाते हुए कहा, "इवे, जहां तक नागरिकता का नाता है तुम एक योग्य नागरिक हो और हेर सेम्युल भी इसी प्रकार का था, परन्तु धर्म के दृष्टिकोण से वह मेरे सामने एक विधर्मी था। अच्छा, तुम ही बतलाओ कि क्या यहां कोई यहूदी समाज है?"

इवे इस प्रश्न का उत्तर नहीं के अतिरिक्त और क्या दे सकता था। मेयर ने आगे कहना आरम्भ किया, "जब यहां कोई यहूदी समाज ही नहीं तो यहां यहूदी भी कोई नहीं है। जब यहूदी ही

यहां कोई नहीं है तो फिर कानूनन हेर सेम्युल यहां कभी रहा ही नहीं। उसके परिवार वाले भले ही उसके मरने पर रोवें और मित्र शोक प्रदर्शित करें परन्तु समाज इस परिस्थिति में उसकी स्थिति यहां मानता ही नहीं और इसलिए उसका अन्तिम संस्कार भी नहीं कर सकता।"

इवे ने आवेश में आकर तब कहा, "पूज्यवर, तो मैं उसे दफ़नाऊं कहां? आख़िर कहीं तो उसे दफ़नाना ही पड़ेगा।"

"यह तो सचमुच ही आवश्यक है, और मैं यह भी नहीं चाहता कि तुम लोगों के कार्य में कोई बाधा डालूं। परन्तु ईसाइयों के कब्रिस्तान से तुम लोगों को उसके शव को दूर ही रखना पड़ेगा और साथ ही शहर की हद से भी।"

इवे का धैर्य टूट गया; चिल्लाने के साथ खून उसके मुख पर दौड़ गया। वह बोला, "अगर तुम एक जीवित यहूदी को अपने शहर में जगह दे सकते हो तो एक मृतक को भी सहन कर सकते हो। मैं तुमसे न तो उसके लिये घन्टों का शब्द करने के लिये ही कहता हूं और न मन्त्रोच्चारण के लिये। मैं तो केवल यह चाहता हूं कि उसे गाड़ने भर की जगह मिल जावे और वह जगह तुम्हें देनी ही होगी। मैं तुम्हें यह चेतावनी दिये देता हूँ कि मैं स्वयं उसे कब्रिस्तान में लेकर आऊंगा और जो कोई मेरे रास्ते में आयेगा उसे आड़े हाथों लूंगा।"

उत्तेजना के इन शब्दों से बड़ा तेज वादविवाद शुरू होगया जो रोज़ेटी के अकस्मात् आने से ही बन्द हुआ। इन्तजार से थक-कर वह स्वयं ही आ खड़ी हुई, और स्पष्ट शब्दों में युक्तियां पेश कर वह मामला एक बारगी ही तय कर लेना चाहती थी। जब

उन्होंने उसे पैर से लेकर सिर तक काले कपड़े पहने हुए दरवाजे में रौब से खड़े देखा तो वे सब चुप होगये और मेयर सांत्वना देने के लिये आगे बढ़ा। "शोक प्रकट करने की कोई आवश्यकता नहीं, पूज्यवर", उसने उसे दूर रहने के लिये संकेत करते हुए कहा, "मेरे पास उनके रखने के लिये कोई स्थान नहीं। मैं अपने अधिकारों के अतिरिक्त और कुछ नहीं मांगती। मैं अपने पति को उस कब्रिस्तान में दफ़नाना चाहती हूँ जिसमें मेरे माता-पिता, मेरे दादा-दादी और मेरे पड़दादा-पड़दादी चिरकाल के लिये आराम कर रहे हैं, और मैं आपसे यही चाहती हूँ कि आप बजाय इसमें बाधा डालने के मेरी सहायता करें।"

मेयर ने रेशमी रूमाल से अपने माथे से पसीना पोंछते हुए कहा, "आपके मृत पिता मेरे आदरणीय मित्र थे, और उनकी कब्र हमारे कब्रिस्तान के लिये शोभा की वस्तु है। वह एक अच्छे नागरिक और भले ईसाई थे, और इसके अतिरिक्त जेहाम में आदर पाने के लिये चाहिये भी कुछ नहीं।"

श्रीमती रोज़ेटी ने कहा, "मैं समझती हूँ, यह सम्मान मेरे अपने ही परिश्रम का फल है। परन्तु मेरी इच्छा है कि मरने पर मुझे भी अपने मृत पति के पास ही स्थान मिले और इसके लिये एक ईसाई पत्नी किसी प्रकार के दोष की भागी नहीं।"

मेयर ने एक बार फिर पसीना पोंछा। वह खड़ा-खड़ा सोच रहा था। पादरी, जो अभी तक चुप था, अवसर पाते ही बोल उठा, "क्या आप इस बेशरम और गर्वीली औरत के सामने माथा नवायेंगे? ए स्त्री! तुमने अपने परिवार में और हमारे बीच एक राक्षस को जगह दी है परन्तु तुम अब उसे खुदा के पवित्र स्थान

में नहीं ला सकोगी। इस भूमि पर जगह-जगह कूड़े-करकट के ढेर पड़े हुए हैं और उनमें से किसी पर भी तुम उस नास्तिक की हड्डियां फेंक सकती हो परन्तु वे हमारे पवित्र कब्रिस्तान को अपवित्र नहीं कर पायेंगी।"

पादरी के नज़दीक आकर श्रीमती रोज़ेटी ने ताना मारते हुए कहा, "सुनो, तुम्हारे इस मरघट में दफ़न होना मेरे लिये कोई विशेष इज्ज़त की बात नहीं, परन्तु जिस पर मेरा जन्म-सिद्ध और पैतृक अधिकार है उसे मैं लुटने नहीं दूंगी, और मैं तो अभी यहीं मरना पसन्द करूंगी जिससे कि तुम्हारे हड्डीखाने में मेरा पहुंचना तुम बखूबी देख सको।"

सभासदों को भी श्रीमती रोज़ेटी के इस ताने से गुस्सा आगया और उनमें से एक ने कहा, "यहूदी की स्त्री के जेदाम में कोई अधिकार नहीं।"

"हां, भूखे कुत्तो! तुम मेरी जायदाद को हड़प करना चाहते हो", उसने मुंह बनाते हुए कहा।

दूसरे किसी ने कहा, "सूअर से कुत्ते भले।" जेदाम में यहूदियों को यह उपनाम मिला हुआ था।

गुस्से में लाल, श्रीमती रोज़ेटी ने चिल्लाया, "ए कुत्ते! तुझे शरम नहीं आती, मृतक के प्रति ऐसे शब्द निकालते हुए।" इवे के कन्धे पर अपना हाथ रखते हुए उसने उसे बाहर ले जाते हुए कहा, "आओ हम अपने इस मामले को अब आप ही निपटेंगे।"

मेयर जब कि धारावाहिक रूप में अभी यह स्पष्ट करने में लगा हुआ था कि एक बुद्धिमान् व्यक्ति को ऐसी स्थिति में एक सांसारिक

व्यक्ति को विनम्र भाषा में कानूनी बातें किस प्रकार समझानी चाहियें, उस समय पादरी को यह डर बैठने लगा कि कहीं हठीली श्रीमती रोज़ेटी कब्रिस्तान में मृतक को किसी प्रकार लेकर पहुंच ही न जाये।

वह सचमुच ऐसा ही करना चाहती थी; चोरी-चोरी नहीं बल्कि सरेआम और उचित रस्म-रिवाजों के साथ दिन के समय। उसका ऐसा विचार था कि कब्रिस्तान में कोई झगड़ा करने के लिये खड़ा नहीं होगा। परन्तु पादरी को कुछ देहाती झगड़ा खड़ा करने को मिल गये थे। उसने कहा, "मेरे बच्चो, यह मृतक यहूदी हमारी पवित्र भूमि को दूषित कर देगा! भला उसके लिये तुम कष्ट क्यों सहो! अच्छा है कि वह खेतों में कौवों और गिद्धों के लिये फेंक दिया जाय। अगर तुम लोग उससे अपना बचाव नहीं करोगे तो विषाक्त हवा और बीमारियां फैल जायेंगी।" इसका नतीजा यह हुआ कि जब ड्वे वगैरह लोग नकली सेम्युल की अर्थी लेकर कब्रिस्तान में पहुँचे तो उन्होंने दरवाजे के सामने आदमियों की भीड़ खड़ी पाई जो लड़ने-मरने को तैयार थी और जिन्होंने उन्हें अन्दर दाखिल होने से रोक दिया। श्रीमती रोज़ेटी ड्वे और बच्चों ने, जो बग्घी में बैठे हुए थे, देखा कि उनके नौकरों में और अन्य आदमियों में लड़ाई शुरू होगई है और उनके नौकर बुरी तरह पिट रहे हैं। कुछ देर तक ड्वे बड़ी सावधानी और उत्सुकता से लड़ाई देखता रहा। आखिरकार वह अपने आपको और न रोक सका और गाड़ी में से कूदकर उसने कोट उतारकर फेंक दिया और कमीज़ की आस्तीनें ऊपर चढ़ा लीं। वह ललकारता हुआ लड़ाई के मैदान में पहुंच गया। एम्मान्युल, जिसकी काली-काली आंखें

लड़ाई के जोश से भर उठी थीं, अपने जीजे के पीछे भागना ही चाहता था कि श्रीमती रोज़ेटी ने बड़ी कोशिश के साथ उसे रोक लिया, और साथ ही वह भावुक एनिटज़ा को, जो अपने प्रेमी की कार्य-कुशलता पर खूब खुश हो रही थी, अपनी आंखों के इशारे से तथा गुस्से के भावों से चुप रहने के लिये कह रही थी। यद्यपि श्रीमती रोज़ेटी, इवे की बहादुरी की प्रशंसा कर रही थी, परन्तु विपक्षी अधिक देखकर उसने वहां जाकर उससे फ़िलहाल गम खाने के लिये कह दिया। एक बार जोश में आजाने पर फिर इवे लड़ाई बन्द नहीं करना चाहता था परन्तु यह देखकर कि श्रीमती रोज़ेटी का कथन ठीक है वह पीछे हट गया और उसने और आदमियों को भी वापिस लौटने को कह दिया। बच्चे खूब हंस रहे थे परन्तु श्रीमती रोज़ेटी क्रोध में आग-बबूला हुई जा रही थी।

जो पीछे रह गये थे उन्होंने इतनी जोर से लड़ाई जारी रखी कि रात को भी पुलिस को उन्हें अलग करने में बड़ी कठिनाई हुई। इस दंगे-फ़िसाद का मेयर तथा सभासदों पर इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने उसी समय पास की सराय के एक कमरे में सभा की और इस नाज़ुक समस्या को सुलझा डाला।

मेयर ने अपने शराब के गिलास के ढक्कन से खेलते हुए नम्र स्वर में कहा, "एक मृतक को कहीं न कहीं गड़वाना ही पड़ेगा। यह तो हम आशा नहीं कर सकते कि श्रीमती रोज़ेटी अपने पति को अपने गेहूं और आलू के खेतों में गाड़ देगी।"

पादरी ने धमकी देते हुए कहा, "वह हमारी ईसाइयों की ज़मीन को किसी प्रकार भी दूषित न कर सकेगा। मेरी ओर से वह भाड़ में जाय! फेंक दो उसको बाहर। उसे कब्रिस्तान के

बाहर कुत्ते और घोड़ों के समान कहीं भी गाड़ा जासकता है।"

मेयर विचार-मग्न उस ढक्कन को हिलाता रहा। उसने कहा, "महोदयो, मैं यह मानता हूँ कि यहूदी ईसाई नहीं है, परन्तु क्या उसे इसलिए ही पशुओं में गिना जावे?"

इसके बाद बड़ी देर तक बहस होती रही। तब एक सभासद् ने सुझाया, "सज्जनों, आप जानते हैं कि कब्रिस्तान में एक कोना है जिसमें घास-फूंस बढ़ रहा है, और जिसकी कोई देख-रेख भी नहीं होती। जहां केवल वे बच्चे गाड़े जाते हैं जो मृत पैदा होते हैं अथवा जिनका बपतिस्मा नहीं होता। ये बच्चे बपतिस्मा न होने के कारण यहूदी ही माने जासकते हैं। इसलिये उसको गुप-चुप वहां गाड़ देना क्या ठीक नहीं रहेगा?"

मेयर के इस प्रस्ताव के कई शर्तों के साथ समर्थन करने से पूर्व ही गुस्से में अपने हाथ रगड़ता हुआ पादरी चिल्ला उठा, "क्यों यही तुम्हारा ईसाई मत है? तुम लोग नास्तिकों और जंगलियों की तरह बातें कर रहे हो। क्या तुम लोग नहीं जानते कि वे शिशु जो जन्मने से पहले या पीछे मर जाते हैं देवता होते है? वे छोटे-छोटे देवता हैं जिन्होंने अपने चमकते हुए नेत्र ही कभी नहीं खोले अथवा इस पापी संसार को देखकर उन्हें धुँधला नहीं किया! जीवन के साथ उन्होंने अपने पंख खोले और वापिस स्वर्ग में उड़कर पहुंच गये।"

बच्चों का इस प्रकार का हृदयग्राही वर्णन करते हुए पादरी की आंखों में भी आंसू झलकने लगे तथा कुछ और सभासद् भी अपने आंसू पोंछते हुए दिखाई दिये। मेयर ने एतराज़ उठाते हुए कहा, "बच्चों को स्वर्ग में उड़कर जाने अथवा यहूदी को नरक में

जाने से कौन रोक रहा है ? इस पर भी कानून की दृष्टि में एक बच्चे का और यहूदी का दर्जा एक ही समान है क्योंकि बपतिस्मा उनमें से किसी का भी नहीं पढ़ा गया।" वह यह नहीं भुला सका कि सेम्युल के सम्बन्धी साधारण व्यक्ति नहीं। वे इज़्ज़तदार और धनी नागरिक हैं, जो सेम्युल के साथ किये गए दुर्व्यवहार को उसके साथ कोई विशेष सम्पर्क जीवन में न होने पर भी कदाचित् सहन न कर सकें।

पादरी सभासदों में अपनी दाल न गलते देख देहातियों और गंवारों के झुण्ड के पास पहुंचा और उन्हें वह उकसाने लगा। खुदा के नाम पर उसने उन्हें इस घोर अन्याय के विरोध में घूंसे तानकर खड़े होने का आदेश दिया, "क्या तुम लोग चुपचाप गाय बने रहोगे जब कोई भेड़िये को तुम्हारी भेड़ों पर छोड़ दे ?" उसने चिल्लाकर कहा, "वे तुम्हारे बच्चों के बीच में, जिनके देव-तुल्य प्रेत स्वर्ग में पापी लोगों की ईश्वर के सामने पैरवी कर रहे हैं, यहूदी को लाने के प्रयत्न में लगे हुए हैं। अगर तुमने कहीं उस नास्तिक को अपनी पवित्र भूमि में स्थान दे दिया तो प्लेग, लड़ाई, तूफान, आग और दुष्काल वग़ैरह तुम्हें घेर लेंगे।"

जेह्मम-निवासियों को अधिक भड़काने की ज़रूरत नहीं पड़ी ! वे सब के सब कमर कसकर तैयार होगये। उन्होंने प्रण कर लिया कि जो भी मृत सेम्युल को गिरजे में लाने का प्रयत्न करेगा वह सीधा मौत के घाट उतरेगा। उनमें जो सबसे तेज था वह पोमिल्को नामक हृष्ट-पुष्ट, लम्बा-चौड़ा सुनहले घने बालों वाला धनी किसान था। वह अपने मजदूरों, रिश्तेदारों, नौकरों और आश्रितों को लेकर गाँव तक को जड़ से उखाड़कर फेंक सकता

था। यह सच है कि उसने पहले कभी इस मामले पर सोचा ही नहीं था। परन्तु ज्यों ही यह समाचार उस तक पहुंचाया गया तो वह गालियां देता हुआ और दाँत पीसता हुआ अपने खेतों की ओर भाग खड़ा हुआ, और दो दिन तक घर नहीं लौटा। वह यह कैसे सहन कर सकता था कि उसके बच्चे के पास में एक यहूदी दफ़नाया जाय। भला इससे अधिक और बेइज़्ज़ती उसकी क्या हो सकती थी? उसने ताल ठोककर ऐलान कर दिया कि मेयर तो क्या सम्राट् भी पोमिल्को के साथ इतनी लापरवाही के साथ पेश नहीं आ सकता। वह उन्हें भी इसका फल चखाये बगैर नहीं रहेगा। उसके पहले विवाह की सोरका नामक एक युवा लड़की थी—शरीर की तगड़ी, कद में लम्बी, बड़ी-बड़ी चमकदार आंखें, मुख उसका सुन्दर और दाँत पीले संगमरमर के समान चमकते थे। इस लड़की को जब यह मालूम हुआ था कि उसका पिता दूसरी शादी कराने जारहा है तो उसने उससे साफ़-साफ़ कह दिया था वह इसके लिये भूलकर भी कोशिश न करे। वह इसे सहन नहीं कर सकेगी। उसके कहने का परिणाम यह हुआ कि पिता ने शादी और भी जल्दी कर डाली। भोजन के पहले ही मौके पर सोरका खाना खाने न पहुंची, परन्तु बाप ने उसे बुला लिया और उसकी सौतेली मां ने रकेबी भरकर भद्दे तरीके से उसे शोरबा परोसा। सोरका ने रकाबी को इतने ज़ोर से धक्का मारा कि मेज-पोश भीग गया और वह चिल्लायी, "जो तुमने भोजन पकाया है मैं उसे नहीं खाऊंगी।" बाप ने गुस्से में कहा, "मेरी बला से, जाओ भूखी मरो; तुम्हारे लिये मेरे पास कोई और भोजन नहीं।" निन्दा-सूचक हंसी हंसते हुए सोरका ने कहा, "तो मैं आप कमाकर

खाऊंगी," और अपना सामान समेट कर उसी समय चल पड़ी।

जल्दी में और कहीं न जाकर उसने एक छोटे किसान के पास नौकरी कर ली और थोड़े दिन बाद ही उस किसान के लड़के से उसकी सगाई होगई। वृद्ध डारनिको ने कोई आपत्ति नहीं की। वह जानता था कि पोमिल्को लड़की की जायदाद को जो उसकी मां से मिली है अपने पास नहीं रख सकेगा। इस सम्बन्ध ने पोमिल्को को इतना उत्तेजित कर दिया कि गुस्से में वह मामूली सी बात को लेकर किसी से भी लड़ने और मारने को तैयार था।

लोगों में विद्रोह की आग भड़क रही है इसे मेयर अपने तक न रख सका। घबराहट में उसने यह ऐलान कर दिया कि वह यहूदी की कब्र का मामला सम्राट् के सामने रखेगा। सब लोगों को चाहिये कि अपने-अपने काम-धन्धों में नियमित रूप से लगे रहें। सब कुछ सही-सलामत निपट जायगा। वह स्वयं सम्राट् के पास न जाकर पास में कस्बे के एक अफ़सर के पास गया। यह अफ़सर भी सेम्युल को एक कोने में, जहां बग़ैर बपतिस्मा हुए बच्चों को गाड़ा जाता था, गाड़ने के लिये तैयार होगया। उसने मेयर के साथ फ़ौज का एक दस्ता भी कर दिया जिससे कि दफ़नाते समय अगर कोई गड़बड़ हो तो वह दबाई जा सके।

श्रीमती रोज़ेटी के पास अब यह समाचार भेज दिया कि वह अपने मृत पति को दफ़ना सकती है। परन्तु उसे यह संस्कार रात में करना होगा जिससे कि अन्य लोगों को बुरा न लगे। यद्यपि मर्यादा को ऐसा करने में धक्का लगता था फिर भी उसने यह सोच कर तसल्ली कर ली कि वह अपने पति को गाड़ने नहीं जा रही बल्कि उसके एक पुतले को। उसने यह भी सोचा कि जितनी जल्दी यह

निपट जाय उतना ही अच्छा है। कहीं अन्य लोगों को उनकी इस चाल का पता न लग जाय। लोग जितनी जल्दी इसे भूल जायें उतना ही ठीक भी है। बस वह मेयर के आदेशानुसार प्रबन्ध में लग गई।

फौजी सिपाहियों को अपने सामने पाकर जेद्दाम-निवासियों ने यह निश्चय किया कि वे अर्थी के रास्ते में कोई बाधा न डालेंगे। अर्थी रात के समय गांव में से निकली। सड़कों पर किसी प्रकार का गुलगपाड़ा नहीं था। ऐसा मालूम होता था कि किसी ने गांव पर मंत्र फूंक दिया है। केवल घोड़े के चलने का टप-टप, गाड़ी के पहियों की चूं-चूं तथा रोज़ेटी और इवे की बातचीत का धीमा-धीमा शब्द हो रहा था। कब्र खोदने वाले की सहायता से भूंठ-मूठ का सेम्युल एक कोने में उसके निश्चित स्थान पर जल्दी से दबा दिया गया और परिवार के ये लोग, जिन्होंने सामान पहले से ही बांध रखा था, अपने पिता के स्थान के लिये चल पड़े। इवे थोड़े समय के लिये व्यापार को समेटने के लिये रह गया।

परन्तु यह झगड़ा यहां पर ही नहीं निबटा। दफ़न के दूसरे दिन ही उस जमीन के इर्द-गिर्द की दीवार पर खड़िया से 'सुअर-बाज़ार,' 'जेद्दाम का कूड़ा-करकट' वग़ैरह भद्दे शब्द लिखे पाये गये। जिन माता-पिता के बच्चे उस स्थान में गड़े हुए थे उनके कानों में ये शब्द पहुँच गये। पोमिल्को के लिये, जिसने अधिकारियों का इस मामले में साथ दिया था, यह असह्य था। उसे पूरा विश्वास था कि वृद्ध डारनिको ने, जिसके पास उसकी लड़की रहती थी, उसका अपमान करने के लिये यह निन्दनीय काम किया है। इस प्रकार डारनिको उस पार्टी का नेता बन गया जो पादरी के साथ

थी और जिसका यह कहना था कि मृत सेम्युल कब्रिस्तान में गाड़ा ही नहीं गया। डारनिको इस दोषारोपण का, कि उसने खड़िया से दीवार पर गालियां लिखी थीं, विरोध करता रहा, परन्तु इस कांड में जो महत्व उसे मिल रहा था उससे वह कम खुश नहीं था और उसने पादरी और गिरजे की छाया में खुशी-खुशी इस झगड़े को कायम रखा। धीरे-धीरे दोनों फिरके मृत यहूदी को, जो इस झगड़े के मूल में था, भूल गये और आपस के इस पुराने बैर-भाव के कारण छोटी-मोटी बातों पर लड़ बैठते थे। वे एक दूसरे को परेशान करने का मौका नहीं चूकते थे। परिणाम यह हुआ कि सिर-फुटव्वल होती, हाथ-पांव टूटते, अनाज के ढेरों में आग लगती; पुलिस, जर्राह और आग बुझाने वाले दिन-रात काम में लगे रहते। मेयर पोमिल्को का साथ देना चाहता था। उसके दो कारण थे, एक उसका धनाढ्य होना और दूसरा उसका मेयर की तरफ़दारी करना, परन्तु विरोधी दल वाले संख्या में अधिक थे और इसलिये उसने किसी को भी नाराज़ करना उचित न समझा। पादरी अपना महत्व दिखाने के लिये बार-बार कहता, "जिधर देखो आग की लपटें ही नज़र आती हैं। बाप-बेटे के, भाई-भाई के कत्ल यहां हो रहे हैं। क्या मैंने यह भविष्य-वाणी नहीं की थी? क्या मैंने तुम्हें इससे सावधान नहीं किया था कि जेद्दाम का वातावरण दूषित हो जायगा और अविश्वास का बाज़ार गरम हो जायगा। इस बढ़ते हुए फोड़े को जेद्दाम से निकाल फेंको, उस यहूदी की अपवित्र हड्डियों को उखाड़ फेंको, और अपना सर्वनाश होने से बचा लो! बच्चो, मैं तुम्हें फिर कहता हूं, कि हम बड़ी बुरी तरह से नष्ट हो जायेंगे।" वह बोलते-बोलते जोर-जोर से रोने

लगा। वह यह समझता था कि उसका यह रोना व्याख्यान के प्रभाव के कारण है। मेयर ने, जिसकी आंखों में आंसू छलक रहे थे, पादरी से विनीत स्वर में उसे इस प्रकार के उत्तेजक भाषण के देने से मना किया और कहा कि उसे जनता को शान्त करना चाहिये परन्तु इसका प्रभाव उस पर उलटा ही पड़ा। वह गुस्से में लाल हो रहा था और किसी प्रकार भी, चाहे उसे कोई एक हज़ार रुपये क्यों न दे, वह अपने ईश्वर को बेचने को तैयार नहीं था।

अगर मेयर एक बार फिर फौज की सहायता न लेता तो जेद्दाम में खून की नदियां बह निकलतीं। गांव वाले यह जानकर कि एक रेज़ीमेन्ट स्वयं सम्राट् की अध्यक्षता में विद्रोह दबाने के लिये आरही है भयभीत होगये और चुपके से घरों में खिसक गये तथा अपने-अपने काम में लग गये।

"डारनिको", उस दिन पादरी ने वृद्ध किसान के लड़के से कहा जो पादरी के आदेशानुसार काम कर रहा था, "मैं वायदा करता हूं कि सोरका से तुम्हारा विवाह हो जायगा और तुम्हें दहेज भी सब मिल जायेगा, बशर्ते कि तुम मरघट में आज रात को पहुंच जाओ, यहूदी को उसकी कब्र से खोद निकालो और उसे मेल्क में फेंक दो।"

युवक डारनिको ने कहा, "मैं इस काम के लिये तैयार हूँ। आश्चर्य यह है कि हमने पहले इसके लिये क्यों नहीं सोचा ?"

पादरी ने कहा, "आज रात को यह काम कर डालो। तुम्हें इसके लिये कोई पश्चात्ताप नहीं करना पड़ेगा।" डारनिको ने यही सारा किस्सा ज्यों का त्यों सोरका को सुना दिया। वह अपने प्रेम की सहायता करने के लिये स्वयं ही तैयार होगई। डारनिको के

लिये अकेले यह काम करना कठिन था। उसे न केवल कब्र खोदने के लिये औज़ार ही ले जाने थे बल्कि गड्ढे में से सन्दूक भी ऊपर उठाना था और फिर उसे नदी में भी फेंकना। यह वह अकेले नहीं कर सकता था।

जब वे खेतों से रवाना हुए और मरघट की ओर चले तो उनके चारों ओर अंधेरा और सुनसान था। कब्र पर किसी प्रकार का कोई चिन्ह न होने के कारण उन्हें उसे तलाश करने में भी बड़ा समय लगा। अन्त में उन्हें वह सन्दूक मिल गया जिसकी वे तलाश में थे। पश्चात् वे दोनों मिट्टी के ढेर पर बैठ गये और शीघ्र ही सोरका ने रोटी, पनीर और शराब, जो वे साथ में लेते आये थे, निकालकर सामने रख लिये। अपने विवाह की खुशी में उन्होंने इकट्ठा खाना खाया, हाथ मिलाये और आलिंगन किया। सोरका ने कहा, "जहां तक मुझसे सम्बन्ध है अच्छा ही हुआ जो यहूदी को यहां दफ़नाया गया, मुझे बाप को उसकी दूसरी शादी पर छोड़ने का मौका मिल गया।"

"क्या वह स्त्री इतनी बुरी थी?" डारनिको ने आश्चर्य से पूछा।

सोरका ने गर्दन मारते हुए कहा, "इतनी बुरी नहीं जितनी मैं। परन्तु मुझे वह अच्छी नहीं लगी और इसलिये मैं भाग आई और उसके स्वभाव की खिल्लियां उड़ाती रही।" वह खूब हंसी, यहां तक कि उसके पीले दांत अंधेरे में चमकने लगे।

शीघ्र ही वे फिर अपने काम में लग गये। सन्दूक खोलना और भी कठिन काम था। शोर किसी प्रकार का करने का मौका नहीं था। सन्दूक खोल लेने पर डारनिको ने कहा, "अब बड़ा

दुस्तर काम करना है; बिलकुल अंधेरी रात है और हम दोनों ही यहां पर इसके लिये हैं।" सोरका ने आंख मटका कर कहा, "क्या तुम अब घबरा रहे हो? तुम तब नहीं घबराये जब तुमने पहली बार मेरा चुम्बन लिया था, जब कि एक मृत यहूदी से अच्छी तरह मैं तुम्हारे कान एंठ सकती थी।"

यह सुनकर डारनिको जोश में आगया। उसने ढक्कन एक ओर फेंका और मुर्दे को कमर से पकड़कर उठा लिया। वह चाहता था कि यह काम जितनी जल्दी हो सके उतना ही अच्छा है और उसे वह बगैर देखे नदी में फेंक देना चाहता था। उसने उसे पकड़ा ही था कि चिल्लाकर उसे एकदम छोड़ दिया। घास की वह पुतली मुर्दे से बिल्कुल ही भिन्न प्रतीत हुई। सोरका उसके आश्चर्य पर जोर से खिलखिलाकर हंस पड़ी। वह पुतली को देखने के लिये उस पर झुकी। जब उन्हें यह ज्ञान होगया कि वह केवल मोम के चेहरे और हाथों वाला भूसे का ही आदमी है तो डारनिको अचम्भे में खड़ा एकटक देखता रह गया, सोरका जमीन पर हंसी के मारे लोट-पोट होने लगी।

"इसका मतलब?" डारनिको ने आखिर कहा— वह यह निश्चय नहीं कर सका कि यह किसी जादू के कारण है अथवा किसी शैतान का काम है। सोरका ने कहा, "हमारी बला से। हम उसी यहूदी को तो मेल्क में फेंकेंगे जो हमें यहां मिला है, किसी दूसरे को तो नहीं; हमें यह जानने की जरूरत नहीं कि असली यहूदी यही है अथवा दूसरा कोई।" वह बोलते-बोलते उठ खड़ी हुई और हीरे की उस अंगूठी को गौर के साथ देखने लगी जो पुतली के मोमी हाथ की एक उंगली पर थी। यह अंगूठी श्रीमती

रोज़ेटी ने वहीं छोड़ दी थी। सम्भव है वह भूल गई हो अथवा अपनी योजना की सफलता की खुशी में उस पुतली को उसकी विदाई की यह भेंट थी। अब सोरका के भयभीत होने की बारी आई। उसने सोचा पता नहीं क्या मुसीबत खुदा की ओर से उन पर इस पुतली द्वारा आने वाली है। उस विचित्र स्थिति पर शीघ्रता से विचार करने के बाद उसने सोचा कि बहुमूल्य अंगूठी एक बहुमूल्य अंगूठी है, और क्या हो सकती है और अपने इतने परिश्रम के बदले में इस इनाम के पाने के वे अधिकारी भी हैं। आपस में यह निश्चय कर कि वे इस बात को किसी पर प्रकट नहीं होने देंगे, उन्होंने वह अंगूठी अपने काबू में कर ली। उनकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था। कुछ देर तक इस खुशी में वे वहाँ लेटे रहे, बाद में डारनिको उस विचित्र पुतली को नदी की ओर घसीटकर ले चला और सोरका ने फावड़े से मिट्टी गड्ढे में भर दी और ज़मीन एकसार कर दी।

फौजी सिपाही जो अगले दिन जेद्दाम में आये उनके लायक कोई काम उन्हें न दिखाई दिया। असली अपराधियों का पता न लगने के कारण साधारण सजायें ही लोगों को मिलीं।

कुछ दिन बाद सेम्युल ने, जिसे जेद्दाम का क़िस्सा नहीं बतलाया गया था, अपने बाल-बच्चों का स्नेहालिंगन किया, उसका चेहरा खुशी से चमक उठा: परन्तु ठीक उसी समय मेयर ने जेद्दाम के पादरी से जो कि सामने मेज के सहारे बैठा हुआ था कहा, "यह तो प्रत्येक जानता है कि आप धार्मिक बातों को मुझसे अधिक जानते हैं, फिर भी इतना मैं अवश्य कहूंगा कि फौजी सिपाहियों के आने के बाद से बीमारी, आग, और लड़ाई वग़ैरह बन्द होगये

हैं जबकि मृत सेम्युल बच्चों के बीच में अब भी गड़ा हुआ है।"

मेज़ पर ज़ोर के साथ घूंसा मारते हुए पादरी ने फूला न समाकर कहा, "खुदा की कसम, वह वहाँ नहीं है। फौजी सिपाहियों के आने से पहले ही रात में मैंने उसे खुदवा कर मैल्क में फेंकवा दिया है जिसे वह बहाकर समुद्र में ले गई है और जहां वह अन्य मरी मछलियों और कूड़े में पड़ा सड़ा करेगा।"

मेयर इतना अचम्भे में पड़ा कि वह यह न समझ सका कि उसे हंसना चाहिये अथवा विस्मय दिखाना। आखिर उसने पूछा, "क्या आप वास्तव में इस पर विश्वास करते हैं कि शान्ति और ऐश्वर्य के दुबारा अपने बीच आने का यही कारण है?"

पादरी ने चिल्लाकर कहा, "और क्या कारण हो सकता है? गांव का जीवन भीषण खतरे में था, और मैंने उसे बचा लिया है। इसका श्रेय मैं अपने ऊपर नहीं लेता बल्कि ईश्वर को ही देता हूँ।" उसने शराब का ऊपर तक भरा हुआ गिलास उठाया और मेयर के नाम पर पी गया। मेयर यद्यपि अपनी हार के कारण चिढ़ गया था परन्तु उसने चुपचाप पी लेना ही उचित समझा।

दूध बेचने वाला लड़का

[क्लारा फ़ीबिग]

सेहन सकड़ा और अन्धकारयुक्त था। आकाश का कुछ हिस्सा ही उसमें नज़र आता था जो चिमनियों के धुँवे के कारण धुँधला हो रहा था। नीचे की ज़मीन हमेशा सीली रहती थी, चमारों के काम करने के पत्थरों से सील के कारण हमेशा बदबू फैली रहती थी। केवल गर्मी के दिनों में दुपहर के समय थोड़ी सी धूप की किरणें आधे रास्ते तक एक ओर के ऊंचे-ऊंचे मकानों से बड़ी मुश्किल से आपाती थीं। नीचे की मंज़िल के कमरों में हमेशा अंधेरा ही रहता था। अगर आप ठंडी और भीगी हुई चार-पांच सीढ़ियां टटोल-टटोलकर नीचे उतरें तो आप सीधे घर के सकड़े दरवाजे की ओर बढ़ते हैं; अगर आप आंखें फाड़ कर देखें तो वहां कीलों से ठुके हुए गत्ते पर आप यह लिखा हुआ पायेंगे : स्टीबके, जूते बनाने वाला।

यह दुपहर के बाद की बात है। वे अभागे आदमी जो उस सेहन में रहते थे अभी खा-पीकर ही निबटे थे। दोनों मकानों की सब की सब खिड़कियां खुली पड़ी थीं; तश्तरियों की खटखट और बच्चों की चूं चां आप सुन सकते थे। शलजम, प्याज़ और लहसन की बू वहां फैल रही थी।

एक औरत का बड़े ऊंचे स्वर में साधारण गाना सुनाई दिया। यह सब ग्रीष्म, प्रेम और आनन्द के बारे में था। गायिका पूरे ज़ोर में थी, उसकी आवाज़ के साथ ही बच्चे का चिल्लाना और तश्तरियों का गिरना सुनाई दिया।

सेहन के उस पार से कोई मोटे स्वर में चिल्लाया, "अपनी आवाज़ बन्द करो, ए चिल्लाने वाली स्त्री! जैसे तुम चिल्ला रही हो ऐसे अगर सब चिल्लाने लग गये तो यहां रहना दूभर हो जायगा।" एक खिड़की के बन्द होने के शब्द के साथ ही गाना भी बन्द हो गया।

अब शान्ति थी। दीवारों के ऊपरी हिस्सों में सूर्य की किरणें खेल रही थीं। ये थोड़ी सी आगे बढ़ती थीं, फिर डरकर पीछे हट जाती थीं। बाहर सड़कों पर, कड़ाके की गर्मी थी। ग्रीष्म का पूरा ज़ोर; दूसरे स्थानों पर हरी पत्तियों से लदे हुए पेड़ हिल रहे थे, परन्तु यहां घास की एक पत्ती भी नहीं थी। भारी गीली हवा के कारण आपका बदन पसीना-पसीना होता था, परन्तु ठंडी हवा आपकी पीठ को काटती चली जाती थी।

सेहन के अभागे निवासी दुपहर के खाने के बाद ऊंघ रहे थे—एक डेढ़ अथवा दो बजे इसके लिये ठीक समय होगा। परन्तु ठहरिये! एक खिड़की खुलती है, कुछ चीज़ सेहन में आकर गिरती है। एक हड्डी का टुकड़ा। वह वहां पड़ा था, सूरज की धुंधली रोशनी में झिलमिलाता हुआ।

एक कोने में बैठे हुए बूढ़े, मरियल कुत्ते की आंखों की चमक दिखाई दे रही थी। धीरे-धीरे यह चमक बढ़ने लगी। धीरे-धीरे एक के बाद दूसरा पंजा बढ़ाता हुआ कुत्ता अपने

स्थान से बाहर आया; उसका भूख के कारण सूखा हुआ शरीर पूरा फैल गया, वह फर्श के ऊपर तक घिसट आया; गर्दन मुड़ी हुई, जीभ बाहर निकली हुई—व्यर्थ! जंजीर बहुत छोटी पड़ती थी, इसलिये वह हड्डी तक नहीं पहुंच पाता था। दर्दनाक आवाज़ में गुर्राने के बाद उसने हाथ-पांव मारने बन्द कर दिये।

वह अपने स्थान पर सीधा लेट गया, उसका मटीला सिर उसके पंजों पर था, आँखें अधमिची थीं, परन्तु फिर भी इधर-उधर गौर से देख रहा था। मक्खियां उसके बालों पर भिनभिना रही थीं, वे उसकी आँखों से जो गाढ़ा चिपचिपा पानी बहकर आता था उस पर बैठती थीं। दबी हुइ गुर्राहट के साथ वह आधा उठा, और पूंछ के साथ उसने अपने पिछले हिस्से को फटफटाया।

हड्डी—वही हड्डी जो पत्थरों से पाटे हुए सेहन में पढ़ी थी, उस पर मक्खियाँ आने लगीं और जमा हो गयीं। कुत्ते की भावपूर्ण आँखों में एक बार फिर वेदनायुक्त चमक दिखाई दी। उसने अन्तिम बार फिर उधर देखा और अपना मुंह पानी के प्याले में डाला, परन्तु वह पुराना प्याला भी खाली था--पानी से भी रहित।

वह जीभ बाहर निकाल कर फिर लेट गया, एक बार फिर उसने दाहिने और बायें को सूंघा और ऐसा मालूम हुआ कि वह सो गया है।

परन्तु देखो! सेहन का दरवाजा बजता है, और दो बाहें कुत्ते को घेर लेती हैं, एक बालक की आकृति उसके पास में जमीन पर बैठी दिखलाई पड़ती है।

"प्लूटो! ओ प्लूटो, मेरे बूढे कुत्ते।

यह सत्कार बड़े प्यार का था। कुत्ता प्यार से उछला, उसने

अपना मुंह लड़के की सकड़ी छाती में दे मारा, और उसका हाथ-मुँह चाटा। लड़के ने इसमें उत्साहहीन वेदनामय आनन्द पाया।

"प्लूटो, ! तेरे पास पानी भी नहीं ? मेरे प्यारे कुत्ते, तनिक ठहर।"

लड़का उठ खड़ा हुआ और टूटा हुआ मिट्टी का प्याला नल से भर लाया, और फिर कुत्ते के विचारों का अन्दाजा लगाकर वह हड्डी का टुकड़ा उठा लाया और कुत्ते के मजबूत दांतों द्वारा उसका तोड़ना चुपचाप देखने लगा।

तब नैराश्य हँसी में उसने अपने खाली हाथ उसे दिखला दिये।

"मेरे पास कुछ नहीं है, प्लूटो; बिल्कुल नहीं, परन्तु तू तनिक ठहर जा ! थोड़ा सब्र रख प्लूटो, मेरे पास कुछ पैसे आने दे, तब तेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहेगा, प्लूटो। अच्छा देख ! तुझे बड़ी बढ़िया वस्तु मिलेगी, गुर्दे का एक बड़ा टुकड़ा, यह जो उस कसाई की दूकान के सामने लटक रहा है। वही तुझे लाकर दूंगा, विश्वास रख, प्लूटो।"

वायदा करना हांस स्टीबके के लिये साधारण सी बात थी। उसे इतने पैसे मिलें कहाँ से जो वह कसाई की दूकान से गुर्दे का वह बड़ा टुकड़ा खरीद कर ला सके ? उस समय अपने दोस्त को देने के वास्ते उसके पास अपनी रोटी में से भीगी हुई आधी रोटी सुबह शाम देने को थी, कभी कभी हड्डी का टुकड़ा और वह सब प्यार जो उस बालक के दिल से फूटा पड़ता था।

हांस स्टीबके दूध बेचने वाला लड़का था। उसका काम शहर

के उत्तरी हिस्से में दूध बांटने का था।

अक्सर जब चन्द्रमा आसमान से अपनी धुंधली रोशनी अभी फेंकता होता था, वह सेहन से जहाँ उसके माँ-बाप रहते थे निकल जाता था; उसकी दुबली, छोटी सी मूर्ति निर्जन सड़कों में खटखट करती गुजरती थी। उसके दस्ताने और गुलूबन्द पहने रहने पर भी हवा सर्दियों में अन्दर घुसती जाती थी, गर्मियों में शिखर दुपहरी में वह एक थकी-मांदी मक्खी की तरह चुपके से घर में आ घुसता था। उसका बढ़ना बन्द हो गया था, उसकी सुस्त आँखों, चपटी नाक और मुर्झाये हुए कानों को देखकर कोई भी यह नहीं कह सकता था कि वह केवल बारह वर्ष का ही होगा। उसकी नीचे की भौंहों पर झुर्रियां पड़ने लग गयी थीं और गर्दन पर टेंटुआ बाहर को आने लग गया था।

ज्यो ही वह कुत्ते को अन्तिम बार थपथपा कर ऊँचे-नीचे फर्श पर ठक-ठक करता हुआ अपने तल-घर की ओर चला तो रोशनी उसकी उंगलियों से गायब होने लगी। एक मकान के दरवाजे के सामने वह फिर खड़ा हुआ, अपनी टोपी उलझे हुए सुनहली बालों पर से उसने उतारी और आसमान के उस टुकड़े पर, जो उन ऊँचे-ऊँचे मकानों के बीच में से दिखाई देता था, उसने अपनी सुस्ताई और रिक्त आंखों की एक दृष्टि डाली; भला मेह बरसे अथवा धूप निकले उसे इससे क्या मतलब ?

धीरे २ पैर बढ़ाता हुआ वह जीने से नीचे उतरा—वहाँ दरवाजे पर गत्ते पर लिखा हुआ था : स्टीबके, जूते बनाने वाला।

भीतर से कुछ आवाज़ आई और साथ ही किसी के जंभाई लेने का शब्द हुआ। लड़के के मुंह पर भयभीत होने के चिन्ह

प्रकट हुए; उसका बाप घर पर था।

हांस सोचता हुआ खड़ा रहा। आखिर सावधानी से उसने मूंठ घुमाई।

"ओ हो! हजरत आप हैं। आखिर आप अब लौटे हैं? आपको समय का मालूम है। कहां अभी तक मटरगश्ती चल रही थी, बदमाश कहीं के। ठीक, अच्छा तू ठीक समय पर आया है। भागा २ जा और कुलेक की दूकान से तीन आने की शराब ले आ। यह देख बोतल रखी है। क्या? पीतल का? खुद ही मत चढ़ा जाना। कह देना, पैसे कल मिलेंगे, ठीक है न! जल्दी जा; एकदम भाग।"

लड़के ने रोनी सी शक्ल बनाकर जवाब दिया, "पिता जी, वह मुझे बगैर पैसों के नहीं देगा। कल ही वह मुझे बोतल फेंक कर मारने वाला था। मुझे डर लगता है।"

"सुअर, पाजी कहीं के!" बेंच पर लेटे हुए भारी बदन के आदमी ने कहा। टांगें उसकी हिल रही थीं, कमीज के बटन खुले होने के कारण छाती के बाल नज़र आते थे। उसने गर्दन ऊपर उठाई और फर्श पर थूकने के बाद फिर कहा, "बदमाश, सुअर! जाता है या अभी लातें खायेगा। मेरे तीन गिनते तक शराब आ जानी चहिये। मैं..."

"स्टीबके", चूल्हे से उठकर माँ एक बच्चे को छाती पर और दूसरे को उंगली के सहारे लाते हुए आई। वह अपने पति और बेटे के बीच में खड़ी हो गई। उसने विनती करते हुए कहा, "स्टीबके, थोड़ा ठहरो। उसे रोटी का टुकड़ा खा लेने दो और तब वह हिम्मती हो जायगा। ए, बेटे! अच्छा तू खाने के बाद अपने

बाप के वास्ते शराब ला देगा न ?"

लड़के ने सिर झुका लिया। उसने गुनगुनाया, "मुझे डर लगता है। वह मुझे पीटेगा। बाप भी जब शराब पीलेगा तो मेरी मरम्मत करेगा। मैं नहीं लेने जाऊँगा, मैं नहीं लाऊँगा।"

"चु---प, खुदा के लिये चुप रह।" मां ने डर के मारे उसका मुँह अपने हाथ से ढांप लिया और धीरे से कहा, "देख, कहीं वह सुन न ले। तू तो बहुत अच्छा लड़का है। थोड़ी देर बाद चले जाना। अगर तू नहीं जायगा तो वह सारी बस्ती को सिर पर उठा लेगा। तुझे भी पीटेगा और मुझे भी।"

"अगर मैं लाया तो, अम्मा, वह मुझे मारेगा। नहीं, मैं तेरे हिस्से और अपने हिस्से अर्थात् दोनों की मार खाने को तैयार नहीं।" लड़के ने आँख मटका कर कहा, "मुझसे यह सब छिपा नहीं। या तो वह तुझे पहले प्यार करता है और बाद को मारता है अथवा पहले मारता है और बाद को प्यार करता है। यह ठीक है न ?"

मां ने एक दुःख भरी गहरी सांस ली। उसके मुझाये हुए गालों पर सुर्खी दौड़ने के साथ ही उसका हारा हुआ शरीर कांपने लगा।

"अच्छा ?" बेंच पर लेटे हुए आदमी ने मेज पर जोर से मुक्का मारा। "तू जा रहा है या नहीं, बोल ? यह आपस की कानाफूसी क्यों चल रही है ? चल चुप रह, उठा यह बोतल ! अपने ललचाये हुए मुंह की तृप्ति बाद में करना। चला जा, एकदम भागकर जा !" उसने अपना एक पैर जोर के साथ जमीन पर पटका; मानो यह दिखाने को कि वह उठना चाहता है।

"भाग जल्दी !"

इस पर लड़के ने बोतल उठा ली और एकदम दरवाजे से बाहर हो गया; उसके बाप की हंसने की आवाज़ उसके पीछे गूँजी।

दूध बेचने वाले लड़कों में कोई बहुत बदमाश है, उनमें से कोई चोर है—आंधी की तरह यह खबर फैल गई।

वह पकड़ा गया। उसने नीला कुड़ता पहन रखा था। सिर पर उसके धारीदार टोपी थी जो उसने आगे को मुंह छिपाने के विचार से खैंच रखी थी। वह चोर की तरह दफ्तर के दरवाजे से खिसक रहा था। वह पकड़ लिया गया और फर्श पर उसे बैठने का हुक्म मिला।

दूसरे लड़के दो-दो, चार-चार इकट्ठे खड़े होकर उसकी ओर देख रहे थे। हांस स्टीबके से, जो यह भी नहीं समझता था कि दो-दो मिलकर कितने होते हैं, भला ऐसी आशा कौन कर सकता था? हांस ने, जो सड़क पर पड़ा हुआ पैसा देखकर बजाय उठाने के एक ओर बचकर चल देता था, अठन्नी की चोरी कर ली! इतनी मूर्खता! हांस जब उगाही जमा करा रहा था तो ड्राइवर ताड़ गया था।

तो सारा किस्सा यह था। हांस स्टीबके ही चोर था। उसने इससे इन्कार भी नहीं किया। मुर्झाये हुए चेहरे से और कांपते हुए उसने अपने आपको ड्राइवर से बंधवा लिया, और जब इन्सपैक्टर पर उसका मामला पहुंचा तो वह चुपचाप झुके मुंह से जमीन की ओर आंखें किये खड़ा रहा और वे उसकी तलाशी लेने में लगे हुए थे। "अठन्नी किधर है?" इन्सपैक्टर ने पूछा।

कोई उत्तर नहीं।

"ए छोकरे, तूने उसका क्या किया? क्या तू भूखा था? या तूने उसकी मिठाई ले ली?"

इसका भी कोई जवाब नहीं।

"स्टीबके जवाब क्यों नहीं देता! अठन्नी किधर है?" इन्सपैक्टर ने अपने मजबूत हाथ को स्टीबके के कन्धे पर जोर के साथ रखा। "क्या तू नहीं जानता कि चोरी पाप है? और तूने पैसे चुराये हैं। शरम के मारे डूब नहीं मरता!" इन्सपैक्टर ने अपनी ऐनक माथे पर चढ़ाई और घूरकर अपराधी को देखा। "क्या तू जानता है कि एकदम तुझे नौकरी से निकाल देना मेरे हाथ में है? चोरों के लिये हमारे पास जगह नहीं। क्या तुझे कुछ कहना है?"

लड़के के दुबले-पतले शरीर में बिजली दौड़ गई। उसने माफ़ी मांगने के लिये हाथ जोड़ दिये और फूट २ कर रोने लगा।

"मुझे नौकरी से न निकालिये, साहब। मुझ पर दया कीजिये।" उसके दाँत बज रहे थे और आँखों से टपटप पानी टपक रहा था। "इन्सपैक्टर साहब, मुझे नौकरी से न निकालिये। वह मुझे पीटते २ मलीदा कर देंगे। वह मुझे मारे बगैर नहीं छोड़ेंगे। इन्सपैक्टर साहब, मैं ऐसा फिर कभी नहीं करूंगा। मुझे नौकरी से न निकालिये।"

"पर तूने पैसे चुराये क्यों?"

हांस एक बार फिर चुप पड़ गया, उसके घुटने कांप रहे थे परन्तु ओंठ एक दूसरे से जुड़े हुए थे।

पास में खड़े हुए एक आदमी से इन्सपैक्टर ने कहा, "बहुत ढीठ मालूम देता है।" फिर उसने कठोर स्वर में कहा, "स्टीबके

तू घर जा सकता है। अपने बाप से आज शाम को यहां आने को कहना। मैं उससे बातचीत करना चाहता हूं। अब रोना बन्द कर दे। रोने से तुझे क्या मिलेगा? और हां, सीधा घर चला जा।"

छाया की तरह लड़का सड़कों पर से गुजरता हुआ दिखाई दिया। सूरज बड़ी तेजी से चमक रहा था। कोलतार की सड़कों पर से आग की लपटें निकल रही थीं, परन्तु हांस को इसकी कुछ भी परवाह नहीं थी। ज्यों-ज्यों वह घर के पास पहुंचता जाता है उसके कदम धीरे-धीरे उठ रहे थे। आखिर वह रेंगने लगा और हर एक दूकान की खिड़की के सामने खड़ा होने लगा। अब उसने कसाई की दूकान के जंगले पर अपना सिर पटक दिया।

यही स्थान था जहाँ पर घटना घटी थी। कल यहीं पर।

वह कल ऐसे ही यहाँ पर झुका हुआ था जैसे आज, और ललचाई हुई आँखों मे मैले कपड़े में लिपटा हुआ गुर्दे का टुकड़ा खिड़की में लटकता हुआ देख रहा था। यह वह अपने लिये नहीं चाहता था यद्यपि उसके मुँह में पानी आगया था। नहीं, वह प्लूटो के लिये था, उस कुत्ते के लिये जो अहाते के एक कोने में लेटा हुआ था। जीभ उसकी बाहर निकली हुई थी, मक्खियाँ और दूसरे कीड़े उसे सता रहे थे, और वह भूखा और प्यासा था। उसे खाना देने वाला भी कोई नहीं था। उसका मालिक लेहमान्न जिसकी गाड़ी सड़कों पर प्लूटो दिन-रात खींचता था बहुत कंजूस था। वह अपने पर भी बहुत ही कम खर्च करता था और प्लूटो तो रहा दूर किनारे। फिर हांस स्टीबके कर भी क्या सकता था? उसका थोड़ा सा खाना—रोटी का टुकड़ा प्लूटो का केवल एक ग्रास था।

उसी समय लेहमान्न गाड़ी लेकर आया। बोरियां एक पर एक

ऊपर तक लदी हुई थीं और वह आदमी पीछे-पीछे चल रहा था। कुत्ता और आगे न बढ़ सका। आगे चढ़ाव था इसलिये वह खड़ा हो गया।

"चल बे, आलसी जानवर।"

कुत्ते ने खैंचा। अपने बदन को फैलाया, पिछली टांगें बोझे को जा छुईं परन्तु यह सब व्यर्थ, गाड़ी हिली भी नहीं।

उस आदमी ने कुत्ते के एक और ठोकर मारी और कहा, 'ए, गधे, आगे नहीं बढ़ेगा!"

प्लूटो ने कांपते हुए अपना पूरा जोर लगाकर फिर आगे बढ़ने की कोशिश की। गाड़ी थोड़ी चली भी परन्तु फिर वह रुक गई और कुत्ता चित्त जमीन पर लेट गया।

"ए बदमाश—!" गुस्से में लाल होकर उस आदमी ने अपना पैर उठाया और जोर से कुत्ते के ठोकरें दायें और बायें मारना शुरु किया; कुत्ता दुःख के मारे कराह रहा था, केवल एक बार चिल्लाया भर।

हांस स्टीवर्के बिजली की तरह दुकान की खिड़की से भागा और कुत्ते और उसके मालिक के बीच में आ खड़ा हुआ। "मिस्टर लेहमान, ईश्वर के लिये उसे मारो नहीं; बेचारे प्लूटो पर रहम खाओ।"

उस टुकड़े इकट्ठे करने वाले ने लगभग उस लड़के के कान पकड़ ही लिये और कहने लगा, "मूर्ख, तू अपना काम कर।" और एक ठोकर पर कुत्ता उठ खड़ा हुआ और गाड़ी धीरे धीरे से आगे बढ़ने लगी।

वह लड़का दर्द भरी आँखों से और छाती के दर्द के मारे कराहते

हुए उनकी ओर देखता रहा जब तक कि दुबारा वह चूचड़ की दूकान पर पहुंचकर उस मांस के टुकड़े को न देखने लगा। वह टुकड़ा उसकी आँखों के सामने उसे नाचता हुआ दिखाई दिया। उसका इधर-उधर हिलना मानों उसे इशारे से बुला रहा था। कहीं प्लूटो, बेचारे प्लूटो को वह गुर्दे का टुकड़ा मिल सकता!

और आज, हांस स्टीवके ने पैसे चुरा लिये थे। दूसरे लड़के जब वह गुजर रहा था तो उंगली दिखा २ कर एक दूसरे को कुछ बतलाते थे। यहां तक कि छतों पर बैठे पक्षी चिल्ला २ कर कह रहे थे, "चोर, चोर।" इन्सपैक्टर उसके बाप को सारा किस्सा बतायेगा। इन सबके होते हुए भी उस लड़के की आँखों में आंसुओं के साथ ही उसके सफल होने की एक प्रकार की चमक थी। उसने डरते हुए चारों ओर निगाह डाली; तब, अपना हाथ मुँह में डालकर उसमें से अठन्नी खैंच लाया। उसे जोर के साथ अपने हाथ में दाब कर वह दौड़ा हुआ दुकान में घुस गया और थोड़ी देर बाद एक छोटा सा डिब्बा कोट की जेब में डाल कर निकलता हुआ दिखलाई पड़ा। वह इस प्रकार भागा मानो कोई उसका पीछा कर रहे हों।

वह अहाते में पहुंचा, जो सदैव की भांति गन्दा और अन्धकारयुक्त था परन्तु उस लड़के को वह चमकता हुआ दिखाई दिया। उसके पीले गाल खुशी के मारे चमक रहे थे, उसका दिल तेजी से धड़क रहा था, और उस आनन्द ने, जिसका पहले उसने कभी अनुभव नहीं किया था, गाली, धमकी और घूंसे के विचारों से उसे दूर हटा दिया था। खुशी के मारे दाँत निकालते हुए वह अपने घुटनों पर अहाते के उस कोने में झुक गया और कुत्ते का

मटियाला सिर अपनी धड़कती हुई छाती से लगा लिया।

"प्लूटो, मेरे दोस्त, यह लो तुम्हारे वास्ते कुछ लाया हूं।" कुत्ते के सिर पर मांस के गोले देखकर और चमड़ी उधड़ी हुई पाकर उसकी आँखों से आंसू छलक पड़े। "क्या उसने फिर भी तुम्हारे ठोकरें मारी थीं? वह—! प्लूटो, चिल्लाओ नहीं, मेरे बूढ़े दोस्त, तुम रोओ नहीं! देखो प्लूटो, मैं तुम्हारे लिये गुर्दे का गोश्त लाया हूँ। आहा!"

कुत्ते ने सूंघा और सूँघते ही उसकी आँखों में चमक पैदा हो गई। उसने अपना जबाड़ा खोला और हांस ने खुशी २ उसके मुंह में एक के बाद दूसरा टुकड़ा देना शुरू किया। टुकड़े छोटे २ होते गये परन्तु प्लूटो भूखे की तरह मुंह आगे बढ़ाये ही रहा।

"बस, प्लूटो! अब और नहीं है! बस इतना ही था जो दूकानदार ने मुझे अठन्नी में दिया था। अब तो वह तुम्हारे पेट में पहुंच ही गया है। अब मुझे डर नहीं चाहे वे मुझे पकड़ ही क्यों न लें।"

जब उसका बाप इन्सपैक्टर के पास से वापिस लौटा तो हांस पिटाई से न बच सका। वह निर्दयतापूर्वक पीटा गया।

"बदमाश, चोर," उसके बाप ने हांस को जमीन पर दे पटका; जब बालक को पीटते २ उसकी बाहें अशक्त हो गईं तो उसने पैरों से उसे कुचलना शुरू किया। "पैसे कहाँ हैं? उस अठन्नी का तूने क्या किया? मैं तेरी जान निकाल कर छोड़ूँगा।"

"स्टीबके, खुदा के लिये स्टीबके!" उसकी मां उस पागल की बांह पकड़े हुए थी। "तुम बच्चे का कुछ न कुछ बिगाड़ बैठोगे। तुम उसे लंगड़ा कर दोगे तो इससे क्या भला होगा? स्टीबके,

खुदा के लिये," वह जोर २ से चिल्ला रही थी और दूसरे बच्चे भी एक स्वर में चिल्ला रहे थे।

"शोर न मचा। बन्द कर अपना मुँह! मुझे बदनामी से कौन बचायेगा? मेरी नेकनामी, मैं तुझसे कहता हूँ। क्या यही है जो मुझे तुझसे शादी करने की एवज़ में मिल रहा है? बदमाश कहीं का! मेरे लिए उसकी कीमत क्या? मैं उसकी जान लेकर छोड़ूंगा।"

"स्टीबके!"

"चुप रह।"

जोर से धक्का लगने की आवाज आई, चिल्लाने का शब्द हुआ और वह औरत दूर जाकर पड़ी। वह कोने में खिसक गई और लड़के का कराहना न सुनाई दे इसलिये अपने दोनों कानों को उसने दोनों हाथों से ढक लिया।

आखिरकार उस आदमी का गुस्सा थक गया, वह चारपाई पर धम से बैठ गया और गुनगुनाने लगा, "मैं एक ईमानदार आदमी, बदमाश; बेवकूफ। इन्सपैक्टर ने मुझे जाते ही कहा, 'स्टीबके, तुम एक ईमानदार और आबरू वाले आदमी हो। तुम्हारे कारण ही मैं तुम्हारे लड़के को एक और मौका देता हूँ। परन्तु अगर फिर जरा भी भूल हुई तो वह निकाल दिया जायगा।' देख छोकरे, अगर कहीं अब पकड़ा गया तो मैं तेरा भुर्ता बना दूंगा। मुझे चाहे फिर कुछ भी भुगतना पड़े। गोटलीब स्टीबके ने आज तक कभी बेईमानी नहीं की। मैं सारी उमर चक्की पीसता रहूँ और यह इस तरह उड़ाये—वह बदमाश—मैं ईमानदार आदमी—"

उसके पिछले शब्द इतने साफ सुनाई नहीं दिये। वह शीघ्र

ही खुर्राटे भरने लगा।

आसमान में तारे चमक रहे थे; उनमें से एक अहाते के ठीक ऊपर टिमटिमा रहा था जब हांस रेंगता हुआ जीने तक पहुँचा। वह चल नहीं सकता था, उसका अङ्ग-अङ्ग दर्द कर रहा था, परन्तु वह घिसट-घिसटाकर जीने पर जा पहुंचा। अहाते में हाथों से टटोलता हुआ वह उस कोने में पहुंचा जहां कुत्ता लेटा था और उसके पास लुढ़क कर सुबकियाँ भरने लगा। धीरे-धीरे गुर्राते हुए प्लूटो ने उसका मुख चाटा और बाद में पैरों में लेट गया।

वहां वे दोनों लेटे रहे, थके हुए, कराहते हुए और जख्मी—और उनके ऊपर एक सुनहरा तारा चमक रहा था। परन्तु उन्होंने उसे देखा नहीं।

"अरे छोकरे, दुअन्नी फिर कम है। कहाँ है वह ? क्यों, तूने तो नहीं उड़ाई ?" ड्राइवर ने उसे कन्धों से पकड़ कर हिलाया।

"सचमुच मैंने नहीं ली; मैंने नहीं चुराई। या खुदा!" अपने खाली हाथ दिखाते हुए हांस ने चिल्लाया।

वे दूध की गाड़ी के पास सड़क पर खड़े हुए थे; सर्दियों की ठंडी हवाएं पीली पत्तियों को लाकर उनके पैरों पर डाल रही थीं।

वह लड़का उस शीत वायु में ऐसे कांप रहा था तथा दांत कटकटा रहा था जैसे मुर्झाई हुई पत्तियाँ।

"मेरे पास नहीं है। मिस्टर शूलज़े, मेरी शिकायत न करना। मैंने नहीं ली, मैंने नहीं ली।" मूर्खों की तरह उसने बारबार वही शब्द दुहराये।

"इतना तो हर कोई समझ सकता है," ड्राइवर ने साधारण तौर पर कहा। "तू मेरे साथ दफ्तर में आ। मुझे तो शिकायत करनी ही पड़ेगी," और उसने लड़के को कॉलर से पकड़ लिया।

आखिर दुअन्नी चली कहाँ गई? या तो जमीन पर उससे गिर गई। या भूल में पैसे लौटाते समय वह अधिक गिन गया। कुछ भी हो, आखिर वह तो गई ही, और हांस स्टीबके जो एक बार चोरी के अपराध में पकड़ा गया था अब सन्देह से कैसे बच सकता था।

"निकाल दिया जाय इसी समय," इन्सपैक्टर ने कहा। "मैं तेरे बाप को बतला दूंगा।"

लड़खड़ाते हुए, जैसे वह शराब के नशे में हो, हांस अपनी परिचित गलियों में चलने लगा। वे उस पर विश्वास नहीं कर रहे थे, वे उस पर विश्वास कैसे कर सकते थे—इसके बाद क्या होगा? डर का भूत उसके सिर पर सवार हो गया। उसे उन घूंसों का अनुभव होने लगा जो गर्मियों में उसके दुर्बल शरीर पर बरसे थे; यद्यपि अब मौसम सर्दी का आगया था परन्तु जख्म अभी तक भी अच्छी तरह ठीक नहीं हो पाये थे। अपने बाप की झूठी कसमें, मां का डरते हुए रोकना और अपना चीखना-चिल्लाना वह अब भी सुन सकता था। उसकी भौंहों पर पसीने की बूंदें दिखलाई पड़ने लगीं और वे धीरे-धीरे गालों पर बह निकलीं। चक्कर आने के कारण उसने अपनी आंखें मीच लीं—वह किधर जाय, किधर? क्या वह जंगल में चला जाय? लोग उसे पकड़ लायेंगे। क्या वह इस विस्तृत दुनिया की सड़कों पर भटकना शुरु कर दे? वहां भी वह पकड़ा जायगा।

उदास और पीला मुख लिये हुए वह घर पर आया। उसने कहा कुछ नहीं। वे अपने आप पता लगा लेंगे।

"क्या तेरी तबियत ठीक नहीं है?" उसकी मां ने अपने खुरदरे हाथ उसके बालों पर फेरते हुए पूछा; वह वास्तव में अपने बेटे को प्यार करती थी, यद्यपि यह दिखाने का उसे साहस नहीं होता था। परन्तु आज उसका बाप घर पर नहीं था। "क्या तू बीमार है?"

उसने धीरे से सिर हिलाकर उत्तर दिया और छोटी सी खाट पर, जिस पर वह रात को अन्य भाई-बहिनों के साथ सोया करता था, जा पहुंचा; उसने अपना मुख दीवार की ओर कर लिया। वह पसीने में भीगा हुआ, हाथों को रजाई में छिपाये वहां पड़ा रहा। वह प्रार्थना वगैरह कुछ नहीं कर सका, उसे इसकी आदत ही नहीं थी—फिर वह स्तुति करता भी किसकी? उसके सिर पर डर का भूत सवार था।

शाम को उसका बाप घर लौटा, नशे में सराबोर। "लड़का किधर है?" उसने पूछा।

हांस कांप उठा। उसने लिहाफ़ सिर तक ओढ़ लिया। सांस लेने तक की उसे हिम्मत नहीं हुई।

"वह बीमार है," उसकी मां ने कहा।

"क्या? भाड़ में जाय तुम्हारा वह बदमाश लड़का। कल तक ठहरो, सुबह मैं—" वह बिस्तर पर जा लेटा और कुछ क्षण बाद खुर्राटे भरने लगा।

कल? क्या उसे मालूम था—अथवा नहीं?

बुखार और सर्दी लगने के कारण लड़का कांप रहा था; अंधेरे

में वह जलती हुई आंखें फाड़-फाड़ कर देख रहा था; उसके मन में तीव्र विचार उठा, डर से भी अधिक जोरदार, उसकी इच्छा हुई कि किसी से जाकर चिपट जाय और अपने फटते हुए सिर को बचा ले।

प्लूटो! अकस्मात् वह मुस्कराया। ठीक, वही ठीक रहेगा, बूढ़ा प्लूटो। सबेरा होते ही वह प्लूटो के पास पहुंच जायेगा—प्लूटो के— प्लूटो के—

उसके मन में विचारों का तांता बंध गया, कई विचार आये और चले गये परन्तु प्लूटो हमेशा वहाँ था। आखिरकार उसे नींद आगई— हाथ उसके रज़ाई पर थे और मुंह खुला हुआ।

दम तड़के ही उसकी नींद खुल गई, वह शान्त सो लिया था। ज्योति-हीन अर्ध चन्द्र अब भी दिखाई दे रहा था; अभी सुबह नहीं हुआ था। धीरे से दबे पैरों से वह उठा, अपने हाथ-पैर धोये, और अच्छी तरह से कंघा किया।

अपनी नीली कुड़ती और हरी पट्टियों वाली टोपी पहने हुए वह मां की खाट के पास आहिस्ते से पहुंचा, कुछ क्षण वह उसकी ओर देखता हुआ खड़ा रहा, तब वह दरवाजे से खिसक गया।

स्टीबके, जूते बनाने वाला, अब भी जोर-जोर से खुर्राटे भर रहा था जैसे कि वह आधी रात में, परन्तु उसकी स्त्री जोर की आवाज़ सुनकर उठ बैठी। वह सेहन में से आई थी।

"स्टीबके! श्रीमती स्टीबके!—स्टी—ब—के।"

क्या गड़बड़ हो गई थी? दूसरी चारपाई पर लेटे हुए बच्चे भी चिल्लाने लगे। नींद से अलसाई हुई वह औरत एकदम उठी,

अंगरखा पहना और नंगे पैर ही खिड़की की ओर भागी। वहाँ पर कोई था जो खिड़की का कांच खटखटा रहा था।

"स्टीबके—श्रीमती स्टीबके —स्टी—ब—के।"

"क्या हुआ ? क्या होगया ?" औरत कांपने लगी, रोने का शब्द इतना दर्दनाक हो रहा था।

"इधर आओ, बाहर आओ, जल्दी करो, जल्दी! अरे तुम्हारा लड़का है। उसे कुछ होगया है।"

"कुछ होगया ? क्या होगया ?" मां के अङ्गों में भय की लहर दौड़ गई। वह अपने स्वामी की ओर चिल्लाई, 'स्टीबके!' उसने करवट ली और फिर खुर्राटे भरने लगा।

बाहर शोर और भी बढ़ गया; आदमियों की आवाज़ के बीच-बीच में कुत्ते का भोंकना भी सुनाई पड़ रहा था। कांपते हुए औरत ने कपड़े पहने।

ज्यों ही वह बाहर आई, सबने एक स्वर में चिल्लाना शुरू किया। कुत्ता जिस कोने में बंधा हुआ था वहाँ सब इकट्ठे हो रहे थे।

"हैं, क्या हुआ ? क्या हो गया ?"

"एक दुर्घटना—स्टीबके का लड़का। हे प्रभो, सर्व शक्तिमान् ईश्वर!"

"हांस—?"

आदमी एक ओर हटे, मां अन्दर ज़बरदस्ती घुसी। तब उसने जोर से चीख मारी जो सारे सेहन में गूंज उठी।

केवल कुत्ते का भोंकना उत्तर में सुनाई दिया।

कुत्ता जहाँ बंधा हुआ था उसके ऊपर दीवार में एक लोहे का कुण्डा था। उस कुण्डे से एक रस्सी लटक रही थी जिससे एक

लड़के का शरीर लटक रहा था। हरी पट्टी वाली टोपी सिर से नीचे गिर गई थी, सुबह की हवा में उसके बाल उड़ रहे थे, मुँह खुला हुआ था और आँखें बाहर चमक रही थीं।

एक पागल की भाँति कुत्ता उसकी लटकती हुई टांगों तक पहुंचने के लिये उछल रहा था—परन्तु पहुंच नहीं पाता था, फिर वह लेट जाता था और ऊपर को मुख करके चिल्लाता था। वह किसी को पास नहीं जाने देता था।

कुत्ते के पास में काली दीवार पर बच्चे के हाथ से पढ़े जाने लायक बड़े-बड़े अक्षरों में यह सूचना लिखी हुई थी:

मैंने दुअन्नी नहीं चुराई।

प्लूटो से अच्छा व्यवहार करना।

—हांस स्टीबके दूध वाला

तुर्गनेव की स्मृति में

लाल फूल

[वी० एम० गारशिन]

(१)

"सम्राट पीटर प्रथम के नाम पर मैं पागलखाने के निरीक्षण करवाने की आज्ञा देता हूं।"

ये शब्द ऊँचे और तेज स्वर में कहे गये थे। अस्पताल का क्लर्क जो स्याही से लिपी-पुती मेज पर एक फटा पुराना रजिस्टर लेकर नये आने वाले रोगी का नाम दर्ज कर रहा था अपनी हँसी रोक न सका। परन्तु और दो युवक जो रोगी के साथ आये थे मुस्कराये नहीं। वे उस पागल के साथ रेल में दो दिन और दो रात का जागरण करके अभी आये थे। उनमें इतना भी दम नहीं था कि वे सीधे कुछ और देर खड़े भी रह सकें। दो स्टेशन पहले उसके पागलपन का दौरा इस सीमा तक पहुंचा था कि उनके लिये अकेले उसे सम्भालना मुश्किल हो गया था। एक गार्ड और सिपाही की मदद से उन्होंने उसे एक विशेष किस्म के कोट में जकड़ा था। इस प्रकार वे उसे कस्बे में तथा अस्पताल तक ला पाये थे।

उसकी सूरत बड़ी भयावनी प्रतीत होती थी। उसके हरे सूट के ऊपर जो उसने पागलपन के दौरे में चीथड़े कर डाला था एक

चौड़े गले का तंग कोट था। उसकी बाहें, लम्बी-लम्बी आस्तीनों में, पीठ के पीछे की ओर जकड़ी हुई थीं; उसकी खूनी आँखें घूर रही थीं (उसे जागते हुए ४८ घन्टे से ऊपर हो चुके थे) और अंगारों की तरह चमकती थीं; उसका निचला ओंठ कांप रहा था, उसके घुंघराले बालों की लटें माथे पर आकर पड़ रही थीं; वह दफ्तर में एक ओर से दूसरी ओर तेजी से भारी-भारी पैर डालकर चक्कर काट रहा था और अचम्भे में कागजों से भरी हुई अलमारियाँ और मोमजामे से मढ़ी हुई कुर्सियां देख रहा था और कभी-कभी अपने यात्री-मित्रों पर भी निगाह डाल लेता था।

"उसे दाहिनी ओर के कमरे में ले जाओ।"

"ठीक, ठीक ! मुझे याद है ! मैं एक साल पहले तुम्हारे साथ यहां था। हम अस्पताल में निरीक्षण के लिये गये थे। मैं यह सब अच्छी तरह जानता हूँ, इसलिये मुझे धोखा देना मुश्किल है," उस रोगी ने कहा।

वह उस दरवाजे की ओर घूमा जो चौकीदार ने उसके लिये खोला था। तेज़, भारी और दृढ़ कदम भरता हुआ अपना पागल सिर ऊपर उठाये वह दफ्तर से बाहर निकला और लगभग दौड़ते हुए दाहिनी ओर घूमकर पागलों के कमरे में घुस गया। जो उसे लिवा ले गये थे वे बमुश्किल तमाम उसके साथ-साथ चल पाते थे।

"घन्टी बजाओ ! मैं कैसे—तुमने मेरी बाहें जकड़ रखी हैं।"

चौकीदार ने दरवाजा खोला और यात्री अस्पताल में दाखिल हुए।

वह मकान पुराना था और अन्य सरकारी मकानों की तरह

पुराने ढर्रे पर ईंटों का बना हुआ था। उसके नीचे की मंजिल में दो बड़े कमरे थे—एक खाना खाने का कमरा तथा दूसरा कमरा जिसमें लगभग २० शोर न करने वाले रोगियों के लेटने का प्रबन्ध था। दोनों कमरों के बीच में रास्ता था जिसके एक ओर शीशे का दरवाजा था जो बगीचे में खुलता था। इनके अलावा दो और कमरे थे : एक में दीवारों में गद्दियाँ बंधी हुई थीं और दूसरे में लकड़ी के पतले तख्ते जिनमें कि उपद्रवी पागल रखे जाते थे। नीचे की मंजिल में एक अंधेरा, गुम्बज वाला कमरा नहाने के लिये बना लिया गया था। ऊपर की मंजिल में औरतें रखी गई थीं। वहां से रोने, चिल्लाने और कराहने की आवाज आ रही थी। यह अस्पताल ८० रोगियों के लिये बना था, परन्तु उस भू-भाग में अकेला होने के कारण कभी-कभी तीन सौ तक रोगी इकट्ठे हो जाते थे। छोटे-छोटे जितने कमरे इसमें थे उनमें चार-चार या पांच-पांच रोगियों के लिए प्रबन्ध था। जाड़े की मौसम में जब रोगियों को बगीचे में जाने को अनुमति नहीं रहती थी और सलाखदार खिड़कियां सब बन्द कर दी जाती थीं तो अन्दर की हवा में दम घुटने लगता था।

इस नये रोगी को पहले स्नानागार में ले गये। एक स्वस्थ आदमी पर ही इसका कुप्रभाव पड़े बिना नहीं रहता था, फिर एक पागल के ऊपर तो इसका और भी बुरा प्रभाव पड़ता। यह एक बहुत बड़ा कमरा था जिसमें ऊपर की ओर गुम्बज था, फर्श इसका पत्थर का था जो चिकना था। रोशनी के लिये दूर एक कोने में एक छोटी सी खिड़की थी। कमरे की दीवारें और छत लाल पुती हुई थीं। जमीन में दो गोल गड्ढे थे जिनमें नहाने के लिये पानी

भरा रहता था। वे काले और गन्दे फर्श की सतह से नीचे थे। खिड़की के सामने ही पानी गरम करने के लिये एक तांबे का हमाम तथा तांबे की नल व टूटियां थीं। इस सब का बुरा प्रभाव दिमाग के रोगियों पर पड़े बिना नहीं रहता था।

डाक्टर के कहने पर जब रोगी को नहाने के लिये और गर्दन पर पलस्तर की पट्टी लगवाने के लिये इस कमरे में लाया गया तो वह एकदम डर गया और चीख उठा। उल्टे-सीधे विचार, एक से एक तेज, उसके दिमाग में चक्कर काटने लगे। यहाँ किस लिये? जांच-पड़ताल के लिये? क्या यह गुप-चुप फांसी पर चढ़ाने की जगह है जहाँ पर उसके दुश्मनों ने उससे हमेशा के लिये पीछा छुड़ाने का सोचा है? शायद यह नरक है? आखिरकार उसके मन में यह विचार आया कि यह सताने और कष्ट देने की जगह है। उसके बाधा डालने पर भी उसके कपड़े उतार डाले गये। बीमारी के जोश में उसने इतनी ताकत से धक्का दिया कि उसकी देख-रेख करने वाले सबके सब फर्श पर दूर जा गिरे। आखिरकार उनमें से चार ने उसे जमीन पर पटक लिया और चारों ने उसे हाथों और टांगों से पकड़कर गरम पानी के कुण्ड में डुबकी लगवा दी। उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे पानी उबल रहा है। उबलते पानी के बदन पर पड़ने या गरम लाल-लाल लोहे के लगने से जो कष्ट होता है उसके अनुभव के पर टूटे-फूटे विचार उसके मन में दौड़ गये। पानी अन्दर निगल जाने के कारण वह छटपटाने लगा और हांफने लगा, साथ ही अनाप-शनाप बकने लगा जो समझ में आना आसान नहीं था। उनमें गालियां और अनुनय-विनय दोनों शामिल थे। जब तक कुछ भी ताकत शेष थी वह चीखता-चिल्लाता

रहा; बाद को मजबूरन उसे चुप होना पड़ा, और गरम-गरम आंसू बहाते हुए उसने कुछ शब्द उच्चारण किये जिनका पहले शब्दों से कोई भी सम्बन्ध नहीं था :

'—सर्वस्व त्यागी सेंट जॉर्ज ! आपके हाथों में अपना शरीर—अपनी आत्मा—सौंपता हूं—नहीं—ओह नहीं—।'

रोगी की देख-भाल करने वालों ने अब भी उसे पकड़ रखा था यद्यपि वह अब बिल्कुल शांत हो चुका था। गरम पानी के स्नान ने और सिर पर बरफ की थैली ने अपना पूरा-पूरा असर दिखाया था। जब उन्होंने लगभग बेहोशी की हालत में उसे कुण्ड में से उठाया और मेज पर पलस्तर लगाने के लिये बैठाया तो उसकी बची बचाई शक्ति और उखड़े हुए विचार, ऐसा मालूम हुआ कि, फिर से उसके अन्दर पैदा हो गये हैं।

"ऐसा क्यों करते हो ? ओह किस लिये ?" उसने चिल्लाया। "मैं किसी को भी नुकसान नहीं पहुंचाना चाहता। तुम मुझे क्यों मार डालना चाहते ? ओह, ओह, ओह ! हे प्रभो ! ओह आप जो पहले शहीद बन चुके हैं ! मैं आप के पांव पड़ता हूं, मुझे बचाइये···!

पलस्तर की चिनमिनाहट ने उसे लड़ने-मरने पर फिर आमादा कर दिया। उसकी देख-रेख करने वाले इस बार उसे काबू न कर सके। उनकी समझ में न आया कि वे उससे किस प्रकार निपटें। जिस सिपाही ने पलस्तर उसकी गर्दन पर लगाया था उसने कहा, "यह तो कोई ऐसी चीज़ नहीं, हम इसे जरूर पोंछ डालेंगे।"

इन सीधे-सादे शब्दों को सुनकर रोगी कांपने लगा। किसे पोंछना ? किसे पोंछकर अलग करना ? किसका सत्यानाश कर

देना ? मेरा सत्यानाश कर देना ? उसने सोचा और मृत्यु को सामने खड़ा देखकर उसने अपनी आंखें मूंद लीं। सिपाही ने एक मोटे कपड़े की पट्टी लेकर उसकी गर्दन पर जोर से फेरी और पलस्तर तथा ऊपर की झिल्ली तक खिसकाकर ले गया, केवल खुला हुआ जख्म रह गया। इस चीरे का दर्द जो एक स्वस्थ और शान्त मनुष्य के लिये भी असह्य था रोगी को सब दर्दों का अन्त प्रतीत हुआ। उसने अपने रक्षकों को जोर से धक्का मारा और उनके काबू से छूटकर नंगा ही फर्श पर जा गिरा। उसने सोचा उन्होंने उसका सिर काटकर फेंक दिया है। वह चिल्लाना चाहता था परन्तु चिल्ला न सका। उसे बेहोशी की हालत में उसके पलंग पर लेटा दिया गया। कुछ समय बाद वह लम्बी और गहरी नींद में सोया हुआ पाया गया।

(२)

रात में वह उठा। शान्ति विराज रही थी। दूसरे बड़े कमरे से जिसमें रोगी सोए हुए थे उनके सांस लेने का शब्द वह सुन रहा था। दूर कहीं से किसी रोगी का, जो अलग कमरे में बन्द था और बक रहा था, शोर आ रहा था, और औरतों के कमरे से किसी बैठे हुए गले का गंवारू गाना सुनाई पड़ रहा था। उसे बहुत कमजोरी महसूस हुई, मानों कि उसकी सब हड्डियां टूट चुकी हों; उसकी गर्दन में बड़े जोरों की पीड़ा हो रही थी।

"मैं कहां हूं ? मुझे क्या हो गया है ?" उसके मन में ये विचार उठे। फिर उसे स्पष्ट रूप से स्मरण हो आया कि पिछले महीने में उसकी क्या दशा हुई थी और वह समझ गया कि वह बीमार है, उसे अपनी बीमारी भी पता लग गई। उसे कई अपने

बेहूदे विचार, शब्द और काम स्मरण हो आये और इस सुधि के साथ ही उसका सारा शरीर कांपने लगा। "अच्छा हुआ यह सब निपट गया; ईश्वर की असीम कृपा है कि यह सब निपट गया," वह गुनगुनाया और फिर सो गया।

लोहे के सींखचों वाली एक खुली हुई खिड़की में से बाहर की ओर ऊंचे-ऊंचे मकानों की दीवारों के बीच से जाती हुई एक गली दिखाई देती थी। यह दूसरे किनारे पर बन्द थी। इसमें कभी कोई नहीं जाता था। इसमें घास-फूस झाड़ियां और जंगली फूल वग़ैरह बुरी तरह उग रहे थे, खिड़की के सामने परन्तु इन झाड़ियों वग़ैरह से आगे चंद्रमा की शुभ्र चांदनी में बड़े बगीचे के ऊंचे-ऊंचे पेड़ चमक रहे थे। दाहिनी ओर अस्पताल की सफेद दीवारें जिनमें लोहे की खिड़कियां लगी हुई थीं और जिनसे अन्दर की रोशनी बाहर आ रही थी दिखाई पड़ती थीं। बाईं ओर मरघट की दीवारें थीं जो चाँदनी में सफेद नजर पड़ती थीं। चंद्रमा की किरणें खिड़की के सींखचों में से अन्दर आ रही थीं और रोगी के बिस्तर के कुछ हिस्से पर, उसके पीले मुर्झाये हुए मुख पर और बन्द आंखों पर पड़ रही थीं। उसके चेहरे से पागलपन के कोई आसार अब नज़र नहीं आते थे।

वह थके हुए आदमी की तरह बेहोश सो रहा था—न उसे स्वप्न आ रहे थे, न ही वह हिलता-डुलता था। यहां तक कि उसके सांस लेने का शब्द भी सुनाई नहीं पड़ता था। कुछ क्षण के लिये वह पूरे होश में उठा, मानों बिल्कुल ठीक हो—केवल सुबह पूर्ववत् पागलपन लेकर उठने के लिये

(३)

अगले दिन डाक्टर ने पूछा, "इस समय सुबह अब तुम्हारी तबियत कैसी है ?"

रोगी, जो अभी जगा ही था, अभी बिस्तर पर लेटा हुआ था।

"बिल्कुल ठीक", उसने उत्तर दिया। वह उठा, अपने स्लीपर पहने और लम्बा कोट उठाया। "आश्चर्यजनक! केवल एक शिकायत है और वह इसकी!" उसने अपनी गर्दन की ओर इशारा किया। "मैं अपना सिर बगैर कष्ट के घुमा नहीं सकता। परन्तु इसकी कुछ फिकर नहीं। अगर कोई सब कुछ समझने लगे तो फिर कोई फिकर नहीं, और सब मेरी समझ में आ रहा है।"

"क्या तुम जानते हो तुम कहां पर हो ?"

"अवश्य, डाक्टर साहब! मैं पागलखाने में हूँ। अगर आप भी यह जानते हों, तो भी सब ठीक है। इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता!"

डाक्टर ने बड़े ग़ौर से उसकी आंखों को देखा। उसका सुन्दर, कोमल चेहरा, कंघी की हुई सुनहली दाढ़ी, और सुनहले चश्मे के नीचे शांत, नीली आंखें उसके भावों को बिल्कुल भी प्रकट नहीं कर पाते थे। वह निरीक्षण कर रहा था।

"तुम क्यों इतने ध्यान से मेरी ओर देख रहे हो ? तुम कभी भी यह नहीं जान सकोगे कि मेरे अन्दर क्या है ?" रोगी ने कहा। "परन्तु मैं तुम्हारे चेहरे पर जो कुछ लिखा हुआ है उसे अच्छी तरह पढ़ रहा हूँ। तुम इतना पाप क्यों करते हो ? क्यों तुम इतने अभागे आदमी इकट्ठे करते हो और यहां रखते हो ? मेरे लिये कोई अन्तर नहीं पड़ता—मैं यह सब समझता हूँ और इसी लिये शान्त

भी हूँ; परन्तु उनके लिये ? क्यों उन्हें इतनी यातना ? जब कोई आदमी इस अवस्था में पहुँच जाता है कि उसका दिमाग किसी तत्व को समझने में लग जाता है तो उसके लिये कोई अन्तर नहीं पड़ता कि वह कहां रहता है, क्या अनुभव करता है ? जीना अथवा मरना''''''क्यों ठीक है न ?"

"शायद," डाक्टर ने उत्तर में कहा। वह कोने में पड़ी हुई एक कुर्सी पर रोगी के निरीक्षण के लिये बैठ गया। रोगी इस समय तेज कदमों से फट-फट करता हुआ और लम्बा कोट बेल-बूटों वाला इधर से उधर हिलाता हुआ कमरे में घूम रहा था। सन्तरी और इन्सपैक्टर जो डाक्टर के साथ आये थे दरवाजे के पास सतर्क खड़े थे।

"मुझे मालूम हो गया है!" रोगी ने कहा। "जब मैंने उसे पाया तो मुझे ऐसा लगा कि मानों मेरा पुनर्जन्म हुआ है। मेरे विचार अधिक स्पष्ट हो गये, मेरा दिमाग इतनी अच्छी तरह काम करने लगा जितना पहले उसने कभी नहीं किया था। जो मुझे पहले बड़े विचार के बाद ज्ञात होता था अब केवल प्रेरणा द्वारा पता लग जाता है। जो दर्शन-शास्त्र ने रास्ता बतलाया है वास्तव में मैं उस पर पहुँच गया हूँ। मुझे यह अनुभव हो रहा है कि मैं समय और स्थान से परे हूँ। ये सब कल्पित हैं—मैं सैकड़ों वर्षों से रहता चला आ रहा हूं। सब स्थानों पर—अथवा कहीं भी नहीं—मैं विद्यमान हूँ। इसलिये मैं इस ओर से सर्वथा उदासीन हूँ कि आप मुझे यहां रखते हैं अथवा छुट्टी दे देते हैं—मैं जकड़ कर रखा जाता हूं अथवा स्वतंत्र। मैं यह जानता हूं कि यहां पर कुछ मेरे सरीखे भी हैं परन्तु अधिक दयनीय स्थिति में हैं। तुम

उन्हें मुक्त क्यों नहीं कर देते ? कौन चाहता है —?"

डाक्टर ने बीच में बोलते हुए कहा, "तुम कहते हो कि तुम समय और स्थान से परे हो। विपरीत इसके क्या इससे हम—तुम और मैं—सहमत नहीं कि हम इस कमरे में बैठे हुए हैं, और अब" डाक्टर ने जेब से घड़ी निकालकर देखा—१८—की ६ मई के दिन के १०॥ बजे हैं। इसके बारे में तुम्हारा क्या विचार है?"

"कुछ नहीं। मेरे लिये इसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता कि मैं कहां हूं अथवा कब मैं जीवित हूं। अगर मेरे लिये इनमें कोई अन्तर नहीं तो क्या इसका यह तात्पर्य नहीं कि मैं सब स्थानों पर हूँ और सर्वदा हूँ?"

डाक्टर मुस्कराया।

"अजीब युक्ति है," डाक्टर ने उठते हुए कहा; "सम्भव है तुम्हारा कहना ठीक हो। नमस्कार। क्या सिगार पियोगे ?"

"धन्यवाद," वह चलता-चलता रुका, एक सिगार लिया और कांपते हुए एक ओर का टुकड़ा काटकर फेंक दिया। "इससे मेरे विचार करने में मदद मिलती है," उसने कहा। "यह विश्व है, सूक्ष्म रूप में है। एक सिरे पर क्षार, दूसरे पर तेज़ाब। विश्व का केन्द्र यही है जिससे कि पदार्थों के गुण-भेद जाने जाते हैं।—विदा, डाक्टर।"

डाक्टर आगे बढ़ गया। कई रोगी अपने पलंगों के पास डाक्टर की प्रतीक्षा में अकड़े हुए खड़े थे। पागलखाने में जो आदर डाक्टरों को दिया जाता है वह और किसी अफसर को नहीं।

रोगी जब अकेला रह गया तो वह कमरे में पूर्ववत् ही, एक कोने से दूसरे कोने तक, कभी तेजी से, कभी धीरे-धीरे, जिस तरह

शेर पिंजरे में चक्कर काटता है, चक्कर काटता रहा। वे उसके लिये चाय लाये। बग़ैर बैठे ही उसने दो घूंटों में प्याली चाय की खाली कर दी और क्षण भर में ही डबल रोटी का बड़ा टुकड़ा निगल लिया। बाद में वह कमरे से बाहर निकल गया और कई घण्टे तक बिना रुके हुए बरामदे में एक सिरे से दूसरे सिरे तक तेज परन्तु भारी कदमों से घूमता रहा। आज बारिश हो रही थी इसलिये रोगियों को बाग में जाने की आज्ञा नहीं थी। जब सन्तरी नये रोगी की तलाश में गया तो उसने उसे कांच के दरवाजे से चिपका हुआ बगीचे की ओर देखता हुआ पाया। अफ़ीम-परिवार के अंगारे की तरह लाल फूल ने उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रखा था। सन्तरी ने उसके कंधे को छूते हुए कहा, "कृपया आइये और वजन करवा लीजिये।" जब रोगी उसकी ओर मुड़ा तो डर के मारे लड़खड़ा गया; उसकी आंखों से शैतानी और घृणा टपकी पड़ती थी। जब उसे यह विदित हुआ कि वह सन्तरी है तो उसने एकदम अपने मुख का भाव बदल डाला और एक आज्ञाकारी की तरह चुपचाप उसके पीछे इस प्रकार हो लिया मानों किसी गूढ़ विचार में मग्न हो। वे डाक्टर के कमरे में पहुंचे; रोगी तोलने की छोटी सी मशीन पर बग़ैर किसी सहायता के खड़ा हो गया; सन्तरी ने उसे तोला और १०९ पौंड उसके नाम के सामने रजिस्टर में दर्ज कर लिया। दूसरे दिन उसका वजन १०७ पौंड उतरा और तीसरे दिन १०६।

"अगर वजन इस प्रकार कम होता गया तो वह अधिक दिन जियेगा नहीं," डाक्टर ने कहा और आज्ञा दी कि रोगी को तगड़ा भोजन दिया जाय। उनके सब प्रकार के प्रयत्न करने पर भी और

रोगी की अधिक भूख के बावजूद भी वह दिन प्रतिदिन दुबला होता गया और प्रतिदिन ही रजिस्टर में वजन कम ही कम दर्ज होता गया। रोगी शायद ही सोता था और अपने दिन बग़ैर किसी विघ्न-बाधा के काट रहा था।

(४)

रोगी यह जानता था कि वह पागलखाने में है और यह भी वह जानता था कि वह बीमार है। कभी-कभी, जैसे पहली रात को हुआ था, वह रात्रि की शान्ति में उठता, दिन भर का थका-मांदा होने के कारण उसके सारे अङ्ग दर्द करते और सिर पत्थर की तरह भारी रहता, परन्तु पूरे होश-हवास में वह उठता। कदाचित्, रात्रि में अंधकार और शान्ति के होने के कारण, अथवा दिमाग़ के कमज़ोर होने के कारण और इसलिये नई स्फूर्ति के साथ उठने के कारण उसकी समझ में सब वस्तु-स्थिति आजाती और उस समय के लिये वह बिल्कुल स्वस्थ प्रतीत होता। परन्तु दिन निकलने पर, प्रकाश के कारण तथा अस्पताल की चहल-पहल आरम्भ हो जाने के साथ ही उसका रोगी दिमाग़ उनके व्यापार से प्रभावित हुए बिना न रहता और दिमाग़ उसके काबू से बाहर चला जाता और उसका पागलपन लौट आता। उसकी अवस्था ठीक-ठीक वस्तुओं को समझने तथा बिल्कुल मूर्खतापूर्ण हरकतों का एक विचित्र मिश्रण था। वह यह जानता था कि वह दिमाग़ के रोगियों से घिरा हुआ है, परन्तु साथ ही वह यह भी सोचता था कि प्रत्येक व्यक्ति से उसकी पुरानी जानकारी है, अथवा उसने उनके बारे में पुस्तकों में पढ़ा है, अथवा सुना है, और वे अपना परिचय या तो देना नहीं चाहते अथवा उन्हें ऐसा करने से रोका

जाता है। अस्पताल में प्रत्येक देश और प्रत्येक समय के आदमी थे। यहां उसे मृत तथा जीवित सब ही मिले। यहां समस्त भूभाग के पूज्य और शक्तिशाली व्यक्ति थे, और पिछले युद्ध में जो सिपाही काम आये थे वे भी। उसे ऐसा प्रतीत होता था कि उसे किसी योगीराज की शक्ति प्राप्त हो गई है जिसके कारण समस्त संसार की शक्ति उसके शरीर में आगई है और उसे इस बात का गर्व था कि वह उस शक्ति का केन्द्र है। वह यह समझता था कि उसके जो साथी हैं वे यहां पर कोई महत्वपूर्ण कार्य करने के लिये एकत्रित हुए हैं, जो उसके धुँधले रूप में इस दुनिया से बुराई उखाड़कर फेंक देने का बृहत् कार्य था। यह वह नहीं जानता था कि यह किस प्रकार करना होगा परन्तु इतना अवश्य वह समझता था कि इस कार्य के करने की योग्यता उसमें है। वह दूसरे आदमियों के दिलों की बात जानता था और समस्त वस्तुओं को देखकर उनका इतिहास जान लेता था। अस्पताल के बगीचे में जो बड़े-बड़े एल्म के पेड़ थे वे उसे भूतकाल का सब वृत्तान्त बतलाते थे; बड़े-बड़े मकान, जो बहुत पुराने बने हुए थे, वह यह समझता था कि पीटर महान के बनाये हुए हैं और उसका विचार था कि जार पोल्टावा के युद्ध में इन हवेलियों में आकर रहा था। वह उनकी दीवारों पर, टूटे हुए पलस्तर पर, और ईंटों पर लिखा हुआ पढ़ता था: मकान और बगीचे का सब इतिहास उन पर लिखा हुआ था। मरघट के छोटे से स्थान में उसे लाखों, करोड़ों आदमी, जो वर्षों हुए मर चुके थे, दिखाई पड़ते थे। उन्हें वह समझता था कि वह जानता है, उनके चेहरे परिचित से हैं अथवा उनकी तस्वीरें उसने देखी हैं।

अच्छा मौसम आरम्भ होते ही रोगी बगीचे में दिन भर खुली हवा में रहते। बगीचे का जो थोड़ा सा हिस्सा उनके लिये था उसमें बड़े-बड़े घने लगे हुए पेड़ थे और जहां कहीं जगह थी वहां पर फूलों की क्यारियां थीं। जो भी काम करने लायक थे उनसे ओवरसियर बगीचे में काम लेता था। दिन भर वे रास्ते साफ़ करते, अथवा उन पर रेत बिछाते; फूलों, खरबूजों वग़ैरह की क्यारियों में गोड़ी लगाते तथा पानी देते। इन क्यारियों को उन्होंने ही खोदा तथा लगाया था। बगीचे के एक हिस्से में एल्म से घिरे हुए चेरी के पेड़ थे; इसके बीचों-बीच एक ऊंचे कृत्रिम टीले पर समस्त बाग़ की सर्वोत्तम फूलों की क्यारियां थीं : चमकते हुए फूलों ने टीले के ऊंचे हिस्से का घेरा बना रखा था और बीच में बड़ा और कहीं-कहीं मिलने वाला लाल और पीला डेहलिया था। यह डेहलिया बगीचे के बीचोंबीच में सबसे ऊंचे स्थान पर था और यह भी देखा गया था कि कई रोगी इसमें कोई अद्‌भुत शक्ति बतलाते थे। इस नये रोगी को भी इसमें कुछ विचित्रता मालूम हुई, ऐसा प्रतीत हुआ जैसे यह बगीचे और मकानों का सरदार हो। सारे रास्तों के दोनों ओर भी क्यारियां थीं जो रोगियों ने लगाई थीं। इनमें वे सब फूल थे जो रूस में पैदा होते थे। यहीं पर मकानों के निकट ही तीन पॉपी के खूनी रंग के पौधे थे जो अन्य पॉपी के लगे हुए पौधों से भिन्न थे। यह ही वह फूल था, जिसका नये रोगी पर इतना प्रभाव पड़ा था, जब उसने पहले दिन कांच के दरवाजे में से देखा था।

पहली बार जब वह बगीचे में गया तो सब सीढ़ियां उतरने से पहले वह इन फूलों को देखता खड़ा रहा था। अभी तक केवल

दो ही फूल ऊपर आये थे और आश्चर्य यह था कि इस हिस्से में न गोड़ी लगी थी और न ही किसी ने घास उखाड़ा था।

रोगी एक के बाद एक दरवाजे से बाहर निकले। वार्डर उन्हें लाल क्रॉस छपी एक बुनी हुई टोपी पहनने को देता जाता था। ये टोपियां पिछली लड़ाई में इस्तेमाल हुई थीं और अस्पताल ने नीलाम में से खरीदी थीं। परन्तु रोगी ने इस लाल क्रॉस को विशेष महत्व दिया था। उसने अपनी टोपी उतारी, लाल क्रॉस की ओर देखा और फिर पॉपी की ओर। फूल अधिक चमकदार थे।

रोगी ने कहा, "वे जीत में हैं—परन्तु हम इन्हें भी समझेंगे।"

वह सीढ़ियों से उतरकर बगीचे में पहुंचा। उसने इधर-उधर देखा। परन्तु वार्डर को, जो उसके पीछे खड़ा था, वहां न देखकर वह एक फूलों की क्यारी में घुसा और उसने लाल फूल तोड़ने के लिये हाथ बढ़ाया, परन्तु तोड़ने का निश्चय न कर सका। उसके शरीर में खून तेज़ी से दौड़ने लगा; पहले उसे अपने बढ़े हुए हाथ में कुछ चुभ रहा है ऐसा मालूम हुआ और फिर सारे बदन में। मानों किसी अदृश्य शक्ति का आविर्भाव उन लाल पंखड़ियों में से हुआ है जो उसके सारे शरीर को प्रभावित कर रहा है। उसने हाथ कुछ और आगे फूल की ओर बढ़ाया परन्तु उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानों फूल में से कोई ज़हर उगला जा रहा है। उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया; उसने अन्तिम प्रयत्न फूल तोड़ने का किया और डंठल हाथ में पकड़ा ही था कि पीछे से किसी का ज़ोर के साथ हाथ उसके कंधे पर पड़ा। यह वार्डर था जिसने उसे पकड़ लिया था।

उस रूसी ने कन्धा पकड़े हुए ही कहा, "तुम्हें फूल नहीं तोड़ना

चाहिये, और न ही क्यारियों पर चलना। तुम्हारी तरह के यहां बहुत पागल हैं; अगर प्रत्येक एक-एक फूल भी तोड़े तो सारे बाग़ के फूल नुच जायेंगे।"

रोगी ने उसकी ओर देखा, धीरज से उसके पंजे से अपने आपको छुड़ाया और बड़ी उद्विग्न अवस्था में अपना रास्ता नापने लगा। "ओह, अभागे!" उसने सोचा, "तुम इतने अन्धे हो रहे हो कि तुम इसकी रक्षा में लगे हो। मुझे कितनी भी हानि उठानी पड़े मैं इसको मसलकर छोड़ूँगा। अगर आज नहीं तो कल हम अपनी शक्ति अजमायेंगे। मान लो कि मैं मर जाता हूं—तो फिर अन्तर ही क्या पड़ता है?"

वह बड़ी देर तक शाम हो जाने के बाद भी बाग़ में घूमता रहा, वह इधर-उधर और लोगों से जान पहचान करता रहा और विचित्र वार्तालाप में लगा रहा जिसमें एक दूसरे को अपने ही मूर्खतापूर्ण शब्द किसी न किसी रूप में सुनने को मिलते थे। रोगी पहले एक साथी के साथ फिर दूसरे के साथ घूमता रहा, और दिन समाप्त होने तक वह अपने विचारों में और दृढ़ हो गया कि सब तैयार है। उसने अपने मन में कहा, "शीघ्र, अति शीघ्र ही ये लोहे के सींखचे टूट-फूट कर मिट्टी में मिल जायेंगे, ये कैदी छूटकर सब दुनिया में फैल जायेंगे, और समस्त संसार हिल जायगा और अपना फटा-पुराना चोला उतारकर फेंक देगा और अपने सुन्दर रूप में दिखाई पड़ेगा।" वह अब तक फूलों को बिल्कुल ही भूल चुका था; परन्तु जब वह बग़ीचे से आकर ज़ीने पर चढ़ रहा था, तो उसने फिर अंधेरे में भीगी हुई घास में दो अङ्गारों के समान चमकते हुए फूल देखे। रोगी पीछे रह गया, और सुअवसर के

इन्तज़ार में उस जगह खड़ा होगया जहाँ से उसे वार्डर देख न सके। किसी ने भी उसे फूल की क्यारी में कूदते हुए नहीं देखा, न उसे फूल तोड़कर कमीज़ के नीचे अपनी छाती में जल्दी से छिपाते हुए। जब ठंडी, ओस से भीगी हुई पंखड़ियों ने उसके शरीर को छुआ तो उसका बदन ऐसा पीला पड़ गया जैसे वह मर चुका हो, और भयभीत होने के कारण उसकी आँखें पूरी खुल गईं। ठंडे पसीने की बूँदें उसके मस्तक पर दिखाई पड़ने लगीं।

अस्पताल में बत्तियाँ जल गईं। अधिकांश रोगी अपने पलंगों पर लेटकर भोजन की प्रतीक्षा करने लगे; केवल थोड़े से जो अशांत थे कमरों में और रास्तों में जल्दी २ चल रहे थे। वह रोगी, जिसने अपनी छाती में फूल छिपा रखा था, उनमें था। वह इधर-उधर चल रहा था, बाँहें उसने छाती पर जकड़ रखी थीं। ऐसा मालूम होता था जैसे कि वह उस फूल को, जो वह छिपाये हुए था, तोड़-मरोड़ और छिन्न-भिन्न कर देना चाहता था। जब उसकी किसी से भेंट हो जाती तो कन्नी काट जाता, वह डरता था कि कहीं उसकी कमीज़ तक भी किसी से छू न जाय। "दूर रहो, ऐ दूर रहो!" वह चिल्लाता था। अस्पताल में इस प्रकार के चिल्लाने को कोई महत्व नहीं दिया जाता। वह आदमी तेज़ी से बड़े-बड़े कदम भरकर चलने लगा, वह घन्टों तक इस प्रकार हड़बड़ाया हुआ चलता रहा।

"मैं तुझे थका दूँगा। मैं तेरा गला घोट दूँगा।" उसने गुस्से में अवरुद्ध गले से कहा। कभी-कभी वह अपने दाँत भी पीसता था। भोजन के कमरे में शाम का खाना रोगियों को दिया गया। मेजों पर लकड़ी के नक्काशीदार बड़े-बड़े प्याले रावड़ी भरे हुए रखे हुए

थे। इन मेज़पोश और मेजों के चारों ओर रोगी बेंचों पर बैठे हुए थे। उन्हें बाजरे की रोटी खाने को दी गई थी। लकड़ी के चम्मचों के साथ लगभग आठ-आठ आदमी एक-एक प्याले में से खा रहे थे। केवल थोड़े से जिनके लिये अच्छे भोजन का प्रबन्ध था उनको अलग-अलग परोसा गया था। हमारा रोगी, वह खाना जो उसको अपने कमरे में उसे दिया गया था, झटपट निपटाकर और उससे अतृप्त रहकर भोजनालय में आ धमका।

उसने इन्सपेक्टर से पूछा, "क्या मैं यहां बैठ सकता हूँ ?"

"क्या तुम्हें अपना भोजन नहीं मिला ?" इन्सपेक्टर ने प्यालों में और रावड़ी डालते हुए उससे पूछा।

मैं बहुत भूखा हूँ, और मुझे अधिक से अधिक जितनी शक्ति प्राप्त की जा सके करनी चाहिये। भोजन ही केवल मेरा आधार है। तुम जानते हो कि मैं कभी सोता ही नहीं।"

"अच्छा मेरे दोस्त ! खूब खाओ, और यह तुम्हें लाभ भी पहुँचावे। देखो, उसे चमचा और रोटी दे दो।"

वह उन प्यालों में से एक के सामने बैठ गया और बेतहाशा खाता चला गया।

"अब काफी होगया, बहुत खा चुके तुम !" आखिरकार इन्सपेक्टर ने कहा। जब कि सब खा चुके थे केवल हमारा रोगी तब भी बैठा हुआ एक हाथ से रावड़ा पिये चला जारहा था और दूसरे हाथ से ज़ोर से छाती को दबाये हुए था। "तुम ज़रूरत से ज़्यादा खा जाओगे।"

"आह, तुम समझते हो कि शायद तुम जानते हो कि मुझे कितनी शक्ति की ज़रूरत है ! विदा निकोलाय निकोलोविच," रोगी

ने मेज से उठते हुए और इन्सपैक्टर का हाथ पूरी ताक़त से दबाते हुए कहा, "विदा !"

"तुम कहाँ जारहे हो ?" इन्सपैक्टर ने मुस्कराते हुए कहा।

"मैं ! कहीं नहीं, मैं यहीं ठहरा हूँ। परन्तु शायद कल हम लोग एक दूसरे से नहीं मिल सकेंगे। तुम्हारी कृपा- दृष्टि के लिये धन्यवाद," और उसने एक बार फिर इन्सपैक्टर का हाथ दबाया। उसकी आवाज़ लड़खड़ा गई और उसकी आँखों में आंसू आगये।

"शान्त होओ, मेरे दोस्त शान्त होओ," इन्सपैक्टर ने उत्तर में कहा। तुम क्यों इतने निराश हो रहे हो ? बिस्तर पर जाकर लेट जाओ, और सो जाओ। तुम्हें निद्रा की आवश्यकता है, एक बार जब तुम अच्छी तरह से सो लोगे तो तुम अपने आपको प्रसन्न पाओगे।"

रोगी सुबकियां भरने लगा। इन्सपैक्टर दूसरी ओर जाकर नौकरों से कमरा जल्दी-जल्दी साफ़ करने के लिये कहने लगा। आधे घन्टे में केवल एक के और सब रोगी सोगये। वह कोने के कमरे में कपड़े पहने हुए बिस्तर पर लेटा हुआ था। वह ऐसे कांप रहा था मानों उसे मैलेरिया होगया हो। उसने अपने हाथ कसकर छाती पर बांध रखे थे जिसे वह ऐसा समझता था मानों किसी अज्ञात तेज़ विष से भर रही है।

(५)

वह रात भर सोया नहीं। उसने वह फूल केवल इसलिये तोड़ा था कि वह समझता था कि वह इस कार्य को पूरा करने के लिये ही जीवित है। जब उसने पहली बार कांच के दरवाज़े में से बाहर झांका था तो इन लाल लाल पंखड़ियों पर ही उसकी दृष्टि पड़ी

थी, और तब ही वह अच्छी तरह समझ गया था कि वह पृथ्वी पर किस महत् कार्य के लिये आया है। इस खूनी रंग के फूल में दुनिया की सब बुराइयां ठूँस-ठूँस कर भरी हुई थीं। वह जानता था कि अफीम इसी से बनती है। कदाचित् यही विचार था जो आकार में बेहद बढ़ने के कारण इस भयानक भूत के आकार का बन गया था। वह तो समझता था कि इस फूल में ही सब बुराइयां अपने सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप में भरी हुई हैं, इसकी पंखड़ियों का रंग उन निरपराध व्यक्तियों के लोहू का रंग है, इसने मनुष्य-जीवन के सब आँसू, यातनाएँ और मुसीबतों को अपने अन्दर पी रखा है। ईश्वर का विरोधी यह ही भयावह और अद्भुत प्राणी है जिसे शैतान कहना चाहिये और जिसने सीधी-सादी, भोली-भाली शक्ल बना ली है। यह आवश्यक था कि इसे तोड़कर मार डाला जाय। परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं था—यह और भी आवश्यक था कि मरते समय इसे समस्त दुनिया पर अपना ज़हर फैलाने से रोका जाय। इसीलिये उसने इसे अपनी छाती में छिपा रखा था। उसका विचार था कि सुबह तक फूल की सारी शक्ति लोप हो जायगी। उसका विष पहले उसकी छाती में पहुँचेगा और फिर उसकी आत्मा में, जहाँ वह काबू में आजावेगा; अथवा विष जीत जायगा और वह नष्ट हो जायगा—मर जायगा, परन्तु एक वीर योद्धा की तरह मरेगा, मानव जाति के उद्धारक की हैसियत से मरेगा, क्योंकि समस्त मनुष्य जाति की एकत्रित बुराइयों से एक बार में ही अभी तक कोई नहीं लड़ा।

"उन्होंने इसे नहीं देखा। मैंने इसे देखा। क्या मैं इसे जीवित रहने दे सकता हूँ? मौत भली है।"

उसकी शक्ति का ह्रास होरहा था। वह इस काल्पनिक विचार-युद्ध में लगा हुआ था, थकावट उसकी बढ़ती जाती थी। अगले दिन सुबह डाक्टर के असिस्टेन्ट ने उसे लगभग मरा हुआ पाया। कुछ घन्टे बाद वह नवस्फूर्ति पाकर उठा, बिस्तर से नीचे कूद पड़ा और सदा की तरह अस्पताल में दौड़ने लगा। वह रोगियों से तथा अपने आपसे ज़ोर-ज़ोर से असम्बन्धित बातचीत करता जाता था। उसे बग़ीचे में जाने की इजाज़त नहीं थी। डाक्टर ने यह समझकर कि उसका वज़न प्रतिदिन घटता जाता है, वह सो नहीं पाता, और वह दिन भर भटकता फिरता है, उसके मोरफ़िया का एक बड़ा सुआ त्वचा के नीचे लगाने का हुक्म दिया। उसने विरोध नहीं किया, भाग्यवश उसके पागलपन के उस समय के विचार चीरे से साम्य रखते थे। वह शीघ्र ही सो गया; उसकी पागलों सरीखी हरकतें बन्द होगईं और उसके पैरों की थपथप जो उसके अपने कानों में पड़ती थी बन्द होगई। वह बेहोश होगया और उसकी सोचने की शक्ति लुप्त होगई, वह और तो और दूसरे लाल फूल के बारे में भी, जिसका तोड़ना उसके लिये आवश्यक था, सोचना भूल गया।

तीन दिन बाद वार्डर की आँखों के सामने ही उसने दूसरा फूल भी तोड़ लिया। वार्डर को मना करने के लिये पहुँचने में देर होगई। वह उसके पीछे दौड़ा। खुशी के मारे ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता, रोता और बिलखता हुआ रोगी अस्पताल में दौड़ा, वहां से अपने कमरे में घुस गया और जल्दी से पौधे को अपनी कमीज़ के भीतर छिपा लिया।

"तुमने फूल तोड़ने का साहस कैसे किया?" वार्डर ने, जो

पीछे-पीछे भागा आरहा था, उससे पूछा। रोगी अपने नित्यप्रति के समान हाथ छाती पर बांधकर लेट चुका था और अनाप-शनाप बकने लगा था। वार्डर ने ऐसी अवस्था में लाल टोपी, जो वह पहले जल्दी-जल्दी में उतारना भूल गया था, उसके सिर से उतारी और उसे उसी प्रकार पड़ा हुआ अकेला छोड़ गया। कल्पित-युद्ध फिर आरम्भ होगया। रोगी ने अनुभव किया कि फूल में से बुराई की लपटें कड़ियों की तरह निकलने लगीं जिन्होंने उसको घेरे में लपेट लिया और धीरे-धीरे इतना कस लिया कि उसके अंग टूटने लगे और उसके शरीर को विष से भर दिया। वह रोया, और कभी-कभी जब वह अपने दुश्मन पर गालियों की बौछार नहीं छोड़ता था, ईश्वर से प्रार्थना करता था। फूल शाम तक मुर्झा गया। रोगी ने उस काले पड़ गये पौधे को पैरों के नीचे खूब मसला, और फिर बड़ी सावधानी से एक एक टुकड़ा इकट्ठा कर उन्हें नहाने के कमरे में ले गया, जहां उसने दहकते हुए अंगारों में उस चूरे को फेंक दिया। वह बड़ी देर तक खड़ा हुआ अपने दुश्मन का जलना और अन्त में सफेद राख में बदल जाना देखता रहा। उसने फूंक मारी और राख उड़ गई।

अगले दिन रोगी की अवस्था और भी शोचनीय होगई। बैठे हुए गालों और धंसी हुई चमकती आँखों वाला एक दम पीला, मुर्झाया हुआ चेहरा लिये वह लड़खड़ाते हुए कदमों से इधर-उधर घूमता फिरता था। अक्सर वह पागलों की तरह घूमता हुआ गिर पड़ता था। वह लगातार बोलता रहता था।

डाक्टर ने अपने असिस्टेन्ट से कहा, "मैं शक्ति का इस पर प्रयोग नहीं करना चाहता।"

"परन्तु यह भटकना तो बन्द करना आवश्यक है। आज उसका वजन कुल ९३ पौंड निकला। अगर इस प्रकार ही घटता गया तो दो दिन में उसकी मृत्यु हो जायगी।"

डाक्टर विचार में पड़ गया। "मोरफ़िया ? क्लोरल ?" उसने कुछ प्रश्न करते हुए तरीके से कहा।

"कल ही मोरफ़िया दिया था परन्तु उसका कोई परिणाम नहीं निकला। उसको पलंग से बांधने का हुक्म दे दीजिये। मुझे इसमें सन्देह है कि वह अब अधिक दिन जीवित रहेगा।"

रोगी को बांध दिया गया। लिनन की पट्टियों से उसे उसके पलंग की लोहे की बाहियों से बाँध दिया गया। उसका पागलों की तरह हाथ-पैर मारना बन्द होने की बजाय और भी बढ़ गया। लगातार कई घन्टे तक वह अपने आपको मुक्त करने के प्रयत्न में लगा रहा। आखिरकार बहुत प्रयत्न करने के बाद एक टांग की पट्टी उसने तोड़ डाली और दूसरी टांग तथा अंग धीरे-धीरे करके निकाल लिये। तब वह बँधे हुए हाथों से कमरे में इधर-उधर घूमने लगा। वह ज़ोर-ज़ोर से अंट-संट बकता जाता था।

"ओह, क्या बात है ?" वार्डर चिल्लाया। "कौन शैतान तुम्हारी मदद को आगया ? मिशा, इवान, दोनों इधर आओ। रोगी ने अपने आपको खोल लिया है।"

तब तीनों उस पर झपट पड़े और खूब गुत्थमगुत्था होने लगे। यहां तक कि वे तीनों थक गये थे और रोगी की तो जान पर ही आ बनी थी। वह अपने बचाव में सारी बची-खुची शक्ति प्रयोग में ला रहा था। आखिरकार उन्होंने उसे पलंग पर ला पटका और पहले से भी अधिक कसकर उसे बाँध दिया।

"तुम नहीं जानते, तुम कितना बुरा काम कर रहे हो!" रोगी ने चिल्लाया। उसका दम फूल आया था। "तुम सब स्वाहा हो जाओगे। मैंने तीसरा भी देख लिया था जो तब तक अच्छी तरह ऊपर नहीं आ पाया था। अब वह ऊपर आगया होगा। मुझे यह काम समाप्त कर लेने दो। उसे मार डालना होगा, मार डालना होगा, मार डालना होगा! तब सब समाप्त हो जायगा, सब सुरक्षित हो जावेंगे। मैं वह तुम्हारे लिये भेजूंगा, परन्तु मैं ही केवल यह काम कर सकता हूँ। अगर तुमने उसे कहीं छू भी लिया तो वहीं तुम्हारी मृत्यु हो जायगी।"

"शान्त होइये, जनाब शान्त होइये," वार्डर ने, जो वहीं ड्यूटी पर ठहर गया था, कहा।

अकस्मात् रोगी शान्त होगया। उसने वार्डर के साथ चालाकी चलने की बात सोच ली थी। दिन भर वह उसी प्रकार बंधा हुआ रखा गया और रात में भी उसे उसी अवस्था में छोड़ दिया गया। रोगी को शाम का भोजन देकर वार्डर फर्श पर कम्बल बिछाकर लेट गया। एक क्षण मे अधिक उसे सोने में नहीं लगा, और रोगी ने अपना काम शुरू कर दिया।

वह अपने शरीर को घुमाकर लोहे की बाड़ियों के पास ले आया और अपने हाथों की पट्टी को उससे घिसने लगा। कुछ अर्से ब द कपड़ा फट गया और उसकी एक उंगली बाहर निकल आई। उसके बाद फिर और तेज़ी से उसकी मशीन चल पड़ी। उसने बड़ी खूबी से, एक स्वस्थ आदमी से भी अधिक होशियारी से, अपने आपको गांठें वग़ैरह खोलकर बंधन से मुक्त कर लिया, तत्पश्चात् वह वार्डर के खुर्राटों के सुनने में लग गया। वह वृद्ध

पुरुष गहरी नींद में सो रहा था। रोगी ने वास्कट उतारी और पलंग पर से उठ बैठा। वह मुक्त था। उसने दरवाज़ा खोलने का प्रयत्न किया। वह अन्दर से बन्द था और कुंजी संभवतः वार्डर की जेब में थी। वह उस वृद्ध की जेबें तलाश कर अपने आपको ख़तरे में डालना नहीं चाहता था। उसे भय था कहीं वह उठ न बैठे। इसलिये उसने खिड़की के रास्ते ही बाहर जाना उचित समझा।

रात्रि यद्यपि अंधकारपूर्ण थी, परन्तु शान्त और गरम थी, खिड़की खुली हुई थी, तारे काले आसमान में चमक रहे थे। उसने तारों की ओर देखा, अपने सितारों को पहचाना। वह यह जानकर प्रसन्न हुआ कि कम से कम तारे तो उसे पहचानते हैं और उसके कार्य से सहानुभूति रखते हैं। आँखें मींचते और खोलते हुए उसने उन किरणों को देखा जो तारे उसकी ओर भेज रहे थे, और उसका पागलपन का निश्चय और भी दृढ़ होगया। उसे पहले लोहे का सींखचा मोड़ना था, बाद में अपने शरीर को उसमें से निकालना और फिर गली में पहुँचकर दीवार फांदना। वहीं पर उसका अन्तिम प्रयत्न आरम्भ होता था और तत्पश्चात्— कदाचित् मृत्यु।

उसने अपने खाली हाथों से लोहे का सींखचा मोड़ना चाहा परन्तु वह मुड़ा नहीं। तब उसने वास्कट की बांहों की रस्सी बनाई, उसे सींखचे के एक निकले हुए टुकड़े से बांधा और सारा बोझ डालकर लटक गया। बड़े प्रयत्न करने पर, लगभग अपनी सारी शक्ति खर्च कर देने पर, सींखचा झुक गया : सकड़ा रास्ता बन गया। वह उसमें से सिकुड़कर बाहर निकला और कांटेदार झाड़ियों वगैरह से बचता-बचाता दीवार के पास पहुंच गया। चारों

और शान्ति विराज रही थी, बड़ी हवेली की धुँधली बत्तियों की रोशनी बाहर आरही थी, परन्तु कमरों में कुछ दिखाई नहीं पड़ता था। किसी ने उसे देखा नहीं। वह वृद्ध जो उसके पलंग के पास सो रहा था कदाचित् अब भी गहरी नींद में ही था। तारे टिमटिमा रहे थे, और उनकी किरणें हृदय-प्रदेश में घुस रही थीं।

"मैं तुम्हारे पास आरहा हूँ," उसने आकाश की ओर देखते हुए दबे स्वर में कहा।

फटे हुए कपड़ों में, खून बहते हुए घुटनों और बाँहों तथा टूटे हुए नाखूनों से वह दीवार पर चढ़ने का अच्छा सा स्थान देखने लगा। उसने देखा कि उस स्थान से कुछ ईंटें गिर चुकी हैं जहां दीवार मरघट से मिलती है। इन गढ़ों को टटोलकर वह दीवार पर चढ़ गया और एल्म को, जो बाहर की ओर उग रहे थे, टहनियों पकड़कर नीचे लटक गया और ज़मीन पर जा पहुँचा।

वह अपने परिचित स्थान पर पहुँच गया। वह फूल अपनी अधखुली पंखड़ियों के कारण कुछ स्याही लिये हुए था, परन्तु वह आसपास के ओस से भीगे हुए घास से ऊपर दिखाई पड़ रहा था।

"अन्तिम फूल," रोगी ने धीरे से कहा, "अन्तिम! आज या तो विजय है अथवा मृत्यु! मेरे लिये इन दोनों में अब कोई अन्तर नहीं?" आसमान की ओर देखते हुए उसने कहा, "ठहरो, मैं शीघ्र ही तुम्हारे पास पहुँचूँगा।"

उसने पौधा उखाड़ लिया। उसके टुकड़े-टुकड़े कर लिये। उसे मसल डाला और अपने हाथों में मज़बूती से बन्द कर उस रास्ते से जिससे वह गया था वापिस अपने कमरे में लौट आया।

वह वृद्ध अभी तक पूर्ववत् ही सो रहा था। रोगी अपने पलंग पर पहुंचते ही बेहोश होकर गिर पड़ा।

सुबह वह मरा हुआ पाया गया। उसका मुख-मण्डल शान्त और दीप्तिमान था। उसकी कमजोर मुखाकृति, पतले ओठों और धंसी हुई आंखों पर विजयोल्लास के चिन्ह दिखाई दे रहे थे। जब उन्होंने उसे स्ट्रेचर पर डाला और उसकी मुट्ठियां खोलकर वह लाल फूल निकालना चाहा तो उसके हाथ अकड़ चुके थे। वह अपनी विजय की निशानी कब्र में अपने साथ ही ले गया।

समाप्त